ख़ानदानी झगड़ों
के असबाब और उनका हल
1
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी
Maktabe Ashraf

1

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(पहला हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (पहला हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब

और उनका हल

(पहला हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

عن أبى الدرداء رضى الله تعالىٰ عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: آلا أخبركم بافضل من درجة الصيام والصلوٰة والصدقة قالوا: بلٰى قال: اصلاح ذات البين، وفساد ذات البين الحالقة۔ (ابوداؤد شريف)

उम्मते मुहम्मदिया के दानिश्वर

यह हदीस हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है। हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु सहाबा–ए–किराम में बड़े ऊंचे दर्जे के औलिया अल्लाह में से हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको "हकीमु हाज़िहिल उम्मत" का लक़ब अ़ता फ़रमाया

था, यानी यह उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हकीम और फ़लॉस्फ़र हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनको "हिक्मत" अ़ता फ़रमाई थी।

सवाल के ज़रिए तलब पैदा करना

वह रिवायत करते हैं कि एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा–ए–किराम से पूछाः क्या मैं तुम्हें ऐसा दर्जा न बताऊं जो नमाज़, रोज़े और सदक़े से भी अफ़ज़ल है? यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की गुफ़्तगू का अन्दाज़ था कि जब किसी चीज़ की अहमियत बयान करनी मन्ज़ूर होती तो सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ख़ुद ही सवाल फ़रमाया करते थे, ताकि उनके दिल में तलब पैदा हो जाए। अगर दिल में तलब हो तो उस वक़्त जो बात कही जाए उसका असर भी होता है, और अगर दिल में तलब न हो तो कैसी भी अच्छी से अच्छी बात कह दी जाए, कैसा ही अच्छे से अच्छा नुस्ख़ा बता दिया जाए, बेहतर से बेहतर तालीम दे दी जाए, उन चीज़ों से कोई फ़ायदा नहीं होता। यह तलब बड़ी चीज़ है।

दीन की तलब पैदा करें

इसलिए बुज़ुर्गाने दीन ने फ़रमाया कि इन्सान की कामयाबी का राज़ इसमें है कि इन्सान अपने अन्दर दीन की तलब और दीन की बातों पर अ़मल करने की तलब पैदा कर ले। जब यह तलब पैदा हो जाती है तो फिर

अल्लाह तआ़ला ख़ुद नवाज़ देते हैं। अल्लाह तआ़ला की आ़दत और तरीक़ा यही है। इसी को मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

आब कम जो तिश्नगी आवर ब-दस्त
ता बजोशद आब अज़ बाला व पस्त

यानी पानी कम तलाश करो, प्यास ज़्यादा पैदा करो, जब प्यास पैदा हो जाती है तो अल्लाह तआ़ला की आ़दत व तरीक़ा यह है कि फिर ऊपर और नीचे हर तरफ़ पानी जोश मारता है। यह तलब बड़ी चीज़ है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हम सब के दिलों में पैदा फ़रमा दे, आमीन।

"तलब" बेचैनी पैदा करती है

यह "तलब" ही वह चीज़ है कि जब एक बार इन्सान के अन्दर पैदा हो जाए तो फिर इन्सान को चैन लेने नहीं देती, बल्कि उसको बेताब रखती है। जब तक इन्सान को मक़सूद हासिल न हो जाए इन्सान को चैन नहीं आता। इसकी मिसाल यों समझिए कि जब इन्सान को भूख लग जाए और "भूख" के मायने हैं "खाने की तलब" तो जब इन्सान को भूख लगी हुई होगी तो क्या इन्सान को चैन आयेगा? किसी दूसरे काम को करने का दिल चाहेगा? जब खाने की तलब लगी हुई है तो आदमी को उस वक़्त चैन नहीं आयेगा, जब तक कि उसको खाना न मिल जाए। अगर इन्सान को प्यास लगी हुई है तो "प्यास" के मायने हैं "पानी की तलब" जब तक पानी नहीं मिल जायेगा उस वक़्त तक चैन नहीं आयेगा।

अल्लाह तआला हमारे दिलों में "दीन" की भी ऐसी तलब पैदा फ़रमा दे, जब यह तलब पैदा हो जाती है तो इन्सान को उस वक़्त तक चैन नहीं आता जब तक दीन हासिल न हो जाए बल्कि बेचैनी लगी रहती है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और दीन की तलब

हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का यही हाल था कि उनमें से हर शख़्स को यह बेचैनी लगी हुई थी कि मरने के बाद मेरा क्या अन्जाम होना है? अल्लाह तआला के सामने पेश होना है, उसके बाद या तो जहन्नम है या जन्नत है, लेकिन मुझे नहीं मालूम कि मेरा अन्जाम क्या होने वाला है। उस बेचैनी का नतीजा यह था कि सुबह से लेकर शाम तक मामूली मामूली कामों में भी फ़िक्र लगी हुई है कि मालूम नहीं कि यह काम अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के मुताबिक़ है या नहीं? कहीं इसकी वजह से मैं जहन्नम का हक़दार तो नहीं हो गया।

हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आख़िरत की फ़िक्र

यहां तक कि हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और आकर अ़र्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह! नाफ़-क़ हन्ज़-लतु" हन्ज़ला तो मुनाफ़ि हो गया। अपने बारे में कह रहे हैं कि मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि कैसे

मुनाफ़िक़ हो गए? उन्होंने फ़रमाया कि जब मैं आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में बैठता हूं तो उस वक़्त आख़िरत की फ़िक्र लगी होती है और ऐसा मालूम होता है कि जन्नत और जहन्नम को अपनी आंखों से अपने सामने देख रहे हैं, और उसकी वजह से दिल में रिक़्क़त और नरमी पैदा होती है और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त का जज़्बा पैदा होता है। लेकिन जब आपकी मज्लिस से उठकर बीवी बच्चों के पास घर जाते हैं तो उस वक़्त दिल की यह कैफ़ियत बाक़ी नहीं रहती। ऐसा मालूम होता है कि मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया, इसलिए कि आपके एक हालत होती है और घर जाकर दूसरी हालत हो जाती है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको इत्मीनान दिलाया और फ़रमाया कि ऐ हन्ज़ला! यह वक़्त वक़्त की बात होती है, किसी वक़्त इन्सान पर एक हाल का ग़ल्बा हो जाता है और दूसरे वक़्त दूसरी हालत का ग़ल्बा हो जाता है, इसलिए परेशान न हों, बल्कि जो काम अल्लाह तआ़ला ने बताए हैं उनमें लगे रहो, इन्शा अल्लाह बेड़ा पार हो जायेगा। इसलिए यह फ़िक्र कि मैं कहीं मुनाफ़िक़ तो नहीं हो गया, यह आख़िरत की तलब है जो बेचैन कर रही है।

हज़रत फ़ारूके आज़म और आख़िरत की फ़िक्र

हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु इतने बड़े रुतबे वाले सहाबी, दूसरे ख़लीफ़ा जिनके बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया कि

अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होते, और जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस रास्ते से उमर (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) गुज़र जाते हैं, उस रास्ते से शैतान नहीं गुज़रता, शैतान रास्ता बदल देता है। वह उमर जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत के अन्दर तुम्हारा महल देखा है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ये तमाम बातें सुनने के बावजूद आपका यह हाल था कि आप हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को क़सम देकर पूछते हैं कि ऐ हुज़ैफ़ा! ख़ुदा के लिए यह बताओ कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुनाफ़िक़ों की जो फ़ेहरिस्त तुम्हें बताई है, उसमें कहीं मेरा नाम तो नहीं है? यह फ़िक्र और तलब लगी हुई है।

तलब के बाद मदद आती है

और जब तलब लग जाती है तो फिर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से अ़ता फ़रमा ही देते हैं। इसलिए मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

आब कम जो तिश्नगी आवर ब-दस्त
ता बजोशद आब अज़ बाला व पस्त

"पानी तलाश करने से ज़्यादा प्यास पैदा करो" दिल में हर वक़्त खटक और बेचैनी और बेताबी लगी हुई हो कि मुझे सही बात का इल्म हो जाए, और जब यह तलब पैदा हो जाती है तो अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमा ही देते हैं। उनका तरीक़ा यह है कि किसी सच्चे तालिब

को जिसके दिल में सच्ची तलब हो आज तक अल्लाह तआ़ला ने रद्द नहीं फ़रमाया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरबियत का यह अन्दाज़ था कि आप सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में पहले तलब पैदा फ़रमाते थे। इसलिए पहले आपने उनसे सवाल किया कि क्या मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी का और अज्र व सवाब का ऐसा दर्जा न बताऊं जो नमाज़ से भी अफ़ज़ल, रोज़ों से भी अफ़ज़ल और सदक़े से भी अफ़ज़ल हो? यह सवाल करके उनके अन्दर शौक़ और तलब पैदा फ़रमा रहे हैं।

नमाज़ के ज़रिए अल्लाह की नज़्दीकी

सहाबा–ए–किराम ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ज़रूर बताइए, इसलिए कि सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को तो हर वक़्त यह धुन लगी हुई होती थी कि कौन सी चीज़ ऐसी है जो अल्लाह तआ़ला की नज़्दीकी अ़ता करने वाली है, और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा अ़ता करने वाली है। और अब तक रोज़े की नमाज़ की और सदक़े की फ़ज़ीलत सुन चुके थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ दीन का सतून है। एक और हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया कि बन्दा नवाफ़िल के ज़रिए मेरा क़ुर्ब यानी निकटता हासिल करता रहता है, और जितने नवाफ़िल ज़्यादा पढ़ता है वह उतना ही मेरे क़रीब हो जाता है, यहां तक कि एक दर्जा ऐसा आ जाता है कि मैं उसकी

आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है, मैं उसका कान बन जाता हूं जिस से वह सुनता है, मैं उसका हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है, गोया कि नवाफ़िल की कसरत के नतीजे में वह इन्सान अल्लाह तआ़ला के इतना क़रीब हो जाता है कि उस इन्सान का पूरा का पूरा वजूद अल्लाह तआ़ला की रिज़ा का प्रतीक बन जाता है। सहाबा–ए–किराम नमाज़ की यह फ़ज़ीलत सुन चुके थे, इसलिए उनके ज़ेहनों में यह था कि नमाज़ से ज़्यादा अफ़ज़ल क्या चीज़ होगी।

रोज़े की फ़ज़ीलत

रोज़े की यह फ़ज़ीलत भी सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सुन चुके थे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि दूसरी इबादतों का अज्र तो मैंने मुक़र्रर कर दिया है कि फ़लां इबादत का सवाब दस गुना, फ़लां इबादत का सवाब सौ गुना और फ़लां इबादत का सवाब सात सौ गुना, लेकिन रोज़े के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि:

"الصوم لی وانا اجزی بہ" (نسائی شریف)

यह रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसकी जज़ा दूंगा। यानी रोज़े का जो अज्र व सवाब मैं अ़ता करने वाला हूं वह तुम्हारी गिनती में और तुम्हारे पैमानों में उस अज्र व सवाब का तसव्वुर आ ही नहीं सकता। यह रोज़ा चूंकि मेरे लिए है, इसलिए इसका अज्र व सवाब भी अपनी शान के मुताबिक़ दूंगा, अपनी बड़ाई के मुताबिक़ दूंगा। सहाबा–ए–

किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम रोज़े की यह फ़ज़ीलत सुन चुके थे। इसलिए उनके ज़ेहनों में यह था कि रोज़ा बहुत ज़्यादा अफ़ज़ल इबादत है।

सदक़े की फ़ज़ीलत

सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सदक़े की यह फ़ज़ीलत सुन चुके थे कि अल्लाह के रास्ते में सदक़ा करने से सात सौ गुना अज्र व सवाब मिलना तो यक़ीनी है और यह सात सौ गुना सवाब भी हमारे हिसाब से नहीं बल्कि जन्नत के हिसाब से मिलना है। इसलिए सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम यह समझते थे कि सदक़ा करना बहुत अफ़ज़ल इबादत है।

सब से अफ़ज़ल अ़मल झगड़े ख़त्म कराना

इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि क्या मैं ऐसी चीज़ न बताऊं जो इस नमाज़ से भी अफ़ज़ल है, इस रोज़े से भी अफ़ज़ल है, इस सदक़ा करने से भी अफ़ज़ल है जिनकी फ़ज़ीलतें तुमने सुन रखी हैं? चुनांचे यह सुनकर सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दिल में शौक़ पैदा हुआ और उन्होंने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! वह चीज़ ज़रूर बताएं ताकि हम वह चीज़ हासिल करें और उसके नतीजे में अल्लाह तआ़ला हमें इन इबादतों से भी ज़्यादा सवाब अ़ता फ़रमा दें। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह चीज़ है:

"اصلاح ذات البین"

यानी अगर दो मुसलमानों के दरमियान नाचाक़ी, इख़्तिलाफ़ और कटाव हो गया है, या दो मुसलमानों के दरमियान झगड़ा खड़ा हो गया है और दोनों एक दूसरे की सूरत देखने के रवादार नहीं हैं तो अब कोई ऐसा काम करो जिसके नतीजे में उनके दरमियान वह झगड़ा ख़त्म हो जाए और दोनों के दिल आपस में मिल जाएं और दोनों एक हो जाएं। तुम्हारा यह अ़मल नमाज़ से भी अफ़ज़ल है, रोज़े से भी अफ़ज़ल है, सदक़े से भी अफ़ज़ल है। नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह अन्दाज़े बयान था।

सुलह कराना नफ़िल नमाज़ रोज़े से अफ़ज़ल है

लेकिन एक बात याद रखें कि इस हदीस में नमाज़ रोज़े से नफ़्ली नमाज़ रोज़े मुराद हैं। मतलब यह है कि अगर एक तरफ़ तुम सारी रात नफ़्ली नमाज़ें पढ़ते रहे, सारा दिन नफ़्ली रोज़ा रखो और बहुत सा माल नफ़्ली सदक़ा करो, तो इनमें से हर काम बड़ी फ़ज़ीलत और सवाब का है, लेकिन दूसरी तरफ़ दो मुसलमान भाईयों के दरमियान झगड़ा है, और उस झगड़े की वजह से दोनों के दरमियान नाचाक़ी पैदा हो गई है, तो उस झगड़े को ख़त्म करने के लिए अगर तुम थोड़ा सा वक़्त ख़र्च करोगे और उनके दिल और गले मिलवा दोगे और उनके दरमियान मुहब्बत पैदा करा दोगे तो उस सूरत में तुमने जो सारी रात नफ़िल नमाज़ें पढ़ी थीं, नफ़िल रोज़े रखे थे और सैंकड़ों

रुपये नफ़िल सदके के तौर पर दिए थे, उन सब से ज़्यादा अज्र व सवाब तुम्हें इस अ़मल में हासिल हो जायेगा। आप अन्दाज़ा करें कि कितनी बड़ी बात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमा दी।

आपस के झगड़े दीन को मूंडने वाले हैं

एक तरफ़ तो यह फ़रमा दिया कि मुसलमनों के दरमियान आपस में मुहब्बतें, भाई चारा और प्यार व मुहब्बत क़ायम करना तमाम नफ़्ली इबादतों से अफ़ज़ल है, और दूसरी तरफ़ अगला जुम्ला इसके बिल्कुल उलट इर्शाद फ़रमा दिया किः

"وفسادذات البين هى الحالقة"

यानी आपस के झगड़े, आपस की नफ़रतें और नाचाक़ियां ये मूंडने वाली चीज़ें हैं। एक दूसरी हदीस में इसकी तश्रीह करते हुए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं यह नहीं कहता कि आपस के ये झगड़े तुम्हारे बालों को मूंडने वाले हैं, बल्कि ये झगड़े तुम्हारे दीन को मूंडने वाले हैं। क्योंकि जब आपस में नफ़रतें होती हैं और झगड़े होते हैं तो उस झगड़े की वजह से इन्सान न जाने कितने बेशुमार गुनाहों के अन्दर मुब्तला हो जाता है, इन झगड़ों के नतीजे में एक दूसरे की ग़ीबत होती है, एक दूसरे पर बोहतान लगाया जाता है, एक दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है, एक दूसरे पर तोहमतें लगाई जाती हैं। तो ये झगड़े बेशुमार गुनाहों का मजमूआ होता है।

झगड़ों की नहूसत

इन झगड़ों की नहूसत यह होती है कि इन्सान दीन से बेगाना हो जाता है और दीन का नूर जाता रहता है, और दिल में अंधेरा पैदा हो जाता है। इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जगह जगह यह ताकीद फ़रमाई कि आपस के झगड़ों से बचो।

मेल-मिलाप के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जमाअ़त छोड़ देना

देखिए! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी मुबारक ज़िन्दगी में मस्जिदे नबवी में इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देते रहे। ज़ाहिर है कि आपकी मौजूदगी में कौन नमाज़ पढ़ायेगा, और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा कौन नमाज़ बा जमाअ़त की पाबन्दी करेगा, लेकिन पूरी मुबारक ज़िन्दगी में सिर्फ़ एक बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नमाज़ के वक़्त मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ नहीं ला सके, यहां तक कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नमाज़ पढ़ाई। और नमाज़ के वक़्त हाज़िर न होने की वजह यह हुई थी कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पता चला कि फ़लां क़बीले में मुसलमानों के दो गिरोहों के दरमियान झगड़ा हो गया है, चुनांचे उनके झगड़े को ख़त्म कराने के लिए और उनके दरमियान सुलह कराने के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस क़बीले में तशरीफ़ ले गए, उस सुलह

और मेल–मिलाप कराने में देर लग गई, यहां तक कि नमाज़ का वक़्त आ गया। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने जब देखा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मौजूद नहीं हैं, तो उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इमामत फ़रमाई और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाद में तशरीफ़ लाए।

पूरी मुबारक ज़िन्दगी में सिर्फ़ यह एक वाक़िआ़ है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सेहत की हालत में नमाज़ के वक़्त मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ न ला सके, इसकी वजह सिर्फ़ यह थी कि आप लोगों के दरमियान सुलह कराने और झगड़ा ख़त्म कराने के लिए तशरीफ़ ले गए थे। इसलिए क़ुरआने व हदीस इन इर्शादात से भरे हुए हैं कि ख़ुदा के लिए मुसलमानों के दरमियान झगड़ों को किसी क़ीमत पर बर्दाश्त न करो। जहां कहीं झगड़े का कोई सबब पैदा हो, फ़ौरन उसको ख़त्म कराने की कोशिश करो, इसलिए कि ये झगड़े दीन को मूंड देने वाले हैं।

जन्नत के बीच में मकान दिलाने की ज़मानत

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

"أنا زعيم ببيت فى وسط الجنة لمن ترك المراء وهو محقّ"

मैं उस शख़्स के लिए जन्नत के बीचों बीच घर दिलवाने की ज़मानत लेता हूं जो शख़्स हक़ पर होने के बावजूद झगड़ा छोड़ दे। यानी वह शख़्स हक़ पर था और

हक़ पर होने की वजह से अगर वह चाहता तो अपने हक़ को वुसूल करने के लिए मुक़द्दमा दायर कर देता, या कोई और ऐसा तरीक़ा इख़्तियार कर लेता जिसके नतीजे में उसको उसका हक़ मिल जाता, लेकिन उसने यह सोच कर कि झगड़ा बढ़ेगा और झगड़ा बढ़ाने से क्या फ़ायदा, इसलिए अपना हक़ ही छोड़ दिया। ऐसे शख़्स के लिए आपने फ़रमाया कि मैं उसको जन्नत के बीचों बीच घर दिलवाने का ज़िम्मेदार हूं। इतनी बड़ी बात सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दी, यह कोई मामूली बात नहीं है।

यह ज़मानत दूसरे आमाल पर नहीं

यह ज़िम्मेदारी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी दूसरे अ़मल पर नहीं ली, लेकिन हक़ पर होने के बावजूद झगड़ा छोड़ने वाले के लिए यह ज़िम्मेदारी ले रहे हैं। इसके ज़रिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह तालीम दे रहे हैं कि आपस के झगड़े ख़त्म कर दो, अल्लाह के बन्दे बन जाओ और आपस में भाई भाई बन जाओ। और झगड़े के जो जो असबाब हो सकते हैं उनको भी ख़त्म करो, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने इत्तिफ़ाक़ में, भाईचारे में और मुहब्बत में एक नूर रखा है, उस नूर के ज़रिए इन्सान की दुनिया भी रोशन होती है और आख़िरत भी रोशन होती है। और अगर आपस में झगड़े हों, फ़साद हों तो यह अंधेरा है, दुनिया में भी अंधेरा और आख़िरत में भी अंधेरा, जो इन्सान के दीन को मूंड कर रख देता है।

क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में

एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"إذا التقى المسلمان بسيفهمافالقاتل والمقتول كلهما فى النار"

यानी अगर दो मुसलमान तलवार के ज़रिए एक दूसरे का मुक़ाबला करने खड़े हो जाएं और आपस में लड़ाई करना शुरू कर दें तो अगर उनमें से एक दूसरे को क़त्ल कर देगा तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों जहन्नम में जायेंगे। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सवाल कियाः या रसूलल्लाह! क़ातिल तो जहन्नम में जायेगा क्योंकि उसने एक मुसलमान को नाहक़ क़त्ल किया, लेकिन मक़्तूल जहन्नम में क्यों जायेगा? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमायाः

"إنه كان حريصًا على قتل صاحبه"

क्योंकि यह मक़्तूल (यानी क़त्ल होने वाल शख़्स) भी अपने सामने वाले को मारने के इरादे से चला था, इसी लिए तलवार उठाई थी कि अगर मेरा दाव चल गया तो मैं मार दूंगा, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से दाव उसका नहीं चला बल्कि दूसरे का दाव चल गया, इसलिए यह मक़्तूल बन गया और वह क़ातिल बन गया, इस वजह से यह भी जहन्नम में वह भी जहन्नम भी। इसलिए फ़रमाया कि किसी मुसलमान के साथ लड़ाई का मामला हरगिज़ न करो।

हब्शी गुलाम हाकिम की इत्तिबा करो

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई हब्शी ग़ुलाम भी तुम पर हाकिम बनकर आ जाए तो उसके ख़िलाफ़ भी तलवार मत उठाओ, जब तक वह खुलेआम कुफ़्र का इर्तिकाब न करे। क्योंकि अगर तुम उसके ख़िलाफ़ तलवार उठाओगे तो कोई तुम्हारा साथ देगा और कोई दूसरे का साथ देगा, उसके नतीजे में मुसलमान दो गिरोहों में बंट जाएंगे और उनके दरमियान दुश्मनी व नफ़रत पैदा हो जाएगी और मुसलमानों के बीच फूट और बिखराव और ना इत्तिफ़ाक़ी को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी क़ीमत पर भी बर्दाश्त नहीं फ़रमाया, आपने फ़रमा दिया कि:

"کونوا عباد اللّٰہ اخواناً"

ऐ अल्लाह के बन्दो! आपस में भाई भाई बन जाओ।

आज ज़िन्दगी जहन्नम बनी हुई है

जब हमारे ज़ेहनों में इबादत का ख़्याल आता है तो नमाज़ रोज़े का तो ख़्याल आता है, सदक़े का ख़्याल आता है, ज़िक्र और तस्बीह का ख़्याल आता है, क़ुरआने करीम के पढ़ने का ख़्याल आता है, और अल्हम्दु लिल्लाह ये सब भी ऊंचे दर्जे की इबादतें हैं, लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि इनसे भी ऊंचे दर्जे की चीज़ मुसलमानों के दरमियान आपस में सुलह कराना है। और आज हमारा समाज हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इर्शाद से इतना दूर चला गया है कि क़दम क़दम पर आपसी दुश्मनी है, झगड़े और लड़ाईयां हैं, ना इत्तिफ़ाक़ियां हैं, और इसकी वजह से

ज़िन्दगी जहन्नम बनी हुई है। हालांकि आपने यह फ़रमा दिया कि यह चीज़ दीन को मूंडने वाली है, इसने आज हमारे दीन को मूंड डाला है, जिसकी वजह से इसकी बुराई और ख़राबी हमारे दिलों में बैठी हुई नहीं है।

लोगों के दरमियान इख़्तिलाफ़ डालने वाले काम करना

अगर हमारे समाज में कोई बेनमाज़ी है या कोई शराब पीता है या किसी और गुनाह में मुब्तला है, तो उसको तो हमारे समाज में अल्हम्दु लिल्लाह यह समझा जाता है कि यह शख़्स बुरा काम कर रहा है, लेकिन अगर कोई शख़्स ऐसा काम कर रहा है जिसकी वजह से लोगों के दरमियान लड़ाईयां हो रही हैं, जिसकी वजह से मुसलमानों के दरमियान झगड़े हो रहे हैं, तो उसकी तरफ़ से किसी के दिल में यह ख़्याल नहीं आता कि यह इतना बड़ा मुज्रिम है जितना सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसको मुज्रिम क़रार दे रहे हैं। और इस बात की फ़िक्र भी किसी के दिल में नहीं है कि इन झगड़ों को कैसे ख़त्म किया जाए? इसलिए यह बहुत बड़ा बाब (अध्याय) है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने खोला और आपस में सुलह कराने को नमाज़ रोज़े और सदक़े से भी अफ़ज़ल क़रार दिया।

ऐसा शख़्स झूठा नहीं

यहां तक कि एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया किः

"ليس الكذاب الذى ينمى خيرًا"

यानी जो शख़्स एक मुसलमान भाई के दिल में दूसरे की मुहब्बत पैदा करने के लिए और नफ़रत दूर करने के लिए कोई ऐसी बात कह दे जो बज़ाहिर हक़ीक़त के ख़िलाफ़ हो, तो वह झूठ बोलने वालों में शुमार नहीं होगा। जैसे एक शख़्स को मालूम हुआ कि फ़लां दो मुसलमान भाईयों के दरमियान झगड़ा है और दोनों एक दूसरे से नफ़रत करते हैं। यह शख़्स चाहता है कि दोनों के दरमियान मुहब्बत हो जाए। अब अगर यह शख़्स जाकर उनमें से किसी से ऐसी बात कह दे जो बज़ाहिर हक़ीक़त के ख़िलाफ़ है, जैसे यह कह दे कि आप तो फ़लां से इतनी नफ़रत करते हैं लेकिन वह तो आप से बहुत मुहब्बत करता है। वह तो आपके हक़ में दुआ़ करता है, मैंने उसको आपके हक़ में दुआ़ करते देखा है।

अब अगरचे उसका नाम लेकर दुआ़ करते हुए नहीं देखा था, लेकिन दिल में यह नियत कर ली कि वह यह दुआ़ तो करता ही होगा किः

"ربنا اٰتنا فى الدنيا حسنةً وفى الاٰخرة حسنة وقنا عذاب النار"

जिसके मायने यह हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको दुनिया में भी अच्छाई अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भी अच्छाई अ़ता फ़रमा। लफ़्ज़ "हम" में सारे मुसलमान दाख़िल हो गए।

यह हर मुसलमान के लिए दुआ है

इसी तरह कहने वाले ने यह नियत कर ली कि यह नमाज़ में "अत्तहिय्यात" तो पढ़ता है, और "अत्तहिय्यात" में ये अल्फ़ाज़ हैं:

"السلام علينا وعلىٰ عبادالله الصالحين"

इन अल्फ़ाज़ में वह तमाम मुसलमानों के लिए सलामती की दुआ करता है। इसी तरह नमाज़ के आख़िर में सलाम फेरते वक़्त कहता है:

"السلام عليكم ورحمة الله"

"अस्सलामु अ़लैकुम" के मायने यह हैं कि ऐ अल्लाह! उन पर सलामती नाज़िल फ़रमा। और फ़ुक़हा–ए–किराम ने फ़रमाया है कि जब आदमी नमाज़ के आख़िर मैं दाईं तरफ़ सलाम फेरे तो सलाम फेरते वक़्त यह नियत कर ले कि दाईं तरफ़ जितने फ़रिश्ते, जिन्नात और मुसलमान हैं उन सब के लिए सलामती की दुआ करता हूं। और जब बाईं तरफ़ सलाम फेरे तो यह नियत कर ले कि बाईं तरफ़ जितने फ़रिश्ते, जिन्नात और मुसलमान हैं, उन सब के लिए सलामती की दुआ करता हूं।

इसलिए इस नियत के साथ अगर दूसरे मुसलमान से यह कह दे कि फ़लां तो तुम्हारे हक़ में दुआ करता है, तो सामने वाले के दिल में उसकी क़द्र पैदा होगी कि मैं तो उसको बुरा समझता था लेकिन वह तो मेरे हक़ में दुआ करता है, इसलिए मुझे उस से दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए।

बल्कि बाज़ फ़ुक़हा ने इस हदीस की शरह में फ़रमाया कि मुसलमानों के दरमियान सुलह कराने के लिए खुला झूठ भी बोलना पड़े तो खुला झूठ बोलना भी जायज़ है। अगर उसके नतीजे में दो दिल मिल रहे हों। बहर हाल! आपस के झगड़ों की ख़राबी इतनी ज़्यादा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहां तक फ़रमा दिया कि ऐसे हालात में हक़ीक़त के ख़िलाफ़ बात कह देना भी जायज़ है जिस से दूसरे के दिल में क़द्र व मुहब्बत और इज़्ज़त पैदा हो जाए। इसलिए जहां कहीं मौक़ा मिले तो आपस में सुलह कराने के अ़ज़ीम दर्जे और बड़े सवाब को हासिल कर लो। कहां तुम सारी रात तहज्जुद पढ़ोगे, कहां तुम सारी उम्र रोज़े रखोगे, कहां तुम सारा माल सदक़ा करोगे, लेकिन अगर तुमने मुसलमानों के दरमियान इत्तिफ़ाक़ और एकता और मुहब्बत पैदा कराने की कोशिश कर ली तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस से भी आगे का दर्जा अ़ता फ़रमा देंगे।

बाज़ लोग बिल्कुल इसके उलट होते हैं। उनको दो मिले हुए दिल कभी अच्छे नहीं लगते, जहां कहीं देखा कि फ़लां दो शख़्सों में मुहब्बत है तो वे उनके दरमियान ऐसा शोशा छोड़ देते हैं, जिस से दोनों के दिलों में नफ़रत पैदा हो जाती है। याद रखिए! इस से ज़्यादा बद–तरीन गुनाह कोई और नहीं है।

शैतान का सही उत्तराधिकारी कौन?

शैतान ने अपने छोटे शैतानों की एक फ़ौज बना रखी

है, जो पूरी दुनिया में फैली हुई है। और वह लोगों को सही रास्ते से बहकाने का काम करती है। हदीस शरीफ़ में आता है कि यह इब्लीस (शैतान) कभी कभी समुद्र पर अपना दरबार आयोजित करता है और उनसे रिपोर्ट तलब करता है और उसकी तमाम फ़ौज उसको अपनी अपनी कारगुज़ारी सुनाती है। चुनांचे एक शैतान आकर कहता है कि एक शख़्स नमाज़ पढ़ने जा रहा था, मैंने उसके दिल में ऐसी बात डाली कि वह नमाज़ के लिए न जा सका और उसकी नमाज़ क़ज़ा हो गई। मैंने उसको नमाज़ से महरूम कर दिया। इब्लीस उसको शाबाशी देता है कि तुमने अच्छा काम किया। दूसरा शैतान आता है और कहता है कि एक शख़्स रोज़ा रखने का इरादा कर रहा था, मैंने उसके दिल को ऐसा पलटा कि वह रोज़े से बाज़ आ गया। इब्लीस उसको शाबाशी देता है कि तुमने अच्छा काम किया। उसके बाद तीसरा शैतान आता है और कहता है कि फ़लां शख़्स सदक़ा ख़ैरात करना चाहता था, मैंने उसके हालात ऐसे पैदा कर दिए कि वह सदक़ा करने से रुक गया। इब्लीस उसको भी शाबाशी देता है कि तुमने अच्छा काम किया। आख़िर में एक शैतान आकर कहता है कि दो मियां बीवी बड़ी मुहब्बत से ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, मैंने जाकर उनके दरमियान ऐसा मसला खड़ा कर दिया कि दोनों के दरमियान झगड़ा हो गया और दोनों एक दूसरे की सूरत देखने के रवादार न रहे, यहां तक कि दोनों के दरमियान जुदाई हो गई। इब्लीस यह सुनकर अपने तख़्त से खड़ा हो

जाता है और उसको गले लगा लेता है और कहता है कि तू मेरा सही उत्तराधिकारी है, तूने सही काम किया और मेरे मतलब के मुताबिक़ काम किया।

नफ़रतें डालने वाला बड़ा मुज्रिम है

बहर हाल! शैतान का सब से बड़ा हर्बा और सब से कामयाब मन्सूबा यह होता है कि लोगों के दिलों में नफ़रतें पैदा करे। इसलिए जिन लोगों की यह आ़दत होती है कि अच्छे ख़ासे रहते बसते लोगों के दरमियान और मुहब्बत करने वाले दोस्तों के दरमियान नफ़रत पैदा कर देते हैं, और इधर की बात उधर लगा देते हैं, लगाई बुझाई शुरू कर देते हैं। इस हदीस की रू से वे बहुत ख़तरनाक जुर्म का इर्तिकाब कर रहे हैं, नमाज़ रोज़े से रोक देना भी शैतानी अ़मल है लेकिन यह ऐसा शैतानी अ़मल है कि शैतान इस से बहुत ख़ुश होता है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इस से महफ़ूज़ रखे, आमीन। इसलिए इस से बचने की फ़िक्र करनी चाहिए।

झगड़ों से कैसे बचें?

अब सवाल यह है कि इन झगड़ों से कैसे बचें और आपस में मुहब्बतें कैसे पैदा हों। और ये आपस के इख़्तिलाफ़ात कैसे ख़त्म हों? इसके लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को बड़ी बारीक बीनी से हिदायतें अ़ता फ़रमाई हैं। उन हिदायतों में से एक एक हिदायत आपस में मुहब्बत को पैदा करने वाली है और

आपस के झगड़ों को ख़त्म करने वाली है। लेकिन उन हिदायतों के बयान से पहले एक उसूली बात समझ लें।

झगड़े ख़त्म करने की एक शर्त

उसूली बात यह है कि आपस के झगड़े ख़त्म करने और आपस में मुहब्बत पैदा करने और आपस में इत्तिफ़ाक़ और एकता पैदा करने की एक ख़ास शर्त है। जब तक वह शर्त नहीं पाई जायेगी, उस वक़्त तक झगड़े दूर नहीं होंगे। आज हर तरफ़ से यह आवाज़ बुलन्द हो रही है कि मुसलमानों में इत्तिहाद और एकता होना चाहिए, झगड़े ख़त्म होने चाहिएं, और यहां तक कि जो लोग झगड़ों का बीज बोने वाले हैं वे भी इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद का नारा लगाते हैं। लेकिन फिर भी इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ क़ायम नहीं होता, क्योंकि इत्तिहाद क़ायम नहीं होता? इसके बारे में एक बुज़ुर्ग की बात सुन लीजिए, जिसने इस बीमारी की दहकती हुई रग पर हाथ रख कर इस बीमारी की तश्ख़ीस (यानी जांच) की है। और मर्ज़ की सही तश्ख़ीस हमेशा अल्लाह वाले ही करते हैं, क्योंकि हर बीमारी की सही तश्ख़ीस और उसका सही इलाज अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों के दिलों पर ही नाज़िल फ़रमाते हैं।

हाजी इमदादुल्लाह साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

जमाअ़ते देवबन्द के सरदार और शैख़े वक़्त हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो हमारे शैख़ के शैख़ के शैख़ हैं। अगर उनके

हालात पूछो तो वह किसी मदरसे के फ़ारिग़ भी नहीं, बाक़ायदा ज़ाबते में सनद याफ़्ता आलिम भी नहीं, सिर्फ़ काफ़िया और कुदूरी तक किताबें पढ़े हुए थे, लेकिन जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे पर मारिफ़त के दरवाज़े खोलते हैं तो हज़ार इल्म व तहक़ीक़ के माहिर उसके आगे क़ुरबान हो जाते हैं। हज़रत मौलाना क़ासिम साहिब नानौतवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जैसे इल्म के पहाड़ और हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहिब गंगोही रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जैसे इल्म के पहाड़ भी अपनी तरबियत के लिए, अपने बातिन की सफ़ाई के लिए और अपने अख़्लाक़ को दुरुस्त करने के लिए उनके पास जाकर शार्गिदी इख़्तियार कर रहे हैं।

इत्तिहाद के लिए दो शर्तें, तवाज़ो और ईसार

उन्होंने यह गिरह खोली कि जब सब लोग इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ की कोशिश कर रहे हैं, इसके बावजूद इत्तिहाद क्यों क़ायम नहीं हो रहा है? इसके जवाब में जो हकीमाना बात हज़रत हाजी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इर्शाद फ़रमाई है, मैं दावे से कहता हूं कि अगर उस बात को हम लोग पल्ले बांध लें तो हमारे समाज के सारे झगड़े ख़त्म हो जाएं, फ़रमाया कि:

इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ का बुनियादी रास्ता यह है कि अपने अन्दर दो चीज़ें पैदा करो, अगर ये दो चीज़ें पैदा हो गईं तो इत्तिहाद क़ायम हो जायेगा और अगर इनमें से एक चीज़ भी न पाई गई तो कभी इत्तिहाद क़ायम नहीं होगा। वे

दो चीज़ें ये हैं: एक तवाज़ो, दूसरे ईसार।

"तवाज़ो" का मतलब यह है कि आदमी अपने आपको यों समझे कि मेरी कोई हक़ीक़त नहीं, मैं तो अल्लाह का बन्दा हूं और बन्दा होने की हैसियत से अल्लाह तआला के अहकाम का पाबन्द हूं। और अपनी ज़ात में मेरे अन्दर कोई फ़ज़ीलत नहीं, मेरा कोई हक़ नहीं, इसलिए अगर कोई शख़्स मेरी हक़ तल्फ़ी करता है तो वह कौन सा बुरा काम करता है। मैं तो हक़ तल्फ़ी का ही हक़दार हूं।

इत्तिहाद में रुकावट "तकब्बुर"

हज़रत हाजी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि इत्तिहाद इसलिए क़ायम नहीं होता कि हर आदमी के दिल में तकब्बुर है। वह यह समझता है कि मैं बड़ा हूं, मेरे फ़लां हुक़ूक़ हैं, फ़लां ने मेरी शान के ख़िलाफ़ बात की है, फ़लां ने मेरे दर्जे के ख़िलाफ़ काम किया है, मेरी हक़ तल्फ़ी की है। मेरा हक़ यह था कि वह मेरा सम्मान करता, लेकिन उसने मेरा सम्मान नहीं किया, मैं उसके घर गया, उसने मेरी ख़ातिर तवाज़ो नहीं की, इस तकब्बुर का नतीजा यह हुआ कि झगड़ा खड़ा हो गया।

तकब्बुर की वजह से अपने आपको बड़ा समझा और बड़ा समझने के नतीजे में अपने लिए कुछ हुक़ूक़ घड़ लिए, और यह सोचा कि मेरे रुतबे का तक़ाज़ा तो यह था कि फ़लां शख़्स मेरे साथ ऐसा सुलूक करता, जब दूसरे ने ऐसा सुलूक नहीं किया तो अब दिल में शिकायत हो गई, और उसके नतीजे में गिरह बैठ गई और उसके बाद नफ़रत

पैदा हो गई, और उसके बाद उसके साथ मामलात ख़राब करना शुरू कर दिए। इसलिए झगड़े की बुनियाद "तकब्बुर" यानी घमण्ड है।

राहत वाली ज़िन्दगी के लिए बेहतरीन नुस्ख़ा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैं तुम्हें मज़ेदार और राहत वाली ज़िन्दगी का एक नुस्ख़ा बताता हूं। अगर तुम इस नुस्ख़े पर अ़मल कर लोगे तो फिर इन्शा अल्लाह किसी की तरफ़ से दिल में कोई शिकवा शिकायत और गिला पैदा नहीं होगा। वह यह कि दिल में यह सोच लो कि यह दुनिया ख़राब चीज़ है और इसकी असल बनावट ही तक्लीफ़ पहुंचाने के लिए है इसलिए अगर मुझे किसी इन्सान या जानवर से तक्लीफ़ पहुंचती है तो यह तक्लीफ़ पहुंचना दुनिया की फ़ितरत की पैदाइश के ऐन मुताबिक़ है, और अगर दुनिया में किसी की तरफ़ से तुम्हें अच्छाई पहुंचे तो उस पर तुम्हें ताज्जुब करना चाहिए और उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए।

अच्छी उम्मीदें न बांधो

इसलिए दुनिया में किसी भी अपने मिलने जुलने वाले से, चाहे वह दोस्त हो, या रिश्तेदार हो, या क़रीबी अ़ज़ीज़ हो, किसी से अच्छाई की उम्मीद क़ायम न करो कि यह मुझे कुछ दे देगा, या यह मुझे कुछ नफ़ा पहुंचा देगा, या यह मेरी इज़्ज़त करेगा, या यह मेरी मदद करेगा। किसी भी

मख़्लूक़ से किसी भी क़िस्म की उम्मीद क़ायम न करो, और जब किसी मख़्लूक़ से नफ़े की कोई उम्मीद नहीं होगी, फिर अगर किसी मख़्लूक़ ने कोई फ़ायदा पहुंचा दिया और तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक कर लिया तो उस से तुम्हें ख़ुशी होगी, उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो कि या अल्लाह! आपने अपने फ़ज़्ल से उसके दिल में बात डाल दी जिसके नतीजे में उसने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया।

दुश्मन से शिकायत नहीं होती

और अगर किसी मख़्लूक़ ने तुम्हारे साथ बद सुलूकी की, तो उस से तक्लीफ़ नहीं होगी, क्योंकि पहले ही से उस से कोई अच्छी उम्मीद नहीं थी। देखिए! अगर कोई दुश्मन तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस से तुम्हें कोई शिकायत होती है? नहीं होती, क्योंकि वह तो दुश्मन ही है, उसका काम ही तक्लीफ़ पहुंचाना है। इसलिए उसके तक्लीफ़ पहुंचाने से ज़्यादा सदमा और रन्जिश नहीं होती, शिकवा और गिला नहीं होता। शिकवा उस वक़्त होता है कि जब किसी से अच्छाई की उम्मीद थी, लेकिन उसने बुराई कर ली। इसलिए हज़रत थानवी रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि सारी मख़्लूक़ से उम्मीद मिटा दो।

सिर्फ़ एक ज़ात से उम्मीद रखो

उम्मीद तो सिर्फ़ एक ज़ात से क़ायम करनी चाहिए, उसी से मांगो, उसी से अपेक्षा रखो, उसी से उम्मीद रखो, बाक़ी सारी दुनिया से उम्मीदें छोड़ दो। सिर्फ़ अल्लाह

तआ़ला से उम्मीदें बांधो। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ मांगा करते थेः

"اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ رَجَاءَكَ، وَاقْطَعْ رَجَائِیْ عَنْ مَّنْ سِوَاكَ"

ऐ अल्लाह! मेरे दिल में अपनी उम्मीद डाल दीजिए और मेरी उम्मीदें अपने सिवा हर एक मख़्लूक़ से ख़त्म कर दीजिए।

यह दुआ़ मांगा करो।

इत्तिहाद की पहली बुनियाद "तवाज़ो"

और जब इन्सान के अन्दर तवाज़ो (आ़जज़ी और इन्किसारी) होगी तो वह अपना हक़ दूसरों पर नहीं समझेगा कि मेरा कोई हक़ दूसरे के ज़िम्मे है, बल्कि वह तो यह समझेगा कि मैं तो अल्लाह का बन्दा हूं, मेरा कोई मक़ाम और कोई दर्जा नहीं, अल्लाह तआ़ला जो मामला मेरे साथ फ़रमायेंगे मैं उस पर राज़ी हूं। जब दिल में यह तवाज़ो पैदा हो गई तो दूसरे से उम्मीद भी क़ायम नहीं होगी। जब उम्मीद नहीं होगी तो फिर दूसरे से शिकवा शिकायत भी नहीं होगी। और जब शिकवा नहीं होगा तो झगड़ा भी पैदा नहीं होगा। इसलिए इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद की पहली बुनियाद "तवाज़ो" है।

इत्तिहाद की दूसरी बुनियाद "ईसार"

इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद की दूसरी बुनियाद "ईसार" है। यानी ख़ुदा की मख़्लूक़ के साथ ईसार का रवैया इख़्तियार करो। 'ईसार' के मायने यह हैं कि दिल में यह जज़्बा हो

कि मैं अपनी राहत की कुरबानी दे दूं और अपने मुसलमान भाई को राहत पहुंचा दूं। मैं ख़ुद तक्लीफ़ उठा लूं लेकिन अपने मुसलमान भाई को तक्लीफ़ से बचा लूं। ख़ुद नुक़सान उठा लूं लेकिन अपने मुसलमान भाई को नफ़ा पहुंचा दूं। यह ईसार का जज़्बा अपने अन्दर पैदा कर लो।

इस नफ़े व ज़रर की दुनिया में
यह हमने लिया है दर्से जुनूं
अपना तो ज़ियां तस्लीम मगर
औरों का ज़ियां मन्ज़ूर नहीं

अपना नुक़सान कर लेना मन्ज़ूर है, लेकिन औरों का नुक़सान मन्ज़ूर नहीं। यही वह सबक़ है जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अ़ता फ़रमाया।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और ईसार

और कुरआने करीम ने अन्सारी सहाबा–ए–किराम के ईसार को बयान करते हुए फ़रमाया:

"يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ"

यानी ये अन्सारी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ऐसे हैं कि चाहे सख़्त तंगदस्ती और नादारी की हालत हो, लेकिन उस हालत में भी अपने ऊपर दूसरों का ईसार करते हैं। कैसे करते हैं? एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ मुसाफ़िर आ गए जो तंगदस्त थे। ऐसे मौक़े पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमाते कि कुछ मेहमान बाहर से आ गए हैं जो तंगदस्त हैं, इसलिए

जिनको गुन्जाइश हो वे अपने साथ मेहमान को ले जाएं, और उनके खाने का बन्दो बस्त कर दें।

एक सहाबी का ईसार

चुनांचे उस मौके पर यह इर्शाद सुनकर एक अन्सारी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु एक मेहमान को अपने घर ले गए। घर जाकर बीवी से पूछा कि खाना है? मेहमान आए हैं। बीवी ने जवाब दिया कि इतना खाना नहीं है कि मेहमान को भी खिला सकें, या तो मेहमान खायेंगे या हम खायेंगे। सब नहीं खा सकते। उन सहाबी ने फ़रमाया कि खाना मेहमान के सामने रख दो और चिराग़ बुझा दो। चुनांचे बीवी ने खाना मेहमान के सामने रख दिया और चिराग़ बुझा दिया। उन सहाबी ने मेहमान से कहा कि खाना खाइए, मेहमान ने खाना शुरू किया और यह सहाबी उनके साथ बैठ गए, लेकिन खाना नहीं खाया बल्कि अपना खाली हाथ खाने तक ले जाते और मुंह तक लाते, ताकि मेहमान यह समझे कि खाना खा रहे हैं, हकीक़त में वह ख़ाली हाथ चला रहे थे। चुनांचे मियां बीवी और बच्चों ने रात भूख में गुज़ारी और मेहमान को खाना खिला दिया। अल्लाह तआ़ला को उनका यह अन्दाज़ इतना पसन्द आया कि कुरआने करीम में उसका बयान फ़रमा दिया कि:

"يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْكَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ"

ये वे लोग हैं जो अपनी ज़ात पर दूसरों को तरजीह देते हैं, चाहे ख़ुद उन पर तंगदस्ती की हालत हो। ख़ुद भूखा रहना गवारा कर लिया, लेकिन दूसरे को राहत पहुंचा दी और उसको खाना खिला दिया। यह है ईसार।

ईसार का मतलब

इसलिए ईसार यह है कि अपने ऊपर थोड़ी सी तक्लीफ़ बर्दाश्त कर ले, लेकिन अपने मुसलमान भाई का दिल ख़ुश कर दे। याद रखिए। जिसको अल्लाह तआ़ला यह सिफ़त अ़ता फ़रमाते हैं, उसको ईमान की ऐसी मिठास अ़ता फ़रमाते हैं कि दुनिया की सारी हलावतें और मिठास उसके सामने कुछ नहीं। जब इन्सान अपनी ज़ात पर तंगी बर्दाश्त करके दूसरे मुसलमान भाई को ख़ुश करता है और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट लाता है तो उसकी जो लज़्ज़त है उसके आगे दुनिया की सारी लज़्ज़तें कुछ नहीं हैं। यह दुनिया मालूम नहीं कितने दिन की है, पता नहीं कब बुलावा आ जाए, बैठे बैठे आदमी रुख़्सत हो जाता है, इसलिए ईसार पैदा करो, जब ईसार पैदा हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी बर्कत से दिलों में मुहब्बतें पैदा फ़रमा देते हैं, और ईसार करने वाले को अपनी नेमतों से नवाज़ते हैं।

एक शख़्स की मग़फ़िरत का वाक़िआ़

हदीस शरीफ़ में आता है कि पिछली उम्मतों में एक शख़्स था, जब उसका इन्तिक़ाल हो गया और अल्लाह तआ़ला के दरबार में पेश हुआ तो उसके आमाल नामे में कोई बड़ी इबादत नहीं थी, अल्लाह तआ़ला ने आमाल नामा लिखने वाले फ़रिश्तों से पूछा कि इसके आमाल नामे में कोई नेकी है या नहीं? फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि इसके आमाल नामे में कोई बड़ी नेकी तो नहीं है, लेकिन एक नेकी इसकी यह है कि जब किसी से कोई माल ख़रीदता

तो माल बेचने वाले से झगड़ता नहीं था, बस जो पैसे उसने बता दिए, उस से थोड़ा कम कराया और माल ख़रीद लिया।

"سہلًا اذا باع، سہلًا اذا اشتری"

और जब माल बेचने जाता तो उसमें भी नरमी करता उस पर ज़िद नहीं करता था कि बस मैं इतने पैसे लूंगा, बल्कि जब यह देखा कि ख़रीदने वाला ग़रीब है तो पैसे कम कर दिए। इसी तरह अगर इसका क़र्ज़ा दूसरे पर होता और वह देखता कि यह अपना क़र्ज़ा अदा नहीं कर पा रहा है तो उसको माफ़ कर देता था।

बस इसकी सिर्फ़ यह नेकी आमाल नामे में है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब यह मेरे बन्दों को क़र्ज़ से माफ़ कर देता था तो मैं इस बात का ज़्यादा मुस्तहिक़ हूं कि इसको माफ़ कर दूं, इसलिए मैंने इसको माफ़ कर दिया। इस बुनियाद पर अल्लाह तआला ने उसकी मग़फ़िरत फ़रमा दी। यह क्या चीज़ थी? यह "ईसार" था।

ख़ुद ग़र्ज़ी ख़त्म कर दो

बहर हाल! हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अपने अन्दर से तकब्बुर को निकालो और ईसार पैदा कर लो, तमाम झगड़े ख़त्म हो जायेंगे। और "ख़ुद ग़र्ज़ी" यह ईसार की ज़िद है, ख़ुद ग़र्ज़ी का मतलब यह है कि इन्सान हर वक़्त अपनी कायनात में उलझा हुआ है कि किस तरह मुझे पैसे ज़्यादा मिल जाएं, किस तरह मुझे इज़्ज़त ज़्यादा मिल जाए, किस

तरह मुझे शोहरत मिल जाए, किस तरह लोगों की निगाह में मेरा रुतबा बुलन्द हो जाए। दिन रात इसी फ़िक्र में पड़ा हुआ है। यह है "ख़ुद ग़र्ज़ी" ईसार इसकी ज़िद है।

"तवाज़ो" की ज़िद है "तकब्बुर" इसलिए अगर इन्सान तकब्बुर और ख़ुद ग़र्ज़ी छोड़ दे और तवाज़ो और ईसार इख़्तियार कर ले तो फिर इत्तिहाद और मुहब्बत क़ायम हो जायेगी, इन्शा अल्लाह। इसलिए हर मुसलमान इसको पल्ले बांध ले। बहर हाल! एक अमल तो यह हो गया जो हज़रत हाजी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने बयान फ़रमाया।

पसन्दीदगी का मेयार एक हो

दूसरी बात जो हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई जो हक़ीक़त में तमाम उम्दा और ऊंचे अख़्लाक़ की बुनियाद है, अगर यह चीज़ हमारे अन्दर पैदा हो जाए तो सारे झगड़े हमारे अन्दर से ख़त्म हो जाएं, वह बात यह इर्शाद फ़रमाई:

أحب لاخيك ما تحب لنفسك   واكره لأخيك ما تكره لنفسك

यानी अपने भाई के लिए वही बात पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते हो। और अपने भाई के लिए वही बात ना पसन्द करो जो अपने लिए ना पसन्द करते हो। इसलिए जब भी किसी के साथ कोई मामला पेश आए तो ख़ुद को उसकी जगह पर रख कर सोच लो कि अगर मैं उसकी जगह पर होता और यह मेरी जगह पर होता और मेरे साथ यह मामला करता तो मैं किस बात को पसन्द करता और किस बात को ना पसन्द करता। इसलिए जिस

बात को मैं पसन्द करता मुझे उसके साथ भी वही मामला करना चाहिए। और जो चीज़ मैं ना पसन्द करता मुझे भी उसके साथ वह चीज़ नहीं करनी चाहिए। यह बेहतरीन पैमाना है कि इसके ज़रिए आप दूसरों के साथ किए गए हर मामले को जांच सकते हैं।

दोहरे पैमाने ख़त्म कर दो

हमारे समाज की बहुत बड़ी बीमारी यह है कि हमने दोहरे पैमाने बना रखे हैं। अपने लिए मेयार कुछ और है और दूसरे के लिए मेयार कुछ और है। अपने लिए जो बात पसन्द करते हैं वह दूसरों के लिए पसन्द नहीं करते। आप ज़रा ग़ौर करके देखें कि अगर हर शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस नसीहत पर अ़मल करना शुरू कर दे कि अपने भाई के लिए भी वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है तो फिर कोई झगड़ा बाक़ी नहीं रहेगा। इसलिए कि उस सूरत में हर शख़्स ऐसे अ़मल से परहेज़ करेगा जो दूसरों को तक्लीफ़ देने वाला होगा।

बहर हाल! अपने दरमियान इत्तिफ़ाक़ और इत्तिहाद यानी एकता पैदा करने की ये चन्द उसूली बातें हैं, अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इनकी समझ भी अ़ता फ़रमाए और इन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(दूसरा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (दूसरा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(दूसरा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

पिछले इतवार को ख़ानदानी झगड़े और उनको ख़त्म करने के बारे में कुछ अ़र्ज़ किया था। एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन इख़्तिलाफ़ों और झगड़ों को ख़त्म करने का एक और तरीक़ा बयान फ़रमाया है। वह हदीस यह है कि:

عن ابن عمر رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: المسلم اذا كان يخالط الناس ويصبر على أذا هم خير من المسلم الذى لا يخالط الناس ولا يصبر على أذا هم۔ (ترمذی شریف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत

करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः एक मुसलमान वह है जो लोगों से अलग थलग होकर बैठ गया, लोगों से किनारा इख़्तियार कर लिया। जैसे वह किसी मस्जिद में या मदरसे में या इबादत गाह में बैठ गया ताकि लोगों से साबक़ा पेश न आए, और यह सोचा कि मैं तन्हाई में इबादत करता रहूंगा। दूसरा मुसलमान वह है जिसने तन्हाई इख़्तियार नहीं की, बल्कि लोगों से मिला जुला रहा, लोगों से ताल्लुक़ात भी हैं, रिश्तेदारियां और दोस्तियां भी हैं, और उनके साथ उठता बैठता भी है, और फिर साथ रहने और उनके साथ मामलात करने के नतीजे में लोगों से तक्लीफ़ें भी पहुंचती हैं, और वह उन तक्लीफ़ों पर सब्र करता है। फ़रमाया कि यह दूसरा मुसलमान जो लोगों के साथ मिलकर रहता है और उनकी तक्लीफ़ों पर सब्र करता है, यह मुसलमान उस मुसलमान से जो लोगों से अलग थलग रहता है और उसके नतीजे में उसको तक्लीफ़ों पर सब्र करने की ज़रूरत भी पेश नहीं आती, कहीं ज़्यादा बेहतर है।

इस्लाम में रहबानियत नहीं

यह आप हज़रात को मालूम ही है कि हमारे दीन ने ईसाई मज़हब की तरह रहबानियत (यानी दुनियावी मामलात से बिल्कुल बे ताल्लुक़ हो जाने) की तालीम नहीं दी, ईसाइयों के यहां अल्लाह तआ़ला की नज़्दीकी हासिल करना उस वक़्त तक मुम्किन नहीं है जब तक इन्सान अपने सारे दुनियावी कारोबार को न छोड़े और अपने तमाम

ताल्लुक़ात को न छोड़ दे, और रहबानियत की ज़िन्दगी न गुज़ारे। लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें यह तालीम दी कि लोगों के साथ मिले जुले रहो और फिर लोगों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करो।

साथ रहने से तक्लीफ़ पहुंचेगी

अगर आप ग़ौर करें तो यह अ़जीब व ग़रीब तालीम है, क्योंकि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लोगों के साथ मिले जुले रहने को और उनसे पहुंचने वाली तक्लीफ़ को एक साथ ज़िक्र फ़रमाया है। जिस से यह मालूम हो रहा है कि ये दोनों काम एक दूसरे के लिए लाज़िम और मलज़ूम हैं। यानी जब तुम लोगों के साथ मिलो जुलोगे और उनके साथ रहोगे तो उनसे तुम्हें ज़रूर तक्लीफ़ पहुंचेगी। और जब तुम्हारा किसी भी दूसरे इन्सान से वास्ता पेश आयेगा तो यह मुम्किन नहीं कि उस से तुम्हें कभी भी कोई तक्लीफ़ न पहुंचे, लाज़मी बात है कि तक्लीफ़ पहुंचेगी, चाहे वह तुम्हारा कितना ही क़रीबी अ़ज़ीज़ हो, और चाहे वह कितना ही क़रीबी दोस्त हो। अब सवाल यह है कि यह तक्लीफ़ क्यों पहुंचेगी? इसको भी समझ लेना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला की कामिल कुदरत इन्सान के चेहरे में

इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने जब से हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, उस वक़्त से

लेकर आज तक अरबों खरबों इन्सानों को पैदा फ़रमाया, आगे क़ियामत तक पैदा होते रहेंगे, और हर इन्सान को अल्लाह तआ़ला ने एक चेहरा अ़ता फ़रमाया है जो बालिश्त भर का है, उसमें आंख भी है, नाक भी है, मुंह भी है, दांत भी हैं, और कान भी हैं, रुख़्सार भी हैं, और ठोड़ी भी है, हर इन्सान के चेहरे में ये चीज़ें मौजूद हैं लेकिन इतने अरबों, खरबों, पदमों इन्सानों में किसी दो इन्सानों का चेहरा सौ फ़ीसद एक जैसा नहीं होता। अल्लाह तआ़ला की कामिल क़ुदरत देखिए कि हर इन्सान के चेहरे की लम्बाई एक बालिश्त है, और यह भी नहीं कि किसी इन्सान की नाक हो किसी की नाक न हो, किसी के कान हों किसी के कान न हों, किसी की आंखें हों किसी की न हों, बल्कि तमाम इन्सानों के चेहरे में ये सब चीज़ें भी होती हैं, लेकिन किसी दो इन्सानों का चेहरा एक जैसा नहीं मिलेगा, बल्कि हर इन्सान का चेहरा दूसरे से अलग होगा। और यह अलग होना और इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ उन इन्सानों के चेहरों में नहीं जो अब तक पैदा हो चुके हैं, बल्कि जो नये इन्सान पैदा हो रहे हैं, उनके अन्दर भी यह इख़्तिलाफ़ मौजूद है। ऐसा नहीं है कि अब जो नया इन्सान पैदा होगा वह किसी पहले इन्सान की कॉपी और नक़ल होगा, ऐसा नहीं है, बल्कि नया पैदा होने वाला इन्सान अपना चेहरा ख़ुद लेकर आयेगा। इस तरह अल्लाह तआ़ला ने एक इन्सान को दूसरे इन्सान से ऐसा मुम्ताज़ और अलग कर दिया कि चेहरे के नुक़ूश देख कर पता चल जाता है कि यह फ़लां इन्सान है और

यह फ़लां इन्सान है।

रंगों की विभिन्नता में कुदरत का नज़ारा

और यह भी अल्लाह तआ़ला की कुदरत का करिश्मा है कि मुख़्तलिफ़ नस्लों के इन्सानों के नुकूश में एक चीज़ ऐसी है जो सब में मुश्तरक है, और एक चीज़ ऐसी है जिस से उसकी पहचान और फ़र्क़ होती है। जैसे अफ़रीक़ी नस्ल के जो इन्सान होंगे वे दूर से देख कर पहचान लिए जायेंगे कि यह अफ़रीक़ी नस्ल का है। "योरप" वाला अलग पहचान लिया जायेगा कि यह योरप का है, इसके बावजूद उनके दरमियान भी आपस में फ़र्क़ है, कोई दो फ़र्द एक जैसे नहीं हैं। इसलिए मुश्तरक होने के बावजूद फ़र्क़ और इम्तियाज़ भी मौजूद है। ये सब अल्लाह तआ़ला की कुदरत का नज़ारा है, इन्सान कहां इस कुदरत का इहाता कर सकता है।

उंगलियों के पोरों में अल्लाह की कुदरत

और चीज़ों को छोड़िए! उंगलियों के पोरों को ले लें, हर इन्सान के हाथ की उंगलियों के पोरे दूसरे इन्सान के पोरे से मुख़्तलिफ़ और अलग हैं। चुनांचे काग़ज़ों पर बेशुमार ज़रूरतों के लिए दस्तख़त (हस्ताक्षर) लेने के साथ साथ अंगूठा भी लगवाया जाता है, इसलिए कि उंगूठे के पोरे में जो छोटी छोटी लकीरें हैं, वे किसी एक इन्सान की लकीरें दूसरे इन्सान की लकीरों से नहीं मिलतीं। हर एक की लकीरें अलग हैं। अगर वैसे दो इन्सानों के अंगूठे

मिलाकर देखें तो यह नज़र आयेगा कि कोई फ़र्क़ नहीं है, लेकिन यह बात पूरी दुनिया में मुसल्लम और तयशुदा है कि दो इन्सानों के अंगूठों की लकीरें एक जैसी नहीं हैं। इसलिए जब किसी इन्सान ने किसी काग़ज़ पर अंगूठा लगा दिया तो यह मुताय्यन हो गया कि यह फ़लां इन्सान के अंगूठे के निशान हैं, क्योंकि दूसरे इन्सान के अंगूठे के निशान उस से अलग होंगे।

अंगूठे की लकीरों के माहिरीन का दावा

अब तो ऐसे माहिरीन भी पैदा हो गए हैं कि जिनका यह दावा है कि हमारे सामने किसी इन्सान के अंगूठे के निशान रख दिए जाएं, हम उसके निशानों को बड़ा करके देखेंगे, और उसके ज़रिए हम उस इन्सान के सर से लेकर पांव तक सारी शक्ल व सूरत और जिस्मानी बनावट का नक़्शा खींच सकते हैं। इसलिए कि वे लकीरें यह बता देती हैं कि उस इन्सान की आंखें कैसी होंगी, उसकी नाक कैसी होगी, उसके दांत कैसे होंगे और हाथ कैसे होंगे?

हम अंगूठे के पोरे को दोबारा बनाने पर क़ादिर हैं

मैंने अपने वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से सुना कि कुरआने करीम की सूरः "क़ियामत" में एक आयत है, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि:

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ، بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ۔

(سورۃ القیامۃ: آیت ۳،۴)

क्या यह (काफ़िर) इन्सान यह समझता है कि हम उसकी हड्डियां जमा नहीं कर सकेंगे। ये काफ़िर जो आख़िरत के इन्कारी हैं, वे यह कहा करते थे कि जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे और हमारी हड्डियां तक गल जायेंगी, फिर किस तरह से हमें दोबारा ज़िन्दा किया जा सकेगा? और कौन ज़िन्दा करेगा?

इसके जवाब में अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि क्या इन्सान यह गुमान करता है कि हम उसकी हड्डियां दोबारा जमा नहीं कर सकेंगे? क्यों नहीं! हम तो इस पर भी क़ादिर हैं कि उसकी उंगलियों के पोरों को भी वैसा ही दोबारा बना दें। इस कायनात का बड़े से बड़ा वैज्ञानिक भी यह नहीं कर सकता कि वैसा ही अंगूठा बना दे, लेकिन हम इस पर क़ादिर हैं।

आयत सुनकर मुसलमान होना

अल्लाह तआला यह भी कह सकते थे कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उसका चेहरा दोबारा बना दें, उसके हाथ दोबारा बना दें, उसके पांव दोबारा बना दें; लेकिन अल्लाह तआला ने ख़ास तौर पर पोरों का ज़िक्र फ़रमाया कि पोरे को दोबारा बनाने पर क़ादिर हैं। मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि एक नौ मुस्लिम वैज्ञानिक इस आयत को पढ़कर मुसलमान हो गया, और उसने यह कहा कि यह बात सिवाए कायनात के पैदा करने वाले के कोई दूसरा नहीं कह सकता कि हम इस पोरे को दोबारा बना सकते हैं, यह बात सिर्फ़ वही कह सकता है

जिस्ने इस कायनात को बनाया हो। जिसने इन्सान को पैदा किया हो, जिसने इन्सान के एक एक अंग को बनाया हो।

अल्लाह तआ़ला की कामिल कुदरत

बहर हाल! कोई इन्सान अपनी ज़ाहिरी शक्ल व सूरत में दूसरे इन्सान जैसा नहीं है, बल्कि अगर दो इन्सान एक जैसे हो जाएं तो इस पर ताज्जुब होता है कि देखो ये दो इन्सान हम–शक्ल हैं। अलग अलग होने पर कोई ताज्जुब नहीं होता, इसलिए कि हर इन्सान दूसरे से अलग है। हालांकि ताज्जुब की बात तो यह है कि अलग अलग कैसे हैं, अगर सारे इन्सान एक दूसरे के हम–शक्ल होते तो ताज्जुब की बात न होती, लेकिन अल्लाह तआ़ला की कुदरते कामिला को देखिए कि उसने अरबों खरबों इन्सान पैदा फ़रमा दिए, मगर हर एक की सूरत दूसरे से अलग है। मर्द की सूरत अलग है, औरत की सूरत अलग है, हर एक सिन्फ़ में एक दूसरे से इम्तियाज़ और फ़र्क़ भी मौजूद है, एक दूसरे से इश्तिराक (यानी एक जैसा होना) भी मौजूद है।

दो इन्सान के मिज़ाजों में इख़्तिलाफ़

इसलिए जब दो इन्सानों के चेहरे एक जैसे नहीं हो सकते, तो फिर दो इन्सानों की तबीयतें कैसे एक जैसी हो सकती हैं। जब ज़ाहिर एक जैसा नहीं तो फिर उनकी तबीयतों में भी फ़र्क़ होगा। किसी की तबीयत कैसी है,

किसी की कैसी है। किसी का मिज़ाज कैसा है, किसी का मिज़ाज कैसा है। किसी की पसन्द कुछ है किसी की कुछ है। हर इन्सान की पसन्द अलग, हर इन्सान का मिज़ाज अलग, हर इन्सान की तबीयत अलग। इसलिए तबीयतों के मुख़्तलिफ़ और अलग होने की वजह से कभी यह नहीं हो सकता कि दो आदमी एक साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हों और एक साथ रहते हों, और कभी भी उनमें से एक को दूसरे से तक्लीफ़ न पहुंचे, ऐसा होना मुम्किन ही नहीं। तबीयत मुख़्तलिफ़ और अलग होने की वजह से एक को दूसरे से ज़रूर तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी जिस्मानी तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी रूहानी तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी नफ़्सियाती तक्लीफ़ पहुंचेगी, कभी दूसरे की तरफ़ से तबीयत के ख़िलाफ़ बात होगी जो दूसरे को बुरी लगेगी।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के मिज़ाज अलग अलग थे

देखिए! इस कायनात में अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ज़्यादा अफ़ज़ल मख़्लूक़ इस ज़मीन व आसमान की निगाहों ने नहीं देखी। अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ज़्यादा अफ़ज़ल, उनसे ज़्यादा मुत्तक़ी, उनसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले, उनसे ज़्यादा ईसार करने वाले, उनसे ज़्यादा एक दूसरे पर जान निसार करने वाली कोई मख़्लूक़ पैदा नहीं हुई और न आईन्दा पैदा

होगी। लेकिन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तबीयतें भी मुख़्तलिफ़ और अलग थीं, उनके आपस के मिज़ाज में भी फ़र्क़ था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपकी पाक बीवियों के दरमियान ना इत्तिफ़ाक़ी

रूए ज़मीन पर कोई बीवी अपने शौहर के लिए इतनी वफ़ादार और इतना ख़्याल रखने वाली नहीं हो सकती जितनी कि उम्महातुल मोमिनीन (यानी नबी करीम की पाक बीवियां जो तमाम मुसलमानों की मां होने का रुतबा रखती हैं) नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ख़्याल रखने वाली थीं, लेकिन उनको भी तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आ जाती थीं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी कभी कभी तबीयत के ख़िलाफ़ होने की वजह से उनसे कुछ गिरानी और नाराज़गी हो जाती थी। चुनांचे एक बार इस नागवारी की वजह से एक महीना ऐसा गुज़रा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसमें क़सम खा ली थी कि मैं एक महीने तक अपनी पाक बीवियों के पास नहीं जाऊंगा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से नाराज़गी

और फिर यह नहीं कि पाक बीवियों की तरफ़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गिरानी होती थी बल्कि कभी कभी पाक बीवियों रज़ियल्लाहु अ़न्हुन्–न को भी

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से गिरानी हो जाती थी। चुनांचे एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि ऐ आ़यशा! मुझे पता चल जाता है जब तुम मुझ से राज़ी होती हो और जब तुम मुझ से नाराज़ होती हो। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा कि कैसे? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम मुझ से ख़ुश होती हो तो क़सम खाते वक़्त यह कहती हो "व रब्बि मुहम्मद यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के परवर्दिगार की क़सम" और जब मुझ से नाराज़ होती हो तो क़सम खाते वक़्त यह कहती हो "व रब्बि इब्राहीम यानी इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के रब की क़सम" हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अ़र्ज़ कियाः "ला अहजुरु इल्ला इस्म–क" या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ऐसे मौक़े पर मैं सिर्फ़ आपका नाम ही छोड़ती हूं लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत दिल से जुदा नहीं होती। अब देखिए! सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा शफ़ीक़ व मेहरबान कोई और हो सकता है? ख़ास तौर पर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत का जो आ़लम था वह कोई छुपी चीज़ नहीं, लेकिन इसके बावजूद हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को भी कभी कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कुछ गिरानी पैदा हो जाती थी, और उस

गिरानी और नाराज़गी का एहसास नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी हो जाता था।

मियां बीवी के ताल्लुक़ की हैसियत से नाराज़गी

लेकिन कोई यह न समझे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तो तक्लीफ़ पहुंचाना मआ़ज़ल्लाह कुफ़्र है। तो अगर हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तक्लीफ़ पहुंची तो यह कितनी बुरी बात हुई। बात असल में यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हैसियतें अलग अलग रखी हैं। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जो गिरानी होती थी वह एक शौहर होने की हैसियत से होती थी, जिस तरह बीवी को शौहर पर नाज़ होता है, ऐसे ही शौहर को भी बीवी पर नाज़ होता है, उस नाज़ के आ़लम में इस क़िस्म की नाराज़गी भी हो जाया करती थी। इसका रिसालत के मन्सब (ओ़हदे) से कोई ताल्लुक़ नहीं था।

हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के मिज़ाजों में इख़्तिलाफ़

बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपकी पाक बीवियों के दरमियान भी तबीयत के ख़िलाफ़ उमूर पैदा हो जाते थे। और आगे बढ़िए, हज़रत सिद्दीक़े अकबर और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा जिनको "शैख़ैन" कहा जाता है। अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के बाद इन दोनों बुज़ुर्गों से ज़्यादा अफ़ज़ल

इन्सान इस रूए ज़मीन पर पैदा नहीं हुए। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ इन दोनों के ताल्लुक़ का आ़लम यह था कि सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़रमाते हैं कि इन दोनों के नाम हमेशा एक साथ आया करते थे।

चुनांचे हम यों कहा करते थे कि:

جاء أبو بكرؓ وعمرؓ، ذهب ابوبكرؓ وعمرؓ، خرج أبوبكرؓ و عمرؓ-

यानी अबू बक्र और उमर आए, अबू बक्र और उमर गए, अबू बक्र और उमर निकले।

जहां नाम आ रहा है दोनों का एक साथ आ रहा है। इस तरह एक जान दो क़ालिब थे। हर वक़्त इन दोनों का नाम सामने होता। जहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मश्विरा करने की ज़रूरत पेश आती, फ़रमाते ज़रा अबू बक्र और उमर को बुलाओ, कभी दोनों में जुदाई का तसव्वुर नहीं होता था।

और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की इज़्ज़त करने का यह आ़लम था कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि आप मेरी ज़िन्दगी की सारी इबादतें मुझ से ले लीजिए और सारे आमाल मुझ से ले लें और वह एक रात जो आपने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ 'ग़ारे सौर' में गुज़ारी है वह मुझे दे दीजिए। दोनों के दरमियान सम्मान और मुहब्बत का यह आ़लम था, लेकिन दोनों की

तबीयतों में इख़्तिलाफ़ था जिसकी वजह से कभी कभी उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ भी हो जाता था।

हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि के दरमियान इख़्तिलाफ़ का एक वाक़िआ

चुनांचे हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार इन दोनों के दरमियान बात चीत हो रही थी, हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कोई बात कह दी जिसकी वजह से हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु नाराज़ होकर चल दिए। अब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनको मनाने के लिए और समझाने के लिए उनके पीछे पीछे चल दिए। चलते चलते हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने घर में दाख़िल हो गए और दरवाज़ा बन्द कर लिया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जब यह देखा कि यह तो बहुत ज़्यादा नाराज़ हो गए हैं तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके चेहरे को देखकर समझ गए या "वही" के ज़रिए अल्लाह तआ़ला ने आपको ख़बर दे दी। चुनांचे अभी हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस की तरफ़ आ रहे थे कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को जो मज्लिस में बैठे हुए थे, ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि यह जो तुम्हारे दोस्त आ रहे हैं, यह आज किसी से झगड़ा करके आ रहे हैं। चुनांचे हज़रत सिद्दीक़े

अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मज्लिस में आकर बैठ गए।

दूसरी तरफ़ जब हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्होंने घर में दाख़िल होकर दरवाज़ा बन्द कर लिया था, जब तन्हाई में पहुंचे तो उनको बड़ी शर्मिन्दगी और नदामत हुई कि मैंने यह बहुत बुरा किया कि अव्वल तो हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़गी का इज़हार किया, फिर जब वह मेरे पीछे आए तो मैंने घर में दाख़िल होकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। चुनांचे घर से बाहर निकले और हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे चल पड़े कि जाकर उनको मनाऊं। जब हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में पहुंचे तो देखा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं और हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु भी बैठे हैं। मज्लिस में आकर अपनी नदामत और शर्मिन्दगी का इज़हार शुरू कर दिया कि या रसूलल्लाह! मुझ से ग़लती हो गई। हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे: या रसूलल्लाह! मुझ से ग़लती हुई थी, उनसे ज़्यादा ग़लती नहीं हुई। आप उनको माफ़ कर दीजिए, असल में ग़लती मेरी थी। उस वक़्त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ख़िताब करते हुए अजीब व ग़रीब जुम्ला इर्शाद फ़रमाया। फ़रमाया कि:

क्या मेरे साथी को मेरे लिए छोड़ोगे या नहीं? यह वह **शख़्स है कि जब मैंने यह कहा था कि:**

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا۔

ऐ लोगो! मैं तुम सब के लिए अल्लाह का रसूल बनकर आया हूं। उस वक़्त तुम सब ने कहा था कि "कज़ब्–त" (यानी तुम झूठ बोलते हो) सिर्फ़ इसने कहा था "सदक़्–त" (यानी आप सच कहते हैं) यह तन्हा वह शख़्स था जिसने कहा था कि तुम सच कहते हो।

बहर हाल! सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु और फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे इन्सान जिनका ज़िक्र हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में एक साथ आता था, उनकी तबीयतों में और मिज़ाजों में भी इख़्तिलाफ़ था जिसके नतीजे में उनके दरमियान भी इस क़िस्म के वाक़िआ़त पेश आए।

मिज़ाजों का इख़्तिलाफ़ हक़ है

इस से मालूम हुआ कि कोई दो इन्सान ऐसे नहीं हैं जिनकी तबीयतें एक जैसी हों। जैसा तुम चाहते हो दूसरा भी वैसा ही हो, यह नहीं हो सकता। कोई बाप चाहे कि मेरा बेटा सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकता, कोई बेटा यह चाहे कि मेरा बाप सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकता, कोई शौहर यह चाहे कि मेरी बीवी सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकती, कोई बीवी यह चाहे कि मेरा शौहर सौ फ़ीसद मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जाए, नहीं हो सकता।

सब्र नहीं करोगे तो लड़ाईयां होंगी

इसलिए जब आदमियों के साथ रहना होगा तो फिर

तक्लीफ़ें भी पहुंचेंगी, आदमियों के साथ रहना और उनसे तक्लीफ़ें पहुंचना यह दोनों एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इन दोनों को एक दूसरे से जुदा किया ही नहीं जा सकता। इसलिए जब आदमियों के साथ रहना है तो यह चोच कर रहना होगा कि उनसे मुझे तक्लीफ़ भी पहुंचेगी और उस तक्लीफ़ पर मुझे सब्र भी करना होगा, अगर सब्र नहीं करोगे तो लड़ाईयां, झगड़े, फ़ितने और फ़साद होंगे, और ये चीज़ें वे हैं जो दीन को मूंड देने वाली हैं।

इसलिए जिस किसी से कोई ताल्लुक़ हो, चाहे वह ताल्लुक़ रिश्तेदारी का हो, चाहे वह ताल्लुक़ दोस्ती का हो, चाहे वह निकाह का ताल्लुक़ हो, लेकिन यह समझ लेना चाहिए कि उन ताल्लुक़ात में तक्लीफ़ें भी पहुंचेंगी, और उन तक्लीफ़ों पर मुझे सब्र करना होगा, और उन तक्लीफ़ों को मुस्तक़िल झगड़ेग का ज़रिया नहीं बनाऊंगा। ठीक है साथ रहने के नतीजे में तल्ख़ी भी थोड़ी बहुत हो जाती है, लेकिन उस तल्ख़ी को मुस्तक़िल झगड़े और नफ़रत पैदा करने का ज़रिया बनाना ठीक नहीं।

तक्लीफ़ों से बचने का तरीक़ा

अब सवाल यह है कि जब दूसरों के साथ रहने की वजह से तक्लीफ़ पहुंच रही है तो उस तक्लीफ़ पर अपने आपको कैसे तसल्ली दें? उस तक्लीफ़ से अपने आपको कैसे बचाएं? और तबीयत के ख़िलाफ़ होने के बावजूद आपस में कैसे मुहब्बतें पैदा करें? इसका नुस्ख़ा भी जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतला दिया,

कोई बात आप अधूरी छोड़ कर नहीं गए। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मियां बीवी के ताल्लुक़ के बारे में बयान फ़रमाया, क्योंकि सब से ज़्यादा तबीयत के ख़िलाफ़ बातें मियां बीवी के ताल्लुक़ात में ही पेश आती हैं। इसलिए कि जितनी निकटता ज़्यादा होगी, उतनी ही तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आने का भी इम्कान होगा, और मियां बीवी के दरमियान जितनी नज़्दीकी होती है वह किसी और रिश्ते में नहीं होती। चूंकि इस ताल्लुक़ में दूसरे ताल्लुक़ के मुक़ाबले में तक्लीफ़ पहुंचने के इम्कानात (संभावनाएं) ज़्यादा हैं, इसलिए इसके बारे में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक क़ीमती नुस्ख़ा बयान फ़रमा दिया, वह यह है कि:

لا يفرك مؤمن مؤمنة إن سخط منها خلقًا رضى منها آخر (مسلم شريف)

यानी कोई मोमिन मर्द किसी मोमिना औ़रत से बुग़्ज़ न रखे। मतलब यह है कि कोई शौहर अपनी बीवी से मुस्तक़िल बुग़्ज़ न रखे। क्योंकि अगर वह अपनी बीवी की किसी बात को ना पसन्द करेगा तो दूसरी किसी बात को पसन्द भी करेगा। यानी जब बीवी से तबीयत के ख़िलाफ़ कोई मामला पेश आता है तो तुम नाराज़ होते हो और बुरा मनाते हो, और उसी बात को लिए बैठे रहते हो कि यह ऐसी है, यह यों करती है, यों करती है, इसमें यह ख़राबी है, यह ख़राबी है। ख़ुदा के लिए यह देखो कि उसके अन्दर कुछ अच्छाईयां भी तो होंगी। इसलिए जब बीवी से कोई बात ऐसी सामने आए जो तुम्हें बुरी लग रही है तो उस

वक़्त उस बात का तसव्वुर करो जो तुम्हें पसन्दीदा है। जब अच्छाई का तसव्वुर करोगे तो उस बुराई के एहसास में कमी आयेगी।

सिर्फ़ अच्छाईयों की तरफ़ देखो

याद रखिए! दुनिया में कोई इन्सान पूरी तरह स्याह या सफ़ेद नहीं होता, कोई पूरा का पूरा ख़ैर या शर नहीं होता, अगर कोई बुरा है तो उसमें कुछ न कुछ भलाई भी ज़रूर होगी, अगर भला है तो उसमें कुछ न कुछ बुराई भी ज़रूर होगी। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपनी बीवी की अच्छाई की तरफ़ ध्यान करो, उसके नतीजे में तुम्हें नज़र आयेगा कि यह बात अगरचे उसके अन्दर तक्लीफ़ देने वाली है, लेकिन दूसरी बातें मेरी बीवी के अन्दर क़ाबिले क़द्र और तारीफ़ के क़ाबिल हैं। यह सोचने से सब्र आ जायेगा।

एक दिलचस्प वाक़िआ

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक साहिब का बड़ा अच्छा इलाज किया। वह इस तरह कि एक साहिब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी बीवी की शिकायत करने लगे कि उसमें फ़लां आ़दत बड़ी ख़राब है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किः "तल्लिक़हा" यानी अगर वह इतनी ख़राब है कि तुम्हारे लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त है तो उसको तलाक़ दे दो। अब उसका दिमाग़

ठीक हो गया और उसने सोचा कि अगर मैंने उसको तलाक़ दे दी और वह चली गई तो मुझ पर क्या गुज़रेगी। इसलिए उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि "ला असबिरु अ़न्हा" या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! उसके बग़ैर सब्र भी नहीं आता। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "अमसिक्हा" फिर उसको रोके रखो। यानी जब उसके अन्दर ख़राबी है, लेकिन उसके बग़ैर सब्र भी नहीं आता तो इसका इलाज इसके अ़लावा कुछ नहीं कि उसको रोके रखो और उसकी उस ख़राबी को बर्दाश्त करो। लेकिन अपनी तरफ़ से उसकी इस्लाह (सुधार) की जितनी कोशिश तुम से हो सकती है वह कर लो।

बीवी के कामों को सोचो

अब सवाल यह पैदा होता है कि जब उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने अपनी बीवी की ख़राबी बयान की तो आपने फ़ौरन उस से यह कह दिया कि उसको तलाक़ दे दो। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसको एक दम से तलाक़ देने का मश्विरा क्यों दे दिया? इसका जवाब यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तलाक़ देने का मश्विरा इसलिए दिया कि असल में उस शख़्स का सारा ध्यान अपनी बीवी की बुराई की तरफ़ लगा हुआ था, उसकी वजह से उसके दिल में उसकी बुराई इस तरह बैठ गयी थी कि उसका अपनी बीवी

की अच्छाईयों की तरफ़ ध्यान ही नहीं जा रहा था। इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसको आख़री बात कह दी कि अगर यह तुम्हारी बीवी इतनी बुरी है तो उसको तलाक़ देकर अलग कर दों। अब तलाक़ का नाम सुनकर उसके दिमाग़ में यह आया कि मेरी बीवी मेरा यह काम करती है, यह काम करती है, मेरे लिए वह इतनी फ़ायदेमन्द है, अगर मैंने तलाक़ दे दी तो ये सारे फ़ायदे जाते रहेंगे, तो मैं फिर क्या करूंगा और कैसे ज़िन्दगी गुज़ारूंगा। इसलिए फ़ौरन उसने कहा कि या रसूलल्लाह! मुझे उसके बग़ैर सब्र भी नहीं होता। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अच्छा तो फिर उसको रोके रखो।

बुराईयों की तरफ़ ध्यान करने का नतीजा

बात असल में यह है कि जब किसी की बुराईयां तुम्हारे दिल में बैठ जाती हैं, और उसकी बुराई की तरफ़ ध्यान लग जाता है तो फिर उसकी अच्छाईयों से आंखों पर पर्दे पड़ जाते हैं। इसलिए उसकी अच्छाईयों का तसव्वुर करो, और जब अच्छाईयों का तसव्वुर करोगे तो उसकी क़द्र दिल में बैठेगी और सुकून महसूस होगा। उस वक़्त पता चलेगा कि तक्लीफ़ तो पहुंचनी है, कोई न कोई बात तबीयत के ख़िलाफ़ होगी, लेकिन उस तबीयत के ख़िलाफ़ बात को बर्दाश्त करना पड़ेगा।

हो सकता है कि तुम ग़लती पर हो

यह बात समझ लें कि जब तुम किसी दूसरे की किसी

बात को अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ समझ रहे हो तो यह ज़रूरी नहीं कि वह शख़्स ग़लती पर हो, बल्कि यह भी हो सकता है कि वह दूसरा शख़्स ग़लती पर हो, और यह भी हो सकता है कि तुम ग़लती पर हो, क्योंकि तबीयतों का फ़र्क़ है।

जैसे एक आदमी को एक खाना पसन्द है, दूसरे को दूसरा खाना पसन्द है। एक आदमी को करेले पसन्द हैं, उसका सालन उसको मज़ेदार मालूम होता है, दूसरे आदमी को करेले ना पसन्द हैं, वह कहता है कि यह कड़वे हैं, मुझ से नहीं खाये जाते। यह तबीयत का इख़्तिलाफ़ है। अब यह ज़रूरी नहीं कि जो शख़्स यह कह रहा है कि मुझे करेले बहुत अच्छे लगते हैं, वह ग़लती पर है, या जो शख़्स यह कह रहा है कि मुझे करेले पसन्द नहीं, वह ग़लती पर है। बल्कि दोनों ग़लती पर नहीं हैं, लेकिन दोनों के मिज़ाजों का फ़र्क़ है, तबीयतों का फ़र्क़ है, वह भी अपनी जगह सही है और वह भी अपनी जगह पर सही है।

दोनों अपनी अपनी जगह पर दुरुस्त हों

इसलिए जिस जगह मुबाह (यानी जिनके करने में न सवाब हो और न गुनाह हो) चीज़ों के अन्दर आपस में इख़्तिलाफ़ होता है, वहां किसी एक फ़रीक़ को हक़ पर और दूसरे को बातिल पर नहीं कह सकते, बल्कि दोनों अपनी अपनी जगह पर दुरुस्त होते हैं। चुनांचे अक्सर मियां बीवी के दरमियान तबीयतों में इख़्तिलाफ़ होता हैं, जब दोनों इन्सानों की तबीयतों में इख़्तिलाफ़ होता है तो अगर सिन्फ़

भी बदल जाए कि एक मर्द है और एक औ़रत है, तो फिर तबीयतों का यह इख़्तिलाफ़ और ज़्यादा हो जाता है। औ़रत की एक फ़ितरत है और उसकी एक नफ़सियात है। मर्द की एक फ़ितरत है और उसकी एक नफ़सियात है। मर्द अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ सोचता है, औ़रत अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ सोचती है। इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम उसकी सिर्फ़ बुराईयों को मत देखो बल्कि अच्छाईयों की तरफ़ भी देखो।

सीधा करना चाहोगे तो तोड़ दोगे

एक और बात याद आ गई वह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रत को पस्ली से तश्बीह दी। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

المرأة كالضلع، إن اقمتها كسرتها، وان استمتعت بها، استمتعت بها وفيهاعوج (بخاری شریف)

औ़रत पस्ली की तरह है, अगर तुम उसको सीधा करना चाहोगे तो उसको तोड़ दोगे। और अगर तुम उसको उसके हाल पर छोड़ दोगे तो इसके बावजूद कि वह तुमको टेढ़ी नज़र आ रही है फिर भी तुम उस से फ़ायदा उठा सकोगे।

औ़रत का हुस्न उसके टेढ़ेपन में है

अब बाज़ हज़रात यह समझते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसको टेढ़ी पस्ली कह दिया तो इस की बुराई बयान फ़रमा दी। चुनांचे बाज़ लोग इसको उसकी बुराई के मायने में इस्तेमाल करते हैं। और

जब उनका बीवी से झगड़ा होता है तो वह बीवी से ख़िताब करते हुए कहते हैं कि "ऐ टेढ़ी पस्ली में तुझे सीधा करके रहूंगा" हालांकि उन लोगों ने यह ग़ौर नहीं किया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पस्ली को टेढ़ी कह रहे हैं, पस्ली अगर टेढ़ी न हो बल्कि सीधी हो जाए तो वह पस्ली कहलाने के लायक़ नहीं। पस्ली का हुस्न और सेहत यह है कि वह टेढ़ी हो, अगर वह पस्ली सीधी हो जाए तो वह बीमार है।

टेढ़ा होना एक ज़ायद चीज़ है

हक़ीक़त में इस हदीस के ज़रिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह बतलाना चाह रहे हैं कि टेढ़ा होना और सीधा होना एक इज़ाफ़ी (ज़ायद) चीज़ है। जिसका मतलब यह है कि एक चीज़ को एक निगाह से देखो तो वह सीधी है और दूसरी निगाह से देखो तो वह टेढ़ी है। देखिए! सामने मस्जिद के बाहर जो सड़क है, अगर मस्जिद के अन्दर से देखो तो यह नज़र आयेगा कि यह सड़क टेढ़ी है, इसलिए कि मस्जिद के एतिबार से सड़क टेढ़ी है। और अगर सड़क पर खड़े होकर देखो तो यह नज़र आयेगा कि सड़क सीधी है और मस्जिद टेढ़ी है, हालांकि न सड़क टेढ़ी है और न मस्जिद टेढ़ी है। इसलिए कि मस्जिद के लिए यह ज़रूरी था कि वह क़िब्ले के रुख़ पर हो। इसलिए किसी चीज़ का सीधा और टेढ़ा होना इज़ाफ़ी सिफ़त है। एक चीज़ एक लिहाज़ से टेढ़ी है और दूसरे लिहाज़ से सीधी है।

औरत का टेढ़ापन कुदरती है

बहर हाल! इस हदीस के ज़रिए यह बताना मक़सूद है कि चूंकि तुम्हारी तबीयत औरत की तबीयत से अलग है। इसलिए तुम्हारे लिहाज़ से वह टेढ़ी है, लेकिन हक़ीक़त में वह टेढ़ापन उसकी फ़ितरत का हिस्सा है। जिस तरह पस्ली की फ़ितरत का हिस्सा यह है कि वह टेढ़ी हो। अगर पसली सीधी हो जाए तो उसको "ऐब" कहा जायेगा और डॉक्टर उसको दोबारा टेढ़ी करने की कोशिश करेगा, इसलिए कि उसकी फ़ितरत के अन्दर टेढ़ापन मौजूद है। इसलिए इस हदीस के ज़रिए औरत की बुराई बयान नहीं की जा रही है, बल्कि यह कहा जा रहा है कि चूंकि औरत की तबीयत तुम्हारी तबीयत के लिहाज़ से अलग है, इसलिए तुम्हें टेढ़ी मालूम होती है। लिहाज़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्ल. ने फ़रमाया कि उसको सीधा करने की फ़िक्र मत करना, क्योंकि उसको सीधा करना ऐसा ही होगा जैसे पस्ली को सीधा करना, और अगर तुम उसको सीधा करने की कोशिश करोगे तो उसको तोड़ डालोगे। और अगर तुम उसको उसकी हालत पर छोड़ दोगे तो उसके टेढ़ा होने के बावजूद तुम उस से फ़ायदा उठाओगे।

बुढ़िया और शिकारी परिन्दे का वाक़िआ

अरबी सिखाने की एक किताब 'मुफ़ीदुत्तालिबीन' में एक क़िस्सा लिखा है कि बादशाह का एक शिकारी परिन्दा उड़कर एक बुढ़िया के पास पहुंच गया, उस बुढ़िया ने उसको पकड़ कर उसको पालना शुरू किया। जब बुढ़िया ने

यह देखा कि उसकी चोंच टेढ़ी है और उसके पन्जे टेढ़े हैं, तो बुढ़िया को उस पर तरस आया कि यह बेचारा परिन्दा है, अल्लाह की मख़्लूक़ है, जब इसको खाने की ज़रूरत होती होगी तो यह कैसे खाता होगा, क्योंकि इसकी चोंच टेढ़ी है, और जब इसको चलने की ज़रूरत होती होगी तो यह चलता कैसे होगा, इसलिए कि इसके पन्जे टेढ़े हैं। उस बुढ़िया ने सोचा कि मैं इसकी यह मुश्किल आसान करूं। चुनांचे क़ैंची से पहले उसकी चोंच काटी और फिर उसके पन्जे काटे, जिसके नतीजे में उसका ख़ून बहने लगा और वह ज़ख़्मी हो गया। जितना पहले चल सकता था, उस से भी वह माज़ूर हो गया। यह वाक़िआ नादान की मुहब्बत की मिसाल में पेश किया जाता है, क्योंकि उस बुढ़िया ने उस परिन्दे के साथ मुहब्बत तो की, लेकिन नादानी और बे-अक़्ली के साथ मुहब्बत की, और यह न सोचा कि इसकी चोंच और इसके पन्जों का टेढ़ा होना इसकी फ़ितरत का हिस्सा है और इसका हुस्न इसके टेढ़ेपन में है। अगर इसके ये अंग टेढ़े न हों तो यह "उक़ाब" यानी शिकारी परिन्दा कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं।

कभी सुकून नसीब नहीं होगा

बहर हाल! जब भी दो आदमियों के दरमियान ताल्लुक़ात होंगे, चाहे वे मर्द हों, या औरतें हों, उस ताल्लुक़ के नतीजे में तबीयतों का इख़्तिलाफ़ यानी अलग अलग होना ज़रूर ज़ाहिर होगा। और उस इख़्तिलाफ़ के नतीजे में एक को दूसरे से तकलीफ़ भी पहुंचेगी। अब दो ही रास्ते हैं: एक रास्ता तो यह है कि जब भी दूसरे से तुम्हें कोई

तक्लीफ़ पहुंचे तो उस पर उस से लड़ो, और उस तक्लीफ़ को आपस में नाराज़गी और झगड़े का सबब बनाओ। अगर तुम यह रास्ता इख़्तियार करोगे तो तुम्हें कभी भी चैन और सुकून नसीब नहीं होगा।

दूसरों की तक्लीफ़ों पर सब्र

दूसरा रास्ता यह है कि जब दूसरे से तक्लीफ़ पहुंचे तो यह सोच लो कि जब तबीयतें मुख़्तलिफ़ (यानी अलग अलग) हैं तो तक्लीफ़ तो पहुंचनी ही है, और ज़िन्दगी भी साथ गुज़ारनी है, और यह ज़िन्दगी हमेशा की ज़िन्दगी तो है नहीं कि हमेशा हमेशा यहीं रहना हो, बल्कि चन्द दिनों के लिए इस दुनिया में आए हैं, न जाने किस वक़्त यहां से रवाना हो जाएं। इसलिए इस चन्द दिन की ज़िन्दगी में अगर दूसरे से तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंच रही है तो उस पर अल्लाह के लिए सब्र कर लो। यह ठीक है कि जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचेगी तो उस वक़्त तुम्हारे दिल में इश्तिआल (उत्तेजना) पैदा होगा, गुस्सा आयेगा और दिल यह चाहेगा कि मैं उसका मुंह नोच डालूं, उसको बुरा भला कहूं, उसकी ग़ीबत करूं, उसकी बुराई बयान करूं, उसको बदनाम करूं, इसलिए कि उसने तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाई है।

तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल होगा?

लेकिन यह सोचो कि अगर तुमने ये काम कर लिए तो तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल हुआ? हां यह हुआ कि समाज में लड़ाई झगड़ा फैला और ज़रा सा दिल का जज़्बा ठन्डा हो

गया। लेकिन हक़ीक़त में दिल का जज़्बा ठन्डा नहीं होता, क्योंकि जब एक बार दुश्मनी की आग भड़क जाती है तो फिर वह ठन्डी नहीं होती बल्कि और बढ़ती रहती है। चलिए मान लीजिए कि यह थोड़ा सा फ़ायदा हासिल हो गया, लेकिन उस बदला लेने में तुमने जो ज़्यादती की होगी उसका तुम्हें क़ियामत के दिन जो हिसाब देना होगा और उस पर तुम्हें जो अ़ज़ाब झेलना होगा वह अ़ज़ाब इस से कहीं ज़्यादा है कि दुनिया में उसकी तक्लीफ़ पर सब्र कर लेते और यह सोचते कि चलो उसने अगरचे मेरे साथ ज़्यादती की है, लेकिन मैं इस पर सब्र करता हूं और अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूं।

सब्र करने का अज्र

अगर सब्र कर लिया तो उस पर अल्लाह तआ़ला का वायदा है:

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ (سورۃ الزمر: آیت ۱۰)

यानी अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को बे हिसाब अज्र अ़ता फ़रमाते हैं।

कोई गिनती ही नहीं, अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो गिनती बयान करते, लेकिन हम लोग गिनती से आ़जिज़ हैं, हमारे पास तो गिनती के लिए चन्द अ़दद (अंक) हैं, जैसे हज़ार, लाख, करोड़, अरब, खरब, पदम, बस आगे कोई और लफ़्ज़ नहीं है। अल्लाह तआ़ला चाहते तो सब्र का अज्र देने के लिए कोई लफ़्ज़ पैदा फ़रमा देते, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने फ़रमा दिया कि सब्र करने वाले को अज्र देने के

लिए कोई गिनती ही नहीं।

जैसे अगर किसी ने तुम्हें एक मुक्का मार दिया, अब अगर बदले में तुमने भी उसको एक मुक्का मार दिया, तो तुम्हारे लिए यह बदला लेना जायज़ था, लेकिन उस बदला लेने के नतीजे में तुम्हें क्या मिला? कुछ नहीं। और अगर तुमने सब्र कर लिया और बदला न लिया तो उस पर अल्लाह तआ़ला का वायदा है कि तुम्हें इतना अज्र दूंगा कि तुम शुमार भी नहीं कर सकोगे। इसलिए सब्र पर मिलने वाले इस अज्र व सवाब को सोच कर ग़ुस्सा पी जाओ और बदला न लो।

बदला लेने से क्या फ़ायदा?

और अगर कोई दूसरा शख़्स तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचा रहा है तो शरीअ़त ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है कि उस तक्लीफ़ को जिस हद तक रोकना तुम्हारे लिए मुम्किन है उस हद तक उसका रास्ता बन्द करने की कोशिश कर लो, लेकिन अपने क़ीमती समय को उस तक्लीफ़ देने वाले के पीछे पड़कर ख़र्च करना, वक़्त और समय की इस से बड़ी बर्बादी कोई नहीं। जैसे आपने किसी से सुना कि फ़लां आदमी मज्लिस के अन्दर आपकी बुराई कर रहा था, अब अगर तुम्हें पता ही न चलता कि फ़लां आदमी बुराई कर रहा था, फिर तो कुछ भी न होता, लेकिन दूसरे शख़्स ने तुम्हें बता दिया, इसके नतीजे में तुम्हारे दिल पर चोट लग गई, अब एक रास्ता यह है कि तुम इसकी खोज में लग जाओ कि उस मज्लिस में कौन कौन मौजूद थे, और फिर

उनमें से हर एक के पास जाकर तफ़्तीश करो कि फ़लां ने मेरी क्या बुराई बयान की? और हर एक से गवाही लेते फिरो, और अपना सारा वक़्त इस काम में ख़र्च कर दो, तो इसका हासिल क्या निकला? कुछ भी नहीं। इसके उलट अगर तुमने यह सोचा कि अगर फ़लां शख़्स ने मेरी बुराई बयान की थी तो वह जाने, उसका अल्लाह जाने, उसके अच्छा कहने से न मैं अच्छा हो सकता हूं और उसके बुरा कहने से न मैं बुरा हो सकता हूं, मेरा मामला तो मेरे अल्लाह के साथ है। अगर मेरा मामला मेरे अल्लाह के साथ दुरुस्त है तो फिर दुनिया मुझे कुछ भी कहती रहे, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं।

ख़लक़े पसे ऊ दिवाना व दिवाना बकारे

यानी सारी मख़्लूक़ अगर मेरी बुराई करती है तो करती रहे। मेरा मामला तो अल्लाह तआ़ला के साथ है।

अगर यह सोच कर तुम अपने काम में लग जाओ तो यह "सब्र अ़लल् अज़ा" (यानी तक्लीफ़ पर सब्र करना) है जिस पर अल्लाह तआ़ला बे हिसाब अज्र अ़ता फ़रमायेंगे।

बराबर का बदला लो

और अगर तुमने दिल की आग ठन्डी करने के लिए बदला लेने का ही इरादा कर लिया कि मैं तो बदला ज़रूर लूंगा, तो बदला लेने के लिए वह तराज़ू और पैमाना कहां से लाओगे जिस से यह पता चले कि मैंने भी उतनी ही तक्लीफ़ पहुंचाई है जितनी तक्लीफ़ उसने पहुंचाई थी?

अगर तुम तक्लीफ़ पहुंचाने में एक इंच और एक तोला आगे बढ़ गए तो उस पर आख़िरत में जो पकड़ होगी उसका हिसाब कौन करेगा? इसलिए बदला लेने का आपको हक़ हासिल है, मगर यह हक़ बड़ा ख़तरनाक है। लेकिन अगर तुमने माफ़ कर दिया तो उस पर बे हिसाब अज्र व सवाब के हक़दार बन जाओगे। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ (سورة النحل: آيت ١٢٦)

यानी अगर सब्र करो तो सब्र करना हद दर्जा बेहतर है, सब्र करने वालों के लिए।

ख़ुलासा

बहर हाल! जब लोगों के साथ रहोगे, उनके साथ ताल्लुक़ात रखोगे, और उनके साथ मामलात होंगे तो फिर तक्लीफ़ें भी पहुंचेंगी। लेकिन इसका नुस्ख़ा नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बता दिया कि उन तक्लीफ़ों पर सब्र करे, और हर शख़्स अपने दिल पर हाथ रख कर सोचे कि अगर हर इन्सान इस नुस्ख़े पर अमल कर ले और यह सोच ले कि दूसरे की तरफ़ से जो तबीयत के ख़िलाफ़ चीज़ें पेश आयेंगी, उस पर जहां तक हो सकेगा सब्र करूंगा, तो दुनिया से तमाम झगड़े और फ़साद ख़त्म हो जाएं। अल्लाह तआला मुझे भी और आपको भी इस बेहतरीन नुस्ख़े पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

واٰخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین

ख़ानदानी झगड़ों
के असबाब और उनका हल
3
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(तीसरा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (तीसरा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(तीसरा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

عن ابی موسیٰ رضی اللّٰہ تعالیٰ عنه عن النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم قال: ما أحد اصبرعلی اذیً سمعه من اللّٰہ یدعون له الولد ثم یعافیهم ویرزقهم۔ (بخاری شریف)

दूसरों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र

पिछले इतवार को एक हदीस पढ़ी थी, जिसकी तशरीह में मैंने अ़र्ज़ किया था कि मुसलमानों के दरमियान अपस में झगड़े और इख़्तिलाफ़ात और बुग़्ज़ व दुश्मनी यह एक बहुत बड़ी दीनी और समाजी बीमारी है, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस बीमारी से बचाने के

लिए और मुसलमानों के दरमियान मुहब्बत और भाईचारा क़ायम करने के लिए बहुत सी हिदायतें अ़ता फ़रमाई हैं, उन हिदायतों में से एक हिदायत पिछले बयान में अ़र्ज़ की थी कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स दूसरों के साथ मिलाजुला रहता है और फिर लोगों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करता है तो वह शख़्स उस से कहीं बेहतर है जो लोगों के साथ मेलजोल नहीं रखता और जिसके नतीजे में लोगों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करने की नौबत नहीं आती। इस से मालूम हुआ कि आपस के इख़्तिलाफ़ और नाचाक़ी का बहुत बड़ा सबब यह होता है कि दूसरों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र न किया जाए, साथ रहने के नतीजे में दूसरे से कभी न कभी कोई तक्लीफ़ ज़रूर पहुंचेगी, लेकिन उस तक्लीफ़ पर इन्सान को सब्र करना चाहिए।

सब से ज़्यादा सब्र करने वाली ज़ात

इसी हिदायत के तौर पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह हदीस इर्शाद फ़रमाई जो अभी मैंने आपके सामने तिलावत की, जिसका ख़ुलासा यह है कि हज़रत अबू मूसा अ़श्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस कायनात में कोई भी ज़ात दूसरे से पहुंचने वाली तक्लीफ़ पर इतना सब्र करने वाली नहीं जितनी अल्लाह तआ़ला की ज़ात सब्र करने वाली है। लोग अल्लाह तआ़ला को ऐसी बातें कहते हैं जो तक्लीफ़ पहुंचाने का

ज़रिया होती हैं। चुनांचे लोग अल्लाह तआला के लिए बेटा मानते हैं जैसे ईसाई कहते हैं कि हज़रत ईसा अ़लै. अल्लाह तआला के बेटे हैं। अल्लाह की पनाह। बाज़ यहूदियों ने हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा बना दिया। बाज़ मुश्रिकों ने फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियां क़रार दे दिया। बहुत से लोगों ने पत्थरों को, पेड़ों को, यहां तक कि जानवरों को, गाय बैल को, सांप बिच्छू को ख़ुदा मानना शुरू कर दिया। जिस ज़ात ने इन सब इन्सानों को पैदा किया और फ़रिश्तों को यह बता कर पैदा किया कि मैं इन्सान को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बना रहा हूं, वही इन्सान अल्लाह तआला के साथ दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं।

अल्लाह तआला की बुर्दबारी देखिए

ये इन्सान अल्लाह तआला को तक्लीफ़ पहुंचाने वाले काम कर रहे हैं, लेकिन अल्लाह तआला की बुर्दबारी देखिए कि ये सब बातें सुनते हैं, इसके बावजूद इन इन्सानों को सुकून व आफ़ियत भी दे रखी है और उनको रिज़्क़ भी दे रखा है। इस कायनात में आप देखें तो यह नज़र आयेगा कि काफ़िरों और मुश्रिकों की तादाद ज़्यादा है, और हमेशा इनकी तादाद ज़्यादा रही है, और कुरआने करीम ने भी कह दिया कि:

وَاِنۡ تُطِعۡ اَكۡثَرَ مَنۡ فِى الۡاَرۡضِ يُضِلُّوۡكَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ (الانعام:آیت۱۱۶)

यानी अगर आप ज़मीन में रहने वालों की अक्सरियत के पीछे चलेंगे तो वह आपको अल्लाह के रास्ते से भटका

देगी।

इसलिए कि इन्सानों की अक्सरियत तो कुफ़्र में शिर्क में और बुराई में मुब्तला है।

लोकतंत्र का फ़ल्सफ़ा मानने का नतीजा

आजकल दुनिया में "जम्हूरियत" (यानी लोकतंत्र) का शोर मचाया जा रहा है, और यह कहा जा रहा है कि अक्सरियत जो बात कह दे वह हक़ है। अगर यह उसूल तस्लीम कर लिया जाए तो इसका मतलब यह निकलेगा कि "कुफ़्र" बरहक़ है, और "इस्लाम" बातिल है। अल्लाह अपनी पनाह में रखे। इसलिए कि रूए ज़मीन में बसने वाले इन्सानों की अक्सरियत या तो कुफ़्र में मुब्तला है या शिर्क में मुब्तला है, और जो लोग मुसलमान कहलाते हैं, अल्लाह तआला के एक होने के क़ायल हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रसूल होने पर ईमान रखते हैं, आख़िरत पर ईमान रखते हैं, उनमें भी आप देखें तो यह नज़र आयेगा कि ठीक ठीक शरीअ़त के दायरे पर चलने वालों की तादाद बहुत थोड़ी है। और बेफ़िक्र, बेपरवाह और गुनाहों व बुराईयों के अन्दर मुब्तला और नाफ़रमानियों में गिरफ़्तार इन्सानों की तादाद बहुत ज़्यादा है।

काफ़िरों के साथ अच्छा सुलूक

इस रूए ज़मीन पर कुफ़्र भी हो रहा है, शिर्क भी हो रहा है, नाफ़रमानी भी हो रही है, गुनाह और बुराईयां भी हो रही हैं, लेकिन इन सब चीज़ों को देखने के बावजूद उन्हीं

लोगों को जो अल्लाह तआ़ला के वजूद तक का इन्कार कर रहे हैं, अल्लाह तआ़ला उनको रिज़्क़ अ़ता फ़रमा रहे हैं, उनको आ़फ़ियत दे रखी है और उन पर दुनिया में नेमतों की बारिश हो रही है। यह है अल्लाह तआ़ला का हिल्म और बुर्दबारी, अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कौन इन तक्लीफ़ों पर सब्र करने वाला होगा। शैख़ सादी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

बर ख़्वाने यग़मा चे दुश्मन चे दोस्त

यानी अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया में रिज़्क़ का जो दस्तरख़्वान बिछाया हुआ है, उसमें दोस्त दुश्मन सब बराबर हैं, दोस्त को भी खिला रहे हैं, दुश्मन को भी खिला रहे हैं। बल्कि कभी कभी दुश्मन को ज़्यादा खिला रहे हैं। इस वक़्त आप काफ़िरों और मुश्रिकों को देखें तो यह नज़र आयेगा कि उनके पास दौलत के अंबार लगे हुए हैं, जब कि मुसलमानों पर कभी कभी फ़क़्र व फ़ाक़ा भी गुज़र जाता है। अल्लाह तआ़ला उन सब की बातों को सुनने के बावजूद उनके साथ बुर्दबारी का मामला फ़रमा रहे हैं, उनको आ़फ़ियत और रिज़्क़ अ़ता फ़रमा रहे हैं।

अल्लाह तआ़ला के अख़्लाक़ अपने अन्दर पैदा करो

बहर हाल! अल्लाह तआ़ला के इस हिल्म और बुर्दबारी को देखिए और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इर्शाद पर अ़मल करें कि आपने फ़रमाया:

تَخَلَّقُوا بِاَخلاقِ اللّٰہِ۔

ऐ इन्सानो! तुम अल्लाह तआ़ला के अख़्लाक़ हासिल करने की और उनको अपनाने की कोशिश करो, अगरचे सौ फ़ीसद तो हासिल नहीं हो सकते, लेकिन इस बात की कोशिश करो कि वे अख़्लाक़ तुम्हारे अन्दर भी आ जाएं। जब अल्लाह तआ़ला लोगों के तक्लीफ़ पहुंचाने पर इतना सब्र फ़रमा रहे हैं तो ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम भी लोगों के तक्लीफ़ पहुंचाने पर सब्र करो, और दूसरे से अगर तुम्हें तक्लीफ़ पहुंच रही है तो उसको बर्दाश्त करने की आ़दत डालो।

दुनिया में बदला न लो

अगर कोई यह सवाल करे कि अल्लाह तआ़ला दुनिया में सब्र फ़रमा रहे हैं और काफ़िरों और मुश्रिकों को आफ़ियत और रिज़्क़ दे रखा है। ये दुनिया में तरक़्क़ी कर रहे हैं, लेकिन जब आख़िरत में अल्लाह तआ़ला उनको पकड़ेंगे तो फिर छूट नहीं पायेंगे, और उनको ऐसा सख़्त अज़ाब देंगे कि ये उस से बच नहीं सकेंगे। इसका जवाब यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने उनके साथ दुनिया में सब्र का मामला फ़रमाया है तो तुम भी यह मामला कर लो कि दुनिया में जिस शख़्स से तुम्हें तक्लीफ़ पहुंच रही है, उस से कह दो कि मैं तुम से बदला नहीं लेता और मैंने तुम्हारा मामला अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया। आख़िरत में अल्लाह तआ़ला ख़ुद इन्साफ़ करा देंगे। इसलिए तुम अपना मामला अल्लाह के हवाले कर दो। इसलिए कि तुम दुनिया में उस तक्लीफ़ पर जो बदला लोगे

वह बदला उस इन्तिक़ाम के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखता जो आख़िरत में अल्लाह तआ़ला लेंगे। इसलिए अगर तुम्हें बदला लेने का शौक़ है तो फिर यहां पर बदला न लो बल्कि अल्लाह तआ़ला पर छोड़ दो।

माफ़ करना बेहतर है

तुम्हारे लिए बेहतर तो यह है कि माफ़ ही कर दो, इसलिए कि जब तुम माफ़ कर दोगे तो अल्लाह तआ़ला ख़ुद ज़िम्मेदारी लेंगे और तुम्हारी ज़रूरतें पूरी फ़रमायेंगे और तुम्हें जो तक्लीफ़ें पहुंची हैं वह ख़त्म फ़रमायेंगे। चुनांचे अल्लाह के बन्दे माफ़ ही फ़रमा देते हैं। हमने अपने बुज़ुर्गों से हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का वाक़िआ़ सुना जो हमारे दादा पीर हैं और हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के शैख़ थे। उनकी आ़दत यह थी कि जब कोई शख़्स उनको तक्लीफ़ पहुंचाता तो फ़रमाते कि या अल्लाह! मैंने उसको माफ़ कर दिया, यहां तक कि अगर कोई चोर माल चोरी करके ले जाता तो आप फ़रमाते कि या अल्लाह! मैंने यह माल उसके लिए हलाल कर दिया, मैं उस से बदला लेकर और उसको अ़ज़ाब दिलवा कर क्या करूंगा। हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहते। जब बाज़ार में कोई चीज़ ख़रीदने जाते तो पैसों की थैली हाथ में होती, सामान ख़रीदने के बाद वह थैली दुकानदार को पकड़ा देते कि इस थैली में से इसकी क़ीमत ले ले, ख़ुद न गिनते। इसलिए कि जितना वक़्त निकाल कर गिनने में लगेगा

उतना वक़्त मैं ज़िक्र में मश्ग़ूल रहूंगा।

हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का एक वाक़िआ

एक बार बाज़ार से गुज़र रहे थे, हाथ में पैसों की थैली थी, एक चोर को पता चल गया कि मयां साहिब के पास पैसों की थैली है, वह चोर पीछे से आया और थैली छीन कर भाग गया। मियां जी ने मुड़कर भी नहीं देखा कि कौन थैली छीन कर ले गाया। यह सोचा कि कौन उसके पीछे भागे और तहक़ीक़ करे कि कौन ले गया। बस ज़िक्र करते हुए अपने घर की तरफ़ चल दिए और दिल में यह नियत कर ली कि ऐ अल्लाह! जिस चोर ने ये पैसे लिए हैं, वे पैसे मैंने उसको माफ़ कर दिए और उसके लिए वे पैसे हिबा कर दिए। अब वह चोर चोरी करके मुसीबत में फंस गया, अपने घर की तरफ़ जाना चाहता है लेकिन उन गलियों से निकलने का रास्ता नहीं पाता। एक गली से दूसरी गली में, दूसरी से तीसरी गली में आ जाता, वे गलियां उसके लिए भूल भुलैयां बन गईं। जहां से चलता दोबारा वहां पहुंच जाता, निकलने का रास्ता ही उसको न मिलता। जब कई घन्टे गुज़र गए और चलते चलते थक गया तो उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि यह बड़े मियां की कोई करामत मालूम होती है, मैंने उनके पैसे छीने हैं तो अल्लाह तआ़ला ने मेरा रास्ता बन्द कर दिया, अब क्या करूं? उसने सोचा कि अब यही रास्ता है कि उन बुज़ुर्ग के पास दोबारा वापस जाऊं और उनसे दरख़्वास्त करूं कि ख़ुदा के लिए

ये पैसे ले लो और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करके मेरी जान छुड़ाओ। चुनांचे मियां साहिब के घर के दरवाज़े पर पहुंचा और दस्तक दी, मियां साहिब ने पूछा कि कौन है? उसने कहा कि हुज़ूर! मैंने आपके पैसे छीन लिए थे, मुझ से ग़लती हो गई थी, ख़ुदा के लिए ये पैसे ले लो। मियां साहिब ने फ़रमाया कि मैंने ये पैसे तुम्हारे लिए हलाल कर दिए और तुम्हें हिबा कर चुका, अब ये पैसे मेरे नहीं रहे, मैंने तुम्हें दे दिए, अब मैं वापस नहीं ले सकता। उस चोर ने कहा कि ख़ुदा के लिए ये पैसे वापस ले लो। अब दोनों के दरमियान बहस हो रही है, चोर कहता है कि ख़ुदा के लिए पैसे ले लो। वह कहते हैं कि मैं नहीं लेता, मैं तो हिबा कर चुका। आख़िरकार मियां जी ने पूछा कि क्यों वापस करना चाहते हो? उसने कहा हज़रत! बात यह है कि मैं अपने घर जाना चाहता हूं मगर रास्ता नहीं मिल रहा है, मैं कई घन्टों से इन गलियों में भटक रहा हूं। मियां जी ने फ़रमाया कि अच्छा मैं दुआ़ कर देता हूं, तुम्हें रास्ता मिल जायेगा। चुनांचे उन्होंने दुआ़ की और उसको रास्ता मिल गया।

किसी की तरफ़ से "बुग़्ज़" न रखो

बहर हाल! इन अल्लाह वालों को अगर कोई तक्लीफ़ पहुंचाये भी तो ये अल्लाह वाले उसके साथ भी "बुग़्ज़" नहीं रखते, बुग़्ज़ उनकी गली में गुज़रा ही नहीं।

कुफ़्र अस्त दर तरीक़ते मा कीना दाश्तन
आईने मा अस्त सीना चूं आईना दाश्तन

हमारी तरीक़त में किसी शख़्स से "बुग़्ज़" रखना कुफ़्र की तरह है। हमारा क़ानून तो यह है कि हमारा दिल आईने की तरह होता है, उस पर किसी के बुग़्ज़, बैर और दुश्मनी का कोई दाग़ नहीं है।

बदला अल्लाह पर छोड़ दो

इसलिए जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाए उसको अल्लाह के लिए माफ़ कर दो, और अगर बदला लेना ही है तो उस बदले को अल्लाह पर छोड़ दो। इसलिए कि अगर ख़ुद बदला लोगे तो उस से लड़ाई झगड़े पैदा होने का अन्देशा है, क्योंकि यह मालूम नहीं होगा कि जितना तुम्हें बदला लेने का हक़ था उतना ही बदला लिया या उस से ज़्यादा बदला ले लिया। इसलिए अगर ज़्यादा बदला ले लिया तो क़ियामत के दिन तुम्हारी गर्दन पकड़ी जायेगी, इसलिए बदला अल्लाह पर छोड़ दो।

हर इन्सान अपने फ़राइज़ को अदा करे

लेकिन यहां एक बात समझ लेनी चाहिए, वह यह कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमेशा हर इन्सान को उसके फ़राइज़ की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं कि तुम्हारा फ़रीज़ा यह है, तुम्हारा यह काम होना चाहिए, तुम्हारा काम का तरीक़ा यह होना चाहिए। इसलिए जिस शख़्स को तक्लीफ़ पहुंची है उसको तो आप सब्र करने की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं कि तुम सब्र करो और माफ़ कर दो, बदला न लो, उस से बुग़्ज़ और दुश्मनी न रखो,

और उस तक्लीफ़ को झगड़े और फूट का ज़रिया न बनाओ। लेकिन दूसरी तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तक्लीफ़ पहुंचाने वाले को दूसरे अन्दाज़ से ख़िताब फ़रमाया ताकि लोग यह न समझें कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस शख़्स को तक्लीफ़ पहुंची है उसको सब्र की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं तो फिर तक्लीफ़ पहुंचाने में कोई हर्ज नहीं, ऐसा नहीं।

दूसरों को तक्लीफ़ मत दो

बल्कि तक्लीफ़ पहुंचाने वाले के बारे में अल्लाह तआ़ला का तो यह फ़रमान है कि किसी भी इन्सान को अगर तुम्हारी ज़ात से कोई तक्लीफ़ पहुंची तो मैं उस वक़्त तक माफ़ नहीं करूंगा जब तक वह बन्दा माफ़ न कर दे, या तुम उसके हक़ की तलाफ़ी न कर दो। इसलिए किसी भी इन्सान को तक्लीफ़ पहुंचाने से बचो, किसी भी क़ीमत पर ऐसा इक़दाम न करो जिस से दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचे।

चीफ़ जस्टिस का रोज़ाना दो सौ रक्अ़त नफ़िल पढ़ना

हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो इमाम अबू हनीफ़ा रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के शागिर्द हैं, लेकिन अल्लाह के वली होने की हैसियत से मश्हूर नहीं हैं, लेकिन उनके वाक़िआत में लिखा है कि जब "क़ाज़ियुल क़ुज़ात" (चीफ़ जस्टिस) बन गए, तो उसके बाद अपनी तमाम मश्ग़ूलियत के बावजूद दिन भर में दो सौ रक्अ़त नफ़िल

पढ़ा करते थे। जब उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो किसी ने देखा कि उनके चेहरे पर फ़िक्र और चिन्ता के आसार हैं। उनसे पूछा कि आपको किस चीज़ की फ़िक्र और चिन्ता है? फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हाज़िर होने का वक़्त क़रीब आ रहा है, अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़िर होना है, वहां पर अपनी ज़िन्दगी के आमाल का क्या जवाब दूंगा। और तमाम वाकिआत के बारे में मुझे याद है कि मैं उनसे तौबा कर चुका हूं और इस्तिग़फ़ार कर चुका हूं। अल्लाह तआ़ला की ज़ात से उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमा देंगे।

यह ना इन्साफ़ी मुझ से हो गई

लेकिन एक वाक़िआ ऐसा याद आ रहा है जिसकी वजह से मुझे बहुत सख़्त तश्वीश है। वह वाक़िआ यह है कि जिस वक़्त "क़ाज़ी" के ओ़हदे पर था, और लोगों के दरमियान फ़ैसले किया करता था, उस दौरान एक बार एक मुसलमान और एक ग़ैर मुस्लिम का मुक़द्दमा मेरे पास आया, मैंने मुक़द्दमा सुनते वक़्त मुसलमान को तो अच्छी जगह पर बिठाया और ग़ैर मुस्लिम को उस से कमतर जगह पर बिठाया, हालांकि शरीअ़त का हुक्म यह है कि जब तुम्हारे पास मुक़द्दमे के दो फ़रीक़ आएं तो उनके दरमियान मज्लिस भी बराबर होनी चाहिए। जिस जगह पर मुद्दई (दावा दायर करने वाले) को बिठाया है उसी जगह पर 'मुद्दआ़ अ़लैहि' (जिस पर दावा किया गया है) को भी बिठाओ। ऐसा न हो कि दोनों के दरमियान बिठाने के

अन्दर फ़र्क़ करके ना इन्साफ़ी की जाए। मुझ से यह ना इन्साफ़ी हो गई, अगरचे मैंने फ़ैसला तो हक़ के मुताबिक़ किया, अल्हमदु लिल्लाह, लेकिन बिठाने की तरतीब में शरीअ़त का जो हुक्म है उसमें रियायत न रह सकी। मुझे इसकी तश्वीश हो रही है कि अगर उसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने मुझ से पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा, क्योंकि यह ऐसी चीज़ है जो कि तौबा से माफ़ नहीं हो सकती जब तक कि हक़ वाला माफ़ न करे।

असली मुसलमान कौन?

इसलिए सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं, ग़ैर मुस्लिमों के भी शरीअ़त ने हुकूक़ बताए हैं, यहां तक कि जानवरों के भी हुकूक़ शरीअ़त ने बयान किए हैं। हदीसों में कई वाक़िए आए हैं जिस से मालूम होता है कि जानवरों के साथ ज़्यादती करने के नतीजे में लोगों पर कैसे कैसे अ़ज़ाब आए। बहर हाल! एक तरफ़ तो यह कहा जा रहा है कि ख़बरदार! अपनी एक एक हर्कत में और अपने एक एक अन्दाज़ व अदा में इस बात का ख़्याल रखो कि तुम्हारी ज़ात से दूसरे को मामूली सी भी तक्लीफ़ न पहुंचे। एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है:

المسلم من سلم المسلمون من لسانه و يده (بخاری شریف)

"मुसलमान वही है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें"। उसकी ज़ात से दूसरे को तक्लीफ़ न पहुंचे।

यह इतनी ख़तरनाक चीज़ है कि इसकी माफ़ी का कोई रास्ता नहीं, सिवाए इसके कि हक़ वाला माफ़ करे। इसलिए एक तरफ़ तो हर एक इन्सान को यह तंबीह कर दी कि तुम्हारी ज़ात से दूसरे को तक्लीफ़ नहीं पहुंचनी चाहिए, और दूसरी तरफ़ यह कह दिया कि अगर तुम्हें दूसरे से तक्लीफ़ पहुंचे तो उस पर सब्र करो और उसको माफ़ कर दो। उसकी वजह से उस से बुग़्ज़ और दुश्मनी न रखो, और उसको फूट और बिखराव का ज़रिया न बनाओ। यह वह तालीम है जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तल्क़ीन फ़रमाई।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरबियत का अन्दाज़

हदीस शरीफ़ में आता है कि जिस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दस हज़ार सहाबा–ए–किराम के साथ मक्का मुकर्रमा फ़तह फ़रमा लिया, उन सहाबा में मुहाजिरीन भी थे और अन्सार भी थे। फिर मक्का के फ़तह होने के बाद हुनैन की जंग पेश आई, वहां भी अल्लाह तआ़ला ने आख़िरकार फ़तह अ़ता फ़रमाई। इस पूरे सफ़र में बड़ी मिक़दार (मात्रा) में माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ में आया, उस ज़माने में गाय, बैल, बकरी की शक्ल में माल होता था। चुनांचे जिसके पास जितने ज़्यादा जानवर होते उतना ही बड़ा मालदार समझा जाता था। तो माले गनीमत के अन्दर बड़ी मिक़दार में

जानवर मुसलमानों के हाथ आए।

नये मुसलमानों के दरमियान ग़नीमत के माल की तक़सीम

जब माले ग़नीमत की तक़सीम का वक़्त आया तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह महसूस फ़रमाया कि वे लोग जो मक्का मुकर्रमा के आस पास रहने वाले हैं, ये अभी ताज़ा मुसलमान हुए हैं, अभी इस्लाम उनके दिलों के अन्दर पूरी तरह जमा नहीं, और उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं कि अभी मुसलमान भी नहीं हुए बल्कि इस्लाम की तरफ़ थोड़ा सा झुकाव हुआ है, इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह महसूस किया कि अगर उनके साथ अच्छा सुलूक किया जायेगा तो जो लोग ताज़ा ताज़ा मुसलमान हुए हैं वे इस्लाम पर पुख़्ता हो जायेंगे, और जो लोग इस्लाम की तरफ़ माईल हुए हैं वे भी उसके नतीजे में मुसलमान हो जायेंगे। फिर ये लोग मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िश नहीं करेंगे, इसलिए जितना माले ग़नीमत आया था हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह सारा का सारा माल वहां के लोगों के दरमियान तक़सीम फ़रमा दिया।

मुनाफ़िक़ों का काम लड़ाई कराना

उस वक़्त कोई मुनाफ़िक़ अन्सार सहाबा के पास चला गया और उनसे जाकर कहा कि देखो तुम्हारे साथ कैसा सुलूक हो रहा है, लड़ने के लिए मदीना मुनव्वरा से तुम

चलकर आए, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का साथ तुमने दिया, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जिहाद करके तुमने अपनी जानें दीं, लेकिन माले ग़नीमत उन लोगों में तक़सीम हो गया जो अभी अभी मुसलमान हुए हैं, और जिनके ख़िलाफ़ तुम्हारी तलवारें चल रही थीं, और जिनके ख़ून से तुम्हारी तलवारें अब भी भरी हुई हैं, और तुम्हें माले ग़नीमत में से कुछ न मिला। चूंकि मुनाफ़िक़ लोग हर जगह होते थे, उनमें से किसी ने सहाबा के दरमियान लड़ाई कराने के लिए यह बात छेड़ी थी। अब अन्सार सहाबा में जो बड़ी उम्र के और तजुर्बेक़ार हज़रात थे, उनके दिलों में कोई ख़्याल पैदा नहीं हुआ, वे जानते थे कि इस माल व दौलत की हक़ीक़त क्या है?

लेकिन अन्सार सहाबा में जो नौजवान थे, उनके दिल में यह ख़्याल पैदा होने लगा कि यह अ़जीब मामला हुआ कि सारा माले ग़नीमत उन्हीं में तक़सीम हो गया और हम लोग जो जिहाद में शरीक थे, हमें कुछ न मिला।

आपका हकीमाना ख़िताब

हुज़ूरे अक़्दस नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह इत्तिला मिली कि बाज़ अन्सार सहाबा को यह ख़्याल हो रहा है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐलान फ़रमाया कि तमाम अन्सार सहाबा को एक जगह जमा किया जाए। जब सब जमा हो गए तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु

अ़न्हुम से ख़िताब करते हुए फ़रमायाः

ऐ गिरोहे अन्सार! तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने ईमान की दौलत अ़ता फ़रमाई, तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने नबी की मेज़बानी का शर्फ़ अ़ता फ़रमाया, और मैंने यह ग़नीमत का माल उन लोगों में बांट दिया जो यहां के रहने वाले हैं ताकि ये ईमान पर पुख़्ता और मज़बूत हो जाएं, और कितनी बार ऐसा होता है कि मैं जिसको माले ग़नीमत नहीं देता हूं वह ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ (यानी सम्मानित) और महबूब होता है उसके मुक़ाबले में जिसको मैं माले ग़नीमत देता हूं। लेकिन मैंने सुना है कि बाज़ लोगों के दिलों में इस क़िस्म का ख़्याल पैदा हुआ है। फिर फ़रमायाः ऐ गिरोहे अन्सार! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि जब ये लोग अपने घरों को वापस जायें तो उनके साथ गाय, बैल बकरियां हों, और जब तुम अपने घरों की तरफ़ वापस जाओ तो तुम्हारे साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हों, बताओ इनमें से कौन अफ़ज़ल है?

जिस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात इर्शाद फ़रमाई, उस वक़्त तमाम लोगों के दिलों में ठन्डक पड़ गई। अन्सारी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के रसूल! सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, हमारे लिए तो इस से बड़ा ऐज़ाज़ कोई नहीं है, यह बात सिर्फ़ चन्द नौजवानों ने कह दी थी वर्ना हमारे जो बड़े हैं उनमें से किसी के दिल में कोई ख़्याल पैदा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसा फ़ैसला

फ़रमाएं, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही का फ़ैसला बरहक़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़्यादा ख़ास कौन थे?

जब यह सारा क़िस्सा ख़त्म हो गया तो उसके बाद फिर अन्सारी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़िताब करते हुए फ़रमायाः

ऐ अन्सार ख़ूब सुन लो! तुम मेरे ख़ासुल ख़ास लोग होः

لَوْسَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا لَسَلَكْتُ شِعْبَ الْاَنْصَارِ.

अगर लोग एक रास्ते पर जाएं और अन्सार दूसरे रास्ते पर जाएं तो मैं अन्सार वाला रास्ता इख़्तियार करूंगा।

अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को सब्र करने की वसीयत

फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

ऐ अन्सार! अभी तक तो तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी नहीं हुई, और मुझे तुम्हारे साथ जो मुहब्बत और ताल्लुक़ है वह इन्शा अल्लाह बरक़रार रहेगा, लेकिन मैं तुम्हें पहले से बता देता हूं कि मेरे दुनिया से उठ जाने के बाद तुम्हें इस बात से वास्ता पेश आयेगा कि तुम्हारे मुक़ाबले में दूसरों को ज़्यादा तरजीह दी जायेगी। यानी जो अमीर और हाकिम लोग बाद में आने वाले हैं, वे तुम्हारे साथ इतना अच्छा सुलूक नहीं करेंगे, जितना अच्छा सुलूक मुहाजिरों और दूसरों के साथ करेंगे।

ऐ गिरोहे अन्सार! मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि अगर तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक हो तो:

فَاصْبِرُوْا حَتّٰى تَلْقَوْنِىْ عَلَى الْحَوْضِ۔

उस वक़्त तुम सब्र करना यहां तक कि हौज़े कौसर पर तुम मुझ से आ मिलो।

इस इर्शाद में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहले से यह बता दिया कि आज तो तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी नहीं हुई, लेकिन आगे तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी होगी और तुम्हें वसीयत करता हूं कि उस ना इन्साफ़ी के मौक़े पर सब्र करना।

अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का इस वसीयत पर अ़मल

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से यह नहीं फ़रमाया कि उस मौक़े पर अन्सार के हुकूक़ की सुरक्षा के लिए एक समिति बना लेना, फिर अपने हुकूक़ तलब करने के लिए झन्डा लेकर खड़े हो जाना और बग़ावत का झण्डा बुलन्द कर देना। बल्कि यह फ़रमाया कि उस वक़्त तुम सब्र करना यहां तक कि तुम मुझ से हौज़े कौसर पर आकर मिल जाओ। चुनांचे अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने भी हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस हुक्म पर ऐसा अ़मल करके दिखाया कि पूरी इस्लामी तारीख़ में अन्सार की तरफ़ से कोई लड़ाई और झगड़ा आपको नहीं

मिलेगा। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दरमियान इख़्तिलाफ़ात हुए और उसके नतीजे में जंगे जुमल और जंगे सिफ़्फ़ीन भी हुईं, लेकिन अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तरफ़ से अमीरों और हाकिमों के ख़िलाफ़ कोई बात पेश नहीं आई।

अन्सार के हुकूक़ का ख़्याल रखना

एक तरफ़ तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को यह वसीयत फ़रमाई, दूसरी तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात की बीमारी में जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में नमाज़ के लिए भी तशरीफ़ नहीं ला रहे थे, उस वक़्त लोगों को जो वसीयतें फ़रमाईं, उन वसीयतों में एक यह थी कि ये अन्सार सहाबा, इन्होंने मेरी मदद की है और इन्होंने क़दम क़दम पर ईमान का मुज़ाहरा किया है, इसलिए इनके हुकूक़ का ख़्याल रखना। ऐसा न हो कि इन अन्सार के दिल में ना इन्साफ़ी का ख़्याल पैदा हो जाए। इसलिए एक तरफ़ तो सहाबा–ए–किराम को आपने यह तल्क़ीन फ़रमाई कि इन अन्सार के हुकूक़ का ख़्याल रखना, और दूसरी तरफ़ अन्सार को यह तल्क़ीन की कि अगर कभी तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी हो तो सब्र का मामला करना।

हर शख़्स अपने हुकूक़ पूरे करे

इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की

तालीम और तल्क़ीन यह है कि हर शख़्स अपने फ़रीज़े को देखे कि मेरे ज़िम्मे क्या फ़रीज़ा आयद होता है? मुझ से क्या मुतालबा है? और मैं उस फ़रीज़े को और उस मुतालबे को पूरा कर रहा हूं या नहीं? और जब हर इन्सान को यह धुन लग जाती है कि मैं अपना फ़रीज़ा सही तौर पर अदा करूं और मेरे ज़िम्मे अल्लाह तआला की तरफ़ से जो मुतालबा है वह पूरा करूं तो उस सूरत में सब के हुकूक़ अदा हो जाते हैं।

आज हर शख़्स अपने हुकूक़ का मुतालबा कर रहा है

आज दुनिया में उल्टी गंगा बह रही है। और आज यह सबक़ क़ौम को पढ़ाया जा रहा है कि हर शख़्स अपने हुकूक़ का मुतालबा करने के लिए झण्डा लेकर खड़ा हो जाए कि मुझे मेरे हुकूक़ मिलने चाहिएं। उसके नतीजे में वह इस बात से बेपरवाह है कि मेरे ज़िम्मे क्या फ़राइज़ और हुकूक़ आयद होते हैं? मुझ से क्या मुतालबे हैं? मज़दूर यह नारा लगा रहा है कि मेरे हुकूक़ मुझे मिलने चाहिएं। काम पर लगाने वाला कह रहा है कि मुझे मेरे हुकूक़ मिलने चाहिएं, लेकिन न मज़दूर को अपने फ़राइज़ की परवाह है और न काम पर लगाने वाले को अपने फ़राइज़ की परवाह है। आज मज़दूर को यह हदीस तो ख़ूब याद है कि मज़दूर की मज़दूरी पसीना सूखने से पहले अदा कर दो, लेकिन इसकी फ़िक्र नहीं कि जो काम उसने किया है उसमें पसीना

भी निकला या नहीं? उसको इसकी फ़िक्र नहीं कि मैंने जो काम किया है वह हक़ीक़त में इस लायक़ है कि उस पर मज़दूरी दी जाए?

हर इन्सान अपना जायज़ा ले

इसलिए हर इन्सान अपना जायज़ा ले, अपने गिरेबान में मुंह डाल कर देखे कि मैं जो काम कर रहा हूं, वह दुरुस्त है या नहीं? अगर एक शख़्स दफ़्तर में काम कर रहा है, उसको इसकी फ़िक्र तो होती है कि मेरी तन्ख़्वाह बढ़नी चाहिए, मेरा फ़लां ग्रेड होना चाहिए, मुझे इतनी तरक़्क़ियां मिलनी चाहिएं, लेकिन क्या उस मुलाज़िम ने कभी यह भी सोचा कि दफ़्तर के अन्दर जो फ़राइज़ मेरे ज़िम्मे आ़यद हैं, वे फ़राइज़ में ठीक तरीक़े पर अदा कर रहा हूं या नहीं? इसका नतीजा यह है कि आज लोगों के हुक़ूक़ ज़ाया हो रहे हैं। आज किसी को अपना हक़ नहीं मिल रहा है, जब कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा है कि हर एक को उसके फ़राइज़ से ख़बरदार फ़रमाते हैं कि तुम्हारा यह फ़रीज़ा है, इसलिए तुम अपने इस फ़रीज़े को अदा करो। सिर्फ़ यही तरीक़ा है जो समाज को सुधार की तरफ़ ला सकता है।

ख़ुलासा

बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला और बुर्दबार कोई नहीं है।

अल्लाह तआ़ला लोगों की ना फ़रमानियां और उनके कुफ़्र व शिर्क को देख रहे हैं, लेकिन फिर भी सब्र करते हैं और उनको आ़फ़ियत और रिज़्क़ देते हैं। इसलिए तुम भी अल्लाह तआ़ला के इस अख़्लाक़ को अपने अन्दर पैदा करो और इस पर अ़मल करने की कोशिश करो। अल्लाह तआ़ला हम सब को इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد للّٰه رب العالمين

ख़ानदानी झगड़ों
के असबाब और उनका हल
4
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(चौथा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (चौथा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(चौथा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

झगड़ों का एक और सबब

गुज़िश्ता चन्द हफ़्तों से ख़ानदानी झगड़ों के मुख़्तलिफ़ असबाब का बयान चल रहा है। हमारे ख़ानदानों में जो इख़्तिलाफ़ और झगड़े फैले हुए हैं उनकी एक बहुत बड़ी वजह शरीअ़त के एक और हुक्म का लिहाज़ न रखना है। शरीअ़त का वह हुक्म यह है कि:

تعاشروا كالا خوان، تعاملوا كالاجانب۔

यानी तुम आपस में तो भाईयों की तरह रहो और एक दूसरे के साथ भाईयों जैसा बर्ताव करो। भाईचारे और

मुहब्बत का बर्ताव करो, लेकिन जब लेन–देन के मामले पेश आएं, और ख़रीद व बेच और कारोबारी मामले आपस में पेश आएं तो उस वक़्त अजनबियों की तरह मामला करो, और मामला बिल्कुल साफ़ होना चाहिए, उसमें कोई ग़ैर वाज़ेह और पेचीदगी न हो, बल्कि जो बात हो वह साफ़ हो। यह नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बड़ी ज़बरदस्त तालीम है।

मिल्कियत अलग होनी चाहिए

और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात इर्शाद फ़रमाई कि मुसलमानों की एक एक बात वाज़ेह और साफ़ होनी चाहिए। मिल्कियतें अलग अलग होनी चाहिएं, और कौन सी चीज़ किसकी मिल्कियत है, यह वाज़ेह होना चाहिए। शरीअ़त के इस हुक्म का लिहाज़ न रखने की वजह से आज हमारा समाज फ़सादों और झगड़ों से भरा हुआ है।

बाप बेटे का मुश्तरक कारोबार

जैसे एक कारोबार बाप ने शुरू किया, अब बेटों ने भी उस कारोबार में काम शुरू कर दिया। अब यह मुताय्यन नहीं है कि बेटा जो बाप के कारोबार में काम कर रहा है, वह पार्टनर और साझी की हैसियत से काम कर रहा है, या वैसे ही बाप की मदद कर रहा है। या बेटा मुलाज़िम की हैसियत से बाप के साथ काम कर रहा है और उसकी तन्ख़्वाह मुक़र्रर है। इनमें से कोई बात तय नहीं हुई और

मामला अन्धेरे में है। अब दिन रात बाप बेटे कारोबार में लगे हुए हैं, बाप को जितने पैसों की ज़रूरत होती है, वह कारोबार में से उतने पैसे निकाल लेता है, और जब बेटे को ज़रूरत होती है तो वह निकाल लेता है। अब इसी तरह काम करते हुए सालों साल गुज़र गए और धीरे धीरे दूसरे बेटे भी उस कारोबार में आकर शामिल होते रहे। अब कोई बेटा पहले आया, कोई बाद में आया, किसी बेटे ने ज़्यादा काम किया और किसी बेटे ने कम काम किया।

अब हिसाब किताब आपस में कुछ नहीं रखा, बस जिसको जितनी रक़म की ज़रूरत होती वह उतनी रक़म कारोबार में से निकाल लेता। और यह भी मुताय्यन नहीं किया कि उस कारोबार का मालिक कौन है और किसकी कितनी मिल्कियत है? और न यह मालूम कि कारोबार में किसका कितना हिस्सा है? न यह मालूम कि किसकी तन्ख़्वाह कितनी है? अब अगर दूसरा उनसे कहे कि आपस में हिसाब व किताब रखो, तो जवाब यह दिया जाता है कि भाईयों के दरमियान क्या हिसाब व किताब, बाप बेटे में क्या हिसाब व किताब, यह तो दूई की और ऐब की बात है कि बाप बेटे या भाई भाई आपस में हिसाब व किताब करें। एक तरफ़ ऐसी मुहब्बत का इज़हार है।

बाद में झगड़े खड़े हो गए

लेकिन जब दस बारह साल गुज़र गए, शादियां हो गईं, बच्चे हो गए। या बाप जिन्होंने कारोबार शुरू किया था, दुनिया से चल बसे, तो अब भाईयों के दरमियान लड़ाई

झगड़े खड़े हो गए और अब सारी मुहब्बत ख़त्म हो गई और एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाने शुरू कर दिए कि उसने ज़्यादा ले लिया, मैंने कम लिया, फ़लां भाई ज़्यादा खा गया, मैंने कम खाया। अब ये झगड़े ऐसे शुरू हुए कि ख़त्म होने का नाम नहीं लेते। और ऐसे पेचीदा हो गए कि असल हक़ीक़त का पता ही नहीं चलता। आख़िर में जब मामला तनाव पर आ गया और एक दूसरे से बात चीत करने और शक्ल व सूरत देखने के भी रवादार नहीं रहे, और एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो गए, तो आख़िर में मुफ़्ती साहिब के पास आ गए कि अब आप मसला बताएं कि क्या करें? अब मुफ़्ती साहिब मुसीबत में फंस गए। भाई! जब कारोबार शुरू किया था, उस वक़्त तो एक दिन भी बैठकर यह नहीं सोचा कि तुम किस हैसियत में कारोबार कर रहे हो? अब जब मामला उलझ गया तो मुफ़्ती बेचारा क्या बताए कि क्या करो।

मामलात साफ़ हों

ये सारे झगड़े इसलिए खड़े हुए कि शरीअ़त के इस हुक्म पर अ़मल नहीं किया कि मामलात साफ़ होने चाहिएं। चाहे कारोबार बाप बेटे के दरमियान हो या भाई भाई के दरमियान हो, या शौहर और बीवी के दरमियान हो, लेकिन हर एक की मिल्कियत दूसरे से मुम्ताज़ और अलग होनी चाहिए। किसका कितना हक़ है? वह मालूम होना चाहिए। याद रखिए! बग़ैर हिसाब व किताब के जो ज़िन्दगी गुज़र रही है, वह गुनाह की ज़िन्दगी गुज़र रही है। इस लिए कि

यह मालूम ही नहीं कि जो खा रहे हो वह अपना हक़ खा रहे हो या दूसरे का हक़ खा रहे हो।

मीरास फ़ौरन तक़सीम कर दो

शरीअ़त का हुक्म यह है कि जैसे ही किसी का इन्तिक़ाल हो जाए, फ़ौरन उसकी मीरास तक़सीम करो, और शरीअ़त ने जिसका जितना हक़ रखा है वह अदा करो। मुझे याद है कि जब मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का इन्तिक़ाल हुआ तो मेरे शैख़ हज़रत डॉ. अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ताज़ियत के लिए तशरीफ़ लाए। अभी तदफ़ीन नहीं हुई थी, जनाज़ा रखा हुआ था। उस वक़्त हज़रते वाला की तबीयत ख़राब थी, कमज़ोरी थी, और साथ में हज़रत वालिद साहिब की वफ़ात के सदमे का भी तबीयत पर बड़ा असर था। हज़रत वालिद साहिब का ख़मीरा रखा हुआ था, हम वह ख़मीरा हज़रत डॉक्टर साहिब के पास ले गए कि हज़रत थोड़ा सा खा लें ताकि कमज़ोरी दूर हो जाए।

हज़रत डॉक्टर साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने ख़मीरा हाथ में लेने से पहले फ़रमाया कि भाई! अब इस ख़मीरे का खाना मेरे लिए जायज़ नहीं, क्योंकि यह ख़मीरा अब वारिसों की मिल्कियत हो गया, और जब तक सारे वारिस इजाज़त न दें उस वक़्त तक मेरे लिए इसका खाना जायज़ नहीं है। हमने अ़र्ज़ किया कि हज़रत! सारे वारिस बालिग़ हैं और सब यहां मौजूद हैं, और सब ख़ुशी से इजाज़त दे रहे हैं, इसलिए आप इसमें से खा लें, तब जाकर आपने वह ख़मीरा

खाया। बहर हाल! अल्लाह तआ़ला ने मीरास तक़सीम करने की ताकीद फ़रमाई कि किसी के इन्तिक़ाल पर फ़ौरन उसकी मीरास वारिसों के दरमियान तक़सीम कर दो ताकि बाद में कोई झगड़ा पैदा न हो।

मीरास जल्द तक़सीम न करने का नतीजा

लेकिन आज हमारे समाज में जहालत और नादानी का नतीजा यह है कि अगर किसी के मरने पर उसके वारिसों से यह कहा जाए कि भाई मीरास तक़सीम करो, तो जवाब में यह कहा जाता है कि तौबा तौबा, अभी तो मरने वाले का कफ़न भी मैला नहीं हुआ और तुमने मीरास की तक़सीम की बात शुरू कर दी। चुनांचे मीरास की तक़सीम को दुनियावी काम क़रार देकर उसको छोड़ देते हैं। अब एक तरफ़ तो इतना तक़वा है कि यह कह दिया कि अभी तो मरने वाले का कफ़न भी मैला नहीं हुआ, इसलिए माल व दौलत की बात ही न करो। और दूसरी तरफ़ यह हाल है कि जब मीरास तक़सीम नहीं हुई और मुश्तरका तौर पर इस्तेमाल करते रहे तो साल के बाद वही लेग जो माल व दौलत की तक़सीम से बहुत नागवारी का इज़हार कर रहे थे, वही लोग उसी माल व दौलत के लिए एक दूसरे का ख़ून पीने के लिए तैयार हो जाते हैं, और एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाने लगते हैं कि फ़लां ज़्यादा खा गया, फ़लां ने कम खाया।

घर के सामान में मिल्कियतों का फ़र्क़

इसलिए शरीअ़त ने मीरास की तक़सीम का फ़ौरी हुक्म

इसलिए दिया ताकि मिल्कियतें अलग हो जाएं, और हर शख़्स की मिल्कियत वाज़ेह हो कि कौन सी चीज़ किसकी मिल्कियत है। आज हमारे समाज का यह हाल है कि मियां बीवी को मालूम ही नहीं होता कि घर का कौन सा सामान मियां का है और कौन सा बीवी का है। ज़ेवर मियां का है या बीवी का है। जिस घर में रहते हैं उसका मालिक कौन है। इसका नतीजा यह है कि बाद में झगड़े खड़े हो जाते हैं।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि की एहतियात

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि की बात याद आ गई, आख़िर ज़माने में वफ़ात से कुछ अ़र्से पहले बीमार थे, और बिस्तर पर थे। और अपने कमरे ही के अन्दर सीमित होकर रह गए थे। उस कमरे में एक चारपाई होती थी, उसी चारपाई पर सारे काम अन्जाम देते थे। वालिद साहिब के कमरे के बराबर में मेरा एक छोटा सा कमरा होता था। मैं उसमें बैठा रहता था। खाने के वक़्त जब वालिद साहिब के लिए ट्रे में खाना लाया जाता तो आप खाना तनावुल फ़रमाते और खाने के बाद फ़रमाते कि ये बरतन जल्दी से वापस अन्दर ले जाओ, या मदरसे से कोई किताब या कोई चीज़ मंगवाई तो फ़ारिग़ होते ही फ़रमाते कि इसको जल्दी से वापस कर दो, यहां मत रखो। कभी कभी हमें वह बरतन या किताब वग़ैरह वापस ले जाने में

देर हो जाती तो नाराज़गी का इज़हार फ़रमाते कि देर क्यों की, जल्दी ले जाओ।

हमारे दिल में कभी कभी यह ख़्याल आता कि वालिद साहिब बरतन और किताब वापस करने में बहुत जल्दी करते हैं। अगर पांच सात मिनट देर हो जायेगी तो कौन सी क़ियामत आ जायेगी। उस दिन यह राज़ खुला जब आपने एक दिन हम से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि मैंने अपने वसीयत नामे में यह बात लिखी हुई है कि यह मेरा कमरा जिसमें मेरी चारपाई है, इस कमरे के अन्दर जो चीज़ें हैं, सिर्फ़ ये चीज़ें मेरी मिल्कियत हैं, और घर की बाक़ी सब चीज़ें मैं अपनी बीवी की मिल्कियत कर चुका हूं। अब अगर मेरा इन्तिक़ाल इस हालत में हो जाए कि मेरे कमरे में बाहर की कोई चीज़ पड़ी हुई हो तो इस वसीयत नामे के मुताबिक़ लोग यह समझेंगे कि यह मेरी मिल्कियत है, और फिर उस चीज़ के साथ मेरी मिल्कियत जैसा मामला करेंगे। इसलिए मैं यह चाहता हूं कि मेरे इस कमरे में कोई बाहर की चीज़ देर तक पड़ी न रहे, जो चीज़ भी आए वह जल्दी वापस चली जाए।

बहर हाल! मिल्कियत वाज़ेह करने का इस दर्जा एहतिमाम था कि बेटों की मिल्कियत से, बीवी की मिल्कियत से, मिलने जुलने वालों की मिल्कियत से भी अपनी मिल्कियत अलग और मुम्ताज़ थी। अल्हम्दु लिल्लाह, इसका नतीजा यह था कि कभी कोई मसला पैदा नहीं हुआ।

भाईयों के दरमियान भी हिसाब साफ़ हो

इसलिए शरीअ़त ने हमें यह हुक्म दिया कि अपनी मिल्कियत वाज़ेह होनी चाहिए। जब यह मसला हम अपने मिलने जुलने वालों को बताते हैं कि भाई! अपना हिसाब किताब साफ़ कर लो और बात वाज़ेह कर लो, तो जवाब में कहते हैं कि यह हिसाब किताब करना दूई और ग़ैर होने की बात है। लेकिन चन्द ही सालों के बाद यह होता है कि वही लोग जो उस वक़्त अपनाईयत का मुज़ाहरा कर रहे थे, एक दूसरे के ख़िलाफ़ तलवार लेकर खड़े हो जाते हैं। इसलिए आपस के इख़्तिलाफ़ात और झगड़ों का एक बहुत बड़ा सबब मिल्कियतों को साफ़ न रखना है।

मकान की तामीर और हिसाब का साफ़ रखना

या जैसे एक मकान तामीर हो रहा है, उस एक मकान में कुछ पैसे बाप ने लगाए, कुछ पैसे एक बेटे ने लगाए, कुछ पैसे दूसरे बेटे ने लगाए, कुछ पैसे कहीं से क़र्ज़ ले लिए, और इस तरह वह मकान तामीर हो गया। उस वक़्त आपस में कुछ तय नहीं किया कि बेटे इस तामीर में जो पैसे लगा रहे हैं, वे क़र्ज़ के तौर पर लगा रहे हैं? या बाप की मदद कर रहे हैं? या वे बेटे उस मकान में अपना हिस्सा लगाकर पार्टनर बनना चाहते हैं? इसका कुछ पता नहीं, और पैसे सब के लग रहे हैं, लेकिन कोई बात वाज़ेह नहीं है। जब उनमें से एक का इन्तिक़ाल हुआ तो अब झगड़ा खड़ा हो गया कि यह मकान किसका है? एक कहता

है कि मैंने इस मकान में इतने पैसे लगाए हैं, दूसरा कहता है कि मैंने इतने पैसे लगाए हैं, तीसरा कहता है कि ज़मीन तो मैंने ख़रीदी थी, और उस झगड़े के नतीजे में एक फ़साद बर्पा हो गया। उस वक़्त फ़ैसले के लिए मुफ़्ती के पास पहुंचते हैं कि अब आप बताएं कि इसका क्या हल है? ऐसे वक़्त में फ़ैसला करते वक़्त कभी कभी ना इन्साफ़ी हो जाती है।

इसलिए यह मसला अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि शरीअ़त का क़ायदा यह है कि अगर बाप के कारोबार में बेटा काम कर रहा है, और बात वाज़ेह हुई नहीं कि वह बेटा किस हैसियत में काम कर रहा है? आया वह बाप का शरीक है या बाप का मुलाज़िम है। तो अगर बेटा सारी उम्र भी इस तरह काम करता रहे तो यह समझा जायेगा कि उसने अल्लाह के लिए बाप की मदद की है, कारोबार में उसका कुछ हिस्सा नहीं है। इसलिए पहले से बात वाज़ेह करनी चाहिए।

दूसरे को मकान देने का सही तरीक़ा

और अगर वज़ाहत करते हुए तक़सीम का मामला करना है तो तक़सीम करने के लिए भी शरीअ़त ने तरीक़ा बताया है कि तक़सीम करने का सही तरीक़ा क्या है? सिर्फ़ यह कह देने से नहीं होता कि मैंने तो अपना मकान बीवी के नाम कर दिया था। यानी उसके नाम मकान रजिस्ट्री करा दिया था। अब रजिस्ट्री करा देने से वह यह समझे कि वह मकान बीवी के नाम हो गया, हालांकि शरई एतिबार से

कोई मकान किसी के नाम रजिस्ट्री कराने से उसकी तरफ़ मुन्तक़िल नहीं होता, जब तक उस पर उसका क़ब्ज़ा न करा दिया जाए, और उस से यह न कहा जाए कि मैंने यह मकान तुम्हारी मिल्कियत कर दिया, अब तुम इसके मालिक हो। इसके बग़ैर दूसरे की मिल्कियत उस पर नहीं आती।

तमाम मसाइल का हल, शरीअ़त पर अ़मल

इन सारे मसाइल का आज लोगों को इल्म नहीं। इसका नतीजा यह है कि अलल् टप मामला चल रहा है, और उसके नतीजे में लड़ाई झगड़े हो रहे हैं। फ़ितना फ़साद फैल रहा है, और समाज में बिगाड़ पैदा हो रहा है, आपस में मुक़द्दमे बाज़ियां चल रही हैं। अगर आज लोग शरीअ़त पर ठीक ठीक अ़मल कर लें तो आधे से ज़्यादा मुक़द्दमे तो ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएं।

ये ख़राबियां और झगड़े तो उन लोगों के मामलात में हैं जिनकी नियत ख़राब नहीं है। वे लोग जान बूझकर दूसरों का माल दबाना नहीं चाहते, लेकिन जहालत की वजह से उन्होंने ऐसा तरीक़ा इख़्तियार किया कि उसके नतीजे में लड़ाई झगड़ा खड़ा हो गया। लेकिन जो लोग बद–दियानत हैं, जिनकी नियत ही ख़राब है, जो दूसरों का माल हड़प करना चाहते हैं, उनका तो कुछ ठिकाना ही नहीं।

ख़ुलासा

बहर हाल! यह बहुत बड़ा फ़साद है जो हमारे समाज

में फैला हुआ है। इस मसले को ख़ुद को भी अच्छी तरह समझना चाहिए और अपने तमाम मिलने जुलने वालों और अ़ज़ीज़ों व रिश्तेदारों को भी यह मसला बताना चाहिए कि एक बार हिसाब साफ़ कर लें और फिर आपस में मुहब्बत के साथ मामलात करें। लेकिन हिसाब साफ़ होना चाहिए और हर बात वाज़ेह होनी चाहिए, कोई बात ग़ैर वाज़ेह और ना मुकम्मल न रहे। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से हम सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واخردعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین

ख़ानदानी झगड़ों
के असबाब और उनका हल
5
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी
www.siratalmustaqeem.com

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(पांचवां हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (पांचवां हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

\>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(पांचवां हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

गुज़िश्ता (यानी गत) चन्द हफ़्तों से ख़ानदानी झगड़ों के मुख़्तलिफ़ असबाब का बयान चल रहा है। उन असबाब में से एक सबब वह है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में बयान फ़रमाया है। वह हदीस यह है कि:

ना इत्तिफ़ाक़ी का एक और सबब

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لا تمار اخاك ولا تمازحه ولا تعده موعدًا فتخلفه (ترمذی شریف)

इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तीन हुक्म इर्शाद फ़रमाए। पहला हुक्म यह दिया कि अपने किसी भाई से झगड़ा मत करो। दूसरा हुक्म यह दिया कि उसके साथ ना मुनासिब मज़ाक़ मत करो। तीसरा हुक्म यह दिया कि उसके साथ कोई ऐसा वायदा न करो जिसको पूरा न कर सको। यानी वायदा ख़िलाफ़ी न करो।

अपने भाई से झगड़ा न करो

पहला हुक्म यह दिया किः

"لا تمارك أخاك"

अपने भाई से झगड़ा न करो।

यह हमारी उर्दू ज़बान बहुत तंग ज़बान है, जब हम अ़रबी से उर्दू में तर्जुमा करते हैं तो हमारे पास बहुत सीमित अल्फ़ाज़ होते हैं, इसलिए हमें इस तंग दायरे में रह कर ही तर्जुमा करना पड़ता है। इसलिए इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह लफ़्ज़ "ला तुमारि" इर्शाद फ़रमाया। इसके तर्जुमा के लिए हमारे पास इसके अ़लावा कोई लफ़्ज़ नहीं है कि "झगड़ा न करो" लेकिन अ़रबी ज़बान में यह लफ़्ज़ "मिराउन" से निकला है जो इसका मस्दर है, और "मिराउन" का लफ़्ज़ बहुत विस्तरित मायने रखता है। इसके अन्दर "बहस व मुबाहसा करना" झगड़ा करना, जिस्मानी लड़ाई करना, ज़बानी तू तू मैं मैं करना, ये सब इसके मफ़हूम के अन्दर दाख़िल हैं।

इसलिए चाहे जिस्मानी झगड़ा हो, या ज़बानी झगड़ा हो, या बहस व मुबाहसा हो, ये तीनों चीज़ें मुसलमानों के दरमियान आपसी इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद, मुहब्बत और मिलाप पैदा करने में रुकावट बनती हैं। इसलिए जहां तक मुम्किन हो इस बात की कोशिश करो कि झगड़ा करने की नौबत न आए।

ज़रूरत के वक़्त अदालत से रुजू करना

हां! कभी कभी यह होता है कि एक मौक़े पर इन्सान यह महसूस करता है कि उसके हक़ ज़ाया हो गया है, अगर वह अदालत में उसके ख़िलाफ़ मुक़द्दमा नहीं करेगा तो सही तौर पर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकेगा, उसके साथ ना इन्साफ़ी होगी और उसके साथ ज़ुल्म होगा, तो उस ज़ुल्म और ज़्यादती की वजह से मजबूरन उसको अदालत में जाना पड़े तो यह और बात है, वर्ना जहां तक हो सके झगड़ा चुकाओ, झगड़े में पड़ने से परहेज़ करो।

बहस व मुबाहसा न करो

यह हिदायत ख़ास तौर पर उन लोगों को दी जा रही है जो दूसरों की हर बात में टेढ़ निकालते हैं, और दूसरों की हर बात को रद्द करने की कोशिश करते हैं। यह चीज़ उनके मिज़ाज का एक हिस्सा बन जाती है कि दूसरे से ज़रूर बहस करनी है, ज़रा सी बात लेकर बैठ गए, और उस पर बहस व मुबाहसे का एक महल तामीर कर लिया। हमारे समाज में यह जो फ़ुज़ूल बहसों का रिवाज चल पड़ा

है, न उनका दीन से कोई ताल्लुक़, न दुनिया से कोई ताल्लुक़, जिनके बारे में न क़ब्र में सवाल होगा, न हश्र में सवाल होगा, न आख़िरत में सवाल होगा, लेकिन उनके बारे में लम्बी लम्बी बहस हो रही है। यह सब फ़ुज़ूल काम है। इसके नतीजे में लड़ाई झगड़े होते हैं, और फ़िर्क़े बन जाते हैं, और आपस में नफ़रत व दुश्मनी बढ़ती है।

झगड़े से इल्म का नूर चला जाता है

हज़रत इमाम मालिक रह. का मक़ूला है कि:

المِراء يذهب بنور العلم۔

यानी यह बहस व मुबाहसा इल्म के नूर को ग़ारत कर देता है। इल्म का नूर उसके साथ मौजूद नहीं रहता। बस जिस बात को तुम हक़ समझते हो, उसको हक़ तरीक़े से और हक़ नियत से दूसरे को बता दो कि मेरे नज़्दीक यह हक़ है। अब दूसरा शख़्स अगर मानता है तो मान ले, नहीं मानता तो वह जाने उसका अल्लाह जाने। क्योंकि तुम दारोग़ा बनाकर उसके ऊपर नहीं भेजे गए कि ज़बरदस्ती अपनी बात उस से मनवाओ। जितना तुम्हारे बस में हो उसको हिक्मत से, मुहब्बत से, नर्मी से समझा दो, इस से ज़्यादा के तुम मुकल्लफ़ नहीं हो। तुम ख़ुदाई दारोग़ा बनाकर नहीं भेजे गए कि लोगों की इस्लाह तुम्हारे ज़िम्मे फ़र्ज़ हो, कि अगर उनकी इस्लाह नहीं होगी तो तुम से पूछा जायेगा, ऐसा नहीं है।

तुम्हारी ज़िम्मेदारी बात पहुंचा देना है

अरे जब अल्लाह तआ़ला ने यह फ़रमा दिया कि:

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلَاغُ۔ (سورة المائدة:آیت۹۹)

यानी रसूल पर सिर्फ़ बात पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। ज़बरदस्ती करना अंबिया का काम नहीं। तो तुम क्यों ज़बरदस्ती करते हो। इसलिए एक हद तक सवाल व जवाब करो, और जब यह देखो कि बात बहस व मुबाहसे की हदों में दाख़िल हो रही है और सामने वाला शख़्स हक़ को क़बूल करने वाला नहीं है तो उसके बाद ख़ामोश हो जाओ और बहस व मुबाहसे का दरवाज़ा बन्द कर दो।

शिकवा व शिकायत न करें

बाज़ लोगों को हर बात में शिकवा और शिकायत करने की आ़दत होती है। जहां किसी जानने वाले से मुलाक़ात हुई तो फ़ौरन कोई शिकायत जड़ देंगे कि तुमने फ़लां वक़्त यह किया था, तुमने फ़लां वक़्त यह नहीं किया था। और कभी कभी यह काम मुहब्बत के नाम पर किया जाता है, और यह जुम्ला ऐसे लोगों को बहुत याद होता है कि "शिकायत मुहब्बत ही से पैदा होती है" जिस से मुहब्बत होती है उस से शिकवा भी होता है। यह बात तो दुरुस्त है, लेकिन इस शिकायत की भी एक हद होती है। जब कोई अहम बात हुई तो उस पर शिकवा कर लिया, लेकिन ज़रा ज़रा सी बात लेकर बैठ जाना कि फ़लां मौक़े पर तुमने फ़लां को दावत दी और हमें दावत नहीं दी। अरे भाई! दावत देने वाले को शरीअ़त ने यह हक़ दिया है कि जिसको चाहे दावत दे और जिसको चाहे दावत न दे, तुम्हारे पास शिकायत करने का क्या जवाज़ है कि तुम यह

कहो कि हमें दावत में क्यों नहीं बुलाया था? तुम्हें इसलिए नहीं बुलाया था कि तुम्हें बुलाने का दिल नहीं चाहा। उस वक़्त तुम्हें बुलाने के हालात नहीं थे। लेकिन तुम इस शिकायत को लिए बैठे हो। आज हम लोग ज़रा ज़रा सी बात पर दूसरे की शिकायत करने के लिए तैयार हो जाते हैं। उसके नतीजे में सामने वाले उस से शिकायत करते हैं कि फ़लां मौक़े पर तुमने भी हमें नहीं बुलाया था। चुनांचे शिकवा और जवाबे शिकवा का एक सिलसिला चल पड़ता है। इसका नतीजा यह होता है कि दिलों में मुहब्बत पैदा होने के बजाए दुश्मनी पैदा हो रही है, और आपस में नफ़रत पैदा हो रही है।

उसके अ़मल की तावील कर लो

आज मैं तजुर्बे की बात कह रहा हूं कि उसके नतीजे में घराने के घराने उजड़ गए। ज़रा ज़रा सी बात लिए बैठे हैं। अरे भाई! अगर किसी से ग़लती हो गई है तो उसको माफ़ कर दो और उसको अल्लाह के हवाले कर दो।

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने माफ़ करने की कितनी तल्क़ीन फ़रमाई है। इसलिए अगर तुम माफ़ कर दोगे तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायेगा। तुम्हारा क्या नुक़सान हो जायेगा, कौन सा पहाड़ तुम पर टूट पड़ेगा, कौन सी क़ियामत तुम पर आ जायेगी? इसलिए नज़र अन्दाज़ कर जाओ, और उसके अ़मल की कोई तावील तलाश कर लो कि शायद इस वजह से दावत नहीं दी होगी, वग़ैरह।

हज़रत मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह्मान साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का तर्ज़े अ़मल

मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के उस्ताज़ थे हज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह्मान साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, जो दारुल उलूम देवबन्द के मुफ़्ती–ए–आज़म थे। जिनके फ़तावा का मजमूआ "फ़तावा दारुल उलूम देवबन्द" के नाम से दस जिल्दों में छप गया है। जिसमें उलूम के दरिया बहा दिए, अ़जीब व ग़रीब बुज़ुर्ग थे। हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि मैंने उनको हमेशा इस तरह देखा कि कभी किसी आदमी की मुंह पर तरदीद (खंडन) नहीं करते थे कि तुमने यह बात ग़लत कही, बल्कि अगर किसी ने ग़लत बात भी कह दी तो आप सुनकर फ़रमाते कि: अच्छा गोया कि आपका मतलब यह होगा, इस तरह उसकी तावील करके उसका सही मतलब उसके सामने बयान कर देते। उसके ज़रिए उसको तंबीह भी फ़रमा देते कि तुमने जो बात कही है वह सही नहीं है, लेकिन अगर यह बात इस तरह कही जाए तो सही हो जायेगा। सारी उम्र कभी किसी के मुंह पर तरदीद नहीं फ़रमाई।

अपना दिल साफ़ कर लो

इसलिए अगर तुम्हारा कोई मुसलमान भाई है, दोस्त है, या अ़ज़ीज़ व क़रीब है, या रिश्तेदार है। अगर उस से कोई ग़लत मामला ज़ाहिर हुआ है तो तुम भी उसकी कोई

तावील तलाश कर लो कि शायद फ़लां मजबूरी पैदा हो गई होगी। तावील करके अपना दिल साफ़ कर लो। और अगर शिकायत करनी ही है तो नरम लफ़्ज़ों में उस से शिकायत कर लो कि फ़लां वक़्त तुम्हारी बात मुझे नागवार गुज़री, अगर कोई वज़ाहत पेश करे तो उसको क़बूल कर लो, यह न करो कि उस शिकायत को लेकर बैठ जाओ और उसकी बुनियाद पर झगड़ा खड़ा कर दो। इसी लिए जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "ला तुमारि अख़ा–क" अपने भाई से झगड़ा न करो।

यह दुनिया चन्द दिन की है

मियां! यह दुनिया कितने दिन की है, चन्द दिन की दुनिया है, कितने दिन की गारन्टी लेकर आए कि इतने दिन ज़िन्दा रहोगे। और आम तौर पर शिकायतें दुनिया की बातों पर होती हैं कि फ़लां ने मुझे दावत में नहीं बुलाया, फ़लां ने मेरी इज़्ज़त नहीं की, फ़लां ने मेरा एहतिराम नहीं किया। ये सब दुनिया की बातें हैं। यह दुनिया का माल व दौलत, दुनिया का असबाब, दुनिया का रुतबा, दुनिया की शोहरत, दुनिया का ओहदा, इन सब की कोई हक़ीक़त नहीं है, न जाने कब फ़ना हो जाएं, कब ये चीज़ें छिन जाएं। इसके बजाए वहां के बारे में सोचो जहां हमेशा रहना है, जहां हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी गुज़ारनी है। वहां क्या हाल होगा? वहां किस तरह ज़िन्दगी बसर करोगे? वहां पर अल्लाह तआ़ला के सामने क्या जवाब दोगे? इसकी फ़िक्र करो। हदीस शरीफ़ में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम ने फ़रमायाः

اعمل لدنياك بقدرك بقائك فيها، واعمل لآخرتك بقدر بقائك فيها۔

यानी दुनिया के लिए इतना काम करो जितना दुनिया में रहना है, और आख़िरत के लिए उतना काम करो जितना आख़िरत में रहना है।

याद रखिए! यह माल व दौलत, यह शोहरत, यह इज़्ज़त, सब आनी जानी चीज़ें हैं। आज हैं कल नहीं रहेंगी।

कल क्या थे? आज क्या हो गए

वे लोग जिनका दुनिया में डंका बज रहा था, जिनका तूती बोल रहा था, जिनकी हुकूमत थी, जिनके नाम से लोग कांपते थे, आज जेलख़ानों में पड़े सड़ रहे हैं। और जिन लोगों के नामों के साथ इज़्ज़त व सम्मान के अलक़ाब लगाए जाते थे, आज उन पर अपराधों की फ़ेहरिस्तों के अंबार लगे हुए हैं कि उन्होंने चोरी की, उन्होंने डाका डाला, उन्होंने रिश्वत ली, उन्होंने ख़ियानत की। अरे! किस इज़्ज़त पर, किस शोहरत पर, किस पैसे पर लड़ते हो, न जाने किस दिन और किस वक़्त अल्लाह तआ़ला ये चीज़ें तुम से छीन ले। इन छोटी छोटी बातों पर तुमने झगड़े खड़े किए हुए हैं, इन बातों पर तुमने ख़ानदान उजाड़े हुए हैं। इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ला तुमारि अख़ा–क" अपने भाई से झगड़ा मत करो।

कौन सा मज़ाक़ जायज़ है?

इस हदीस में सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने दूसरा हुक्म यह दिया किः

"وَلَا تُمَارِحْهُ"

अपने मुसलमान भाई के साथ दिल्लगी और मज़ाक़ न करो।

इस हदीस में "मज़ाक़" से मुराद वह मज़ाक़ है जो दूसरे की गिरानी का सबब हो। अगर ऐसा मज़ाक़ है जो शरीअ़त की हदों के अन्दर है और तबीयत को ख़ुश करने के लिए किया जा रहा है, सुनने वाले को भी उस से कोई गिरानी नहीं है तो ऐसे मज़ाक़ में कोई हर्ज नहीं। बल्कि अगर वह मज़ाक़ हक़ है और उस मज़ाक़ में दूसरे को ख़ुश करने की नियत है तो उस पर सवाब भी मिलेगा।

मज़ाक़ उड़ाना और दिल्लगी करना जायज़ नहीं

एक होता है मज़ाक़ करना, एक होता है मज़ाक़ उड़ाना। मज़ाक़ करना तो दुरुस्त है, लेकिन किसी का मज़ाक़ उड़ाना कि उसके ज़रिए उसकी हंसी उड़ाई जाए और उसके साथ ऐसा मज़ाक़ और ऐसी दिल्लगी की जाए जो उसके लिए नागवार हो और उसके दिल को तक्लीफ़ पहुंचने का सबब हो, ऐसा मज़ाक़ हराम और नाजायज़ है। बाज़ लोग दूसरे की चिड़ बना लेते हैं, और यह सोचते हैं कि जब उसके सामने यह बात करेंगे तो वह ग़ुस्सा होगा और इसके नतीजे में हम ज़रा मज़ा लेंगे। यह वह मज़ाक़ है जिसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मना फ़रमा रहे हैं। इतना मज़ाक़ करो जिसको दूसरा आदमी बर्दाश्त कर सके। अब आपने दूसरे के साथ इतना मज़ाक़

किया कि उसके नतीजे में उसको परेशान कर दिया, अब वह अपने दिल में तंगी महसूस कर रहा है, तो याद रखिए! अगरचे इस मज़ाक़ के नतीजे में दुनिया में तुम्हें थोड़ा बहुत मज़ा आ रहा है, लेकिन आख़िरत में उसका अज़ाब बड़ा सख़्त है, अल्लाह अपनी पनाह में रखे। क्योंकि उसके ज़रिए तुम ने एक मुसलमान का दिल दुखाया और मुसलमान का दिल दुखाना बड़ा सख़्त गुनाह है।

इन्सान की इज़्ज़त "बैतुल्लाह" से ज़्यादा

इब्ने माजा में एक हदीस है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ फ़रमा रहे थे, तवाफ़ करते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बैतुल्लाह से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि:

ऐ बैतुल्लाह! तू कितना अज़ीम है, तेरी क़द्र व रुतबा कितना अज़ीम है कि इस रूए ज़मीन पर अल्लाह तआ़ला ने तुझे अपना घर क़रार दिया, तेरी हुर्मत कितनी अज़ीम है, लेकिन ऐ बैतुल्लाह! एक चीज़ ऐसी है जिसकी हुर्मत (इज़्ज़त) तेरी हुर्मत से भी ज़्यादा है, वह है मुसलमान की जान, उसका माल, उसकी आबरू।

अगर कोई शख़्स ऐसा संगदिल और बद-बख़्त हो कि वह बैतुल्लाह को ढा दे, अल्लाह की पनाह। तो सारी दुनिया उसको बुरा कहेगी कि उसने अल्लाह के घर की कितनी बेहुरमती की है, मगर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि अगर किसी ने किसी मुसलमान की जान, माल, आबरू पर हमला कर दिया, या

उसका दिल दुखा दिया तो बैतुल्लाह को ढाने से ज़्यादा संगीन गुनाह है। लेकिन तुमने इसको मामूली समझा हुआ है और तुम दूसरे का मज़ाक़ उड़ा रहे हो, और उसकी वजह उसका दिल दुखा रहे हो और तुम मज़े ले रहे हो? अरे यह तुम बैतुल्लाह को ढा रहे हो, उसकी हुर्मत को पामाल कर रहे हो। इसलिए किसी को मज़ाक़ का निशाना बना लेना और उसकी हंसी उड़ाना हराम है।

ऐसा मज़ाक़ दिल में नफ़रत पैदा करता है

और यह मज़ाक़ भी उन चीज़ों में से है जो दिलों के अन्दर गिरहें डालने वाली हैं और दिलों के अन्दर दुश्मनियां और नफ़रतें पैदा कर देती हैं। अगर दूसरा तुम्हारे बारे में यह महसूस करे कि यह मेरा मज़ाक़ उड़ाता है, मेरी तौहीन करता है, तो बताओ क्या कभी उसके दिल में तुम्हारी मुहब्बत पैदा होगी? कभी भी मुहब्बत पैदा नहीं होगी, बल्कि उसके दिल में तुम्हारी तरफ़ से नफ़रत पैदा होगी कि यह आदमी मेरे साथ ऐसा बर्ताव करता है और फिर उस नफ़रत के नतीजे में आपस में झगड़ा और फ़साद फैलेगा। लेकिन अगर यार दोस्त या अज़ीज़ और रिश्तेदार आपस में ऐसा मज़ाक़ कर रहे हैं जिसमें किसी का दिल दुखाने वाली बात नहीं है, जिसमें झूठ नहीं है, तो शरई तौर पर ऐसे मज़ाक़ की इजाज़त है। शरीअ़त ने ऐसे मज़ाक़ पर पाबन्दी नहीं लगाई।

वायदों को पूरा करो

इस हदीस में तीसरा हुक्म यह दिया कि:

ولا تعده موعدًا فتخلفه۔

यानी कोई ऐसा वायदा न करो जिसको तुम पूरा न कर सको।

बल्कि जिस से जो वायदा किया है उस वायदे को पूरा करो, उस वायदे को निभाओ, वायदा करके पूरा न करने को हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने निफ़ाक़ की निशानी क़रार दी है। हदीस शरीफ़ में आता है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

ثلاث من كن فيه فهو منافق: اذا حدث كذب، واذا وعد اخلف،واذاأوتمن خان (نسائی شریف)

मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां

तीन बातें जिस शख़्स में पाई जाएं वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ है। जब बात करे तो झूठ बोले, जब वायदा करे तो वायदे के ख़िलाफ़ करे, और जब उसके पास अमानत रखवाई जाए तो वह उस अमानत में ख़ियानत करे। ये तीन बातें जिस शख़्स में पाई जाएं वह पक्का मुनाफ़िक़ है। इस से मालूम हुआ कि वायदे के ख़िलाफ़ करना निफ़ाक़ की अ़लामत और निशानी है। इसलिए अगर तुम्हें भरोसा न हो कि मैं वायदा पूरा कर सकूंगा, तो वायदा मत करो। लेकिन जब एक बार वायदा कर लो तो जब तक कोई उज़्र पेश न आ जाए, उस वक़्त तक उसकी पाबन्दी लाज़िम है।

बच्चों से किया हुआ वायदा पूरा करो

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यहां तक फ़रमाया कि बच्चों से भी जो वायदा करो उसको पूरा करो। रिवायत में आता है कि एक सहाबी ने एक बच्चे को बुलाते हुए कहा कि मेरे पास आओ, हम तुम्हें चीज़ देंगे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हारा वाक़ई उसको कुछ देने का इरादा था या वैसे ही उसको बहलाने के लिए कह दिया। उन सहाबी ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! मेरे पास खजूर है, वह देने का इरादा था। आपने फ़रमाया कि अगर तुम वैसे ही वायदा कर लेते और कुछ देने का इरादा न होता तो तुम्हें उस बच्चे के साथ वायदा ख़िलाफ़ी करने का गुनाह होता। और बच्चे के साथ वायदा ख़िलाफ़ी करने का मतलब यह है कि तुमने बच्चे को शुरू से यह तालीम दे दी कि वायदा ख़िलाफ़ी करना कोई बुरी बात नहीं है, और तुम ने पहले दिन से ही उसकी तरबियत ख़राब कर दी। इसलिए बच्चों के साथ वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करनी चाहिए, बच्चों के साथ भी जो वायदा किया है उसको पूरा करो।

और बाज़ वायदा ख़िलाफ़ियां तो ऐसी होती हैं कि आदमी यह समझता है कि मैंने फ़लां के साथ वायदा किया हुआ है, मुझे उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करनी चाहिए। लेकिन बाज़ वायदा ख़िलाफ़ियां ऐसी होती हैं जिनकी तरफ़ हम लोगों का ध्यान ही नहीं जाता कि वह भी कोई वायदा ख़िलाफ़ी है।

उसूल और क़ानून की पाबन्दी न करना वायदा ख़िलाफ़ी है

जैसे हर इदारे के अपने कुछ क़ायदे और क़ानून होते हैं। चुनांचे जब हम किसी इदारे में नौकरी करते हैं तो उस इदारे के साथ जुड़ते वक़्त हम अ़मली तौर पर यह वायदा करते हैं कि उस इदारे के क़ायदे और क़ानूनों की पाबन्दी करेंगे। या जैसे आपने पढ़ने के लिए दारुल उलूम में दाख़िला ले लिया, तो दाख़िला लेते वक़्त तालिब इल्म से एक लिखित वायदा भी लिया जाता है कि मैं यह यह काम नहीं करूंगा और यह यह काम करूंगा, और अगर किसी तालिब इल्म से लिखित वायदा न भी लिया जाए तब भी दाख़िल होने के मायने ही यह हैं कि वह यह इक़रार कर रहा है कि दारुल उलूम के जो क़ायदे क़ानून हैं मैं उनकी पाबन्दी करूंगा, अब अगर कोई तालिब इल्म उन क़ायदे क़ानूनों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करेगा तो यह उस वायदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी होगी और यह अ़मल नाजायज़ और गुनाह होगा।

जो क़वानीन शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हों उनकी पाबन्दी लाज़िम है

इसी तरह जो आदमी किसी मुल्क की शहरियत (नागरिकता) इख़्तियार करता है तो वह शख़्स अ़मली तौर पर उस मुल्क के साथ यह मुआ़हदा करता है कि मैं इस मुल्क के क़वानीन की पाबन्दी करूंगा, जब तक कि कोई

क़ानून मुझे शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी काम पर मजबूर न करे। अगर कोई क़ानून ऐसा है जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम करने पर मजबूर करता है तो उसके बारे में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया कि:

لا طاعة لمخلوق فی معصية الخالق۔

यानी ख़ालिक़ की नाफ़रमानी में मख़्लूक़ की इताअ़त नहीं है।

अगर किसी काम से शरीअ़त तुम्हें रोक दे तो फिर उस काम के करने को चाहे कोई बादशाह कहे या कोई राष्ट्रपति या प्रधान मन्त्री कहे, या कोई क़ानून उस काम का हुक्म दे, लेकिन तुम उस हुक्म के मानने के पाबन्द नहीं हो, बल्कि तुम अल्लाह तआ़ला का हुक्म मानने के पाबन्द हो।

क़ानून के ख़िलाफ़ करना वायदा ख़िलाफ़ी है

इसलिए अगर कोई क़ानून आपको गुनाह पर मजबूर नहीं कर रहा है, बल्कि जायज़ चीज़ों से मुताल्लिक़ कोई क़ानून बना हुआ है तो उस सूरत में हर नागरिक चाहे वह मुसलमान हो या ग़ैर मुस्लिम हो, अपनी हुकूमत से यह मुआ़हदा करता है कि मैं क़वानीन की पाबन्दी करूंगा। अगर कोई शख़्स बिला उज़्र क़ानून के ख़िलाफ़ करता है तो यह भी वायदा ख़िलाफ़ी में दाख़िल है।

ट्रैफ़िक के क़ानूनों की पाबन्दी करें

जैसे ट्रैफ़िक के क़ानून हैं कि जब लाल बत्ती जले तो

रुक जाओ और जब हरी बत्ती जले तो चल पड़ो। इस क़ानून की पाबन्दी शरई तौर पर भी ज़रूरी है, इसलिए कि तुमने वायदा किया हुआ है कि मैं इस मुल्क के क़वानीन की पाबन्दी करूंगा। अगर तुम इस क़ानून को रौंदते हुए गुज़र जाते हो तो इस सूरत में वायदा ख़िलाफ़ी के गुनाह के मुज्रिम होते हो और अ़हद तोड़ने के गुनाह के मुज्रिम होते हो। चाहे वह मुस्लिम मुल्क हो या ग़ैर मुस्लिम मुल्क हो।

बेरोज़गारी भत्ता वुसूल करना

इंग्लैण्ड की हुकूमत एक बेरोज़गारी भत्ता जारी करती है। यानी जो लोग बेरोज़गार होते हैं उनको एक भत्ता दिया जाता है। गोया कि रोज़गार मिलने तक हुकूमत उनकी किफ़ालत करती है। यह एक अच्छा तरीक़ा है। लेकिन हमारे बाज़ भाई जो यहां से वहां गए हैं, उन्होंने उस बेरोज़गारी को अपना पेशा बना रखा है। अब ऐसे लोग रात को चोरी छुपे नौकरी कर लेते हैं और साथ में बेरोज़गारी भत्ता भी वुसूल करते हैं। अच्छे ख़ासे नमाज़ी और दीनदार लोग यह धन्धा कर रहे हैं। एक बार एक साहिब ने मुझ से इसके बारे में मसला पूछा तो मैंने बताया कि यह अ़मल तो बिल्कुल ना जायज़ और गुनाह है। अव्वल तो यह झूठ है कि बेरोज़गार नहीं हो लेकिन अपने को बेरोज़गार ज़ाहिर कर रहे हो, दूसरे यह कि तुम हुकूमत के क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर रहे हो, क्योंकि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल हो गए हो तो अब उस मुल्क के जायज़ क़ानून की

पाबन्दी लाज़िम है। उन साहिब ने जवाब में कहा कि यह तो ग़ैर मुस्लिम हुकूमत है, और ग़ैर मुस्लिम हुकूमत का पैसा जिस तरह भी हासिल हो उसको लेकर ख़र्च करना जायज़ है। अल्लाह की पनाह। अरे भाई! जब तुम उस मुल्क में दाख़िल हुए थे उस वक़्त तुमने यह वायदा किया था कि हम इस मुल्क के क़वानीन की पाबन्दी करेंगे, इसलिए अब उस मुल्क के क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना जायज़ नहीं, और जिस तरह मुसलमान के साथ वायदे के ख़िलाफ़ करना जायज़ नहीं, इसी तरह काफ़िरों के साथ भी वायदे के ख़िलाफ़ करना जायज़ नहीं। और उस वायदे के ख़िलाफ़ करने के नतीजे में जो पैसा हासिल होगा वह भी नाजायज़ और हराम होगा।

ख़ुलासा

बहर हाल! झगड़े का एक बहुत बड़ा सबब यह वायदा ख़िलाफ़ी है। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हम सब को सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन अहकाम पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(छठा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (छठा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(छठा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

पिछले कई हफ़्तों से ख़ानदानी झगड़ों के मुख़्तलिफ़ असबाब का बयान चल रहा है। उन असबाब में से एक सबब वह है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में बयान फ़रमाया है, वह हदीस यह है कि:

यह बड़ी ख़ियानत है

हज़रत सुफ़ियान बिन उसैद हज़रमी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

كَبُرَتْ خِيَانَةً اَنْ تُحَدِّثَ أَخَاكَ حَدِيْثًا هُوَلَكَ بِهٖ مُصَدِّقٌ وَاَنْتَ لَهٗ بِهٖ كَاذِبٌ

(ابوداؤد شریف)

यह बड़ी ही ख़ियानत की बात है कि तुम अपने भाई को कोई ऐसी बात सुनाओ जिसको वह समझ रहा हो कि तुम उसको सच्ची बात बता रहे हो लेकिन हक़ीक़त में तुम उसके सामने झूठ बोल रहे हो।

यह वह अ़मल है जिस से दिलों में दरारें पड़ जाती हैं। दिल फट जाते हैं, और दुश्मनियां पैदा हो जाती हैं। झूठ बोलना तो हर हाल में बड़ा ज़बरदस्त गुनाह है, लेकिन इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ास तौर पर उस झूठ को बयान फ़रमा रहे हैं जहां तुम्हारा मुख़ातब तुम पर एतिमाद कर रहा है, और वह यह समझ रहा है कि यह शख़्स जो बात मुझ से कहेगा वह सीधी और सच्ची बात कहेगा, लेकिन तुम उल्टा उसके एतिमाद को ज़ख़्मी करते हुए उसके साथ झूठ बोलो, तो इस अ़मल में झूठ का गुनाह तो है ही, साथ ही इसमें ख़ियानत का भी गुनाह है।

वह अमानतदार है

इसलिए कि जो शख़्स तुम से रुजू कर रहा है, वह तुम्हें अमनतदार और सच्चा समझ कर रुजू कर रहा है। हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

المستشار مؤتمن۔

यानी जिस शख़्स से मश्विरा तलब किया जाए वह अमानतदार होता है।

गोया कि मश्विरा तलब करनें वाला उसके पास अमानत रखवाए हुए है कि तुम सही बात मुझे बताना, और उस पर एतिमाद और भरोसा भी कर रहा है, लेकिन तुमने उसके साथ झूठ बोला और ग़लत बात बताई, इसलिए तुम ख़ियानत के गुनाह के करने वाले भी हुए।

झूठा मैडिकल प्रमाण पत्र

आज हमारे समाज में जितनी तस्दीक़ात और सर्टीफ़िकिट जारी होते हैं, वे सब इस हदीस के तहत आते हैं। जैसे एक शख़्स बीमार है और उसको अपने महकमे से छुट्टी लेने के लिए यह ज़रूरी है कि वह इस बात का मैडिकल सर्टीफ़िकिट पेश करे कि वह वाक़ई बीमार है तो अब जिस डॉक्टर से सरर्टीफ़िकिट तलब किया जायेगा वह अमानतदार है, क्योंकि वह महकमा उस डॉक्टर पर भरोसा और एतिमाद कर रहा है कि यह जो सर्टीफ़िकिट जारी करेगा, वह सच्चा सर्टीफ़िकिट जारी करेगा। वह शख़्स वाक़ई बीमार होगा तब ही सर्टीफ़िकिट जारी क़रेगा वर्ना जारी नहीं करेगा। अब अगर वह डॉक्टर पैसे लेकर या पैसे लिए बग़ैर सिर्फ़ दोस्ती की बिना पर इस ख़्याल से कि इस सर्टीफ़िकिट के ज़रिए इसको छुट्टी मिल जाए, झूठा सर्टीफ़िकिट जारी कर देगा तो यह डॉक्टर झूठ के गुनाह के साथ बड़ी ख़ियानत का भी मुज्रिम होगा। और जो शख़्स ऐसा सर्टीफ़िकिट जारी कर दे, ऐसा शख़्स बेशुमार गुनाहों

का इर्तिकाब कर रहा है। एक यह कि ख़ुद झूठ बोल रहा है और दूसरे यह कि डॉक्टर को झूठ बोलने पर मजबूर कर रहा है। और अगर पैसे देकर यह सर्टीफ़िकिट हासिल कर रहा है तो रिश्वत देने के गुनाह का मुज्रिम हो रहा है, और फिर झूठ बोल कर जो छुट्टी ले रहा है वह छुट्टी भी हराम है और उस छुट्टी की जो तन्ख़्वाह ली है वह तन्ख़्वाह भी हराम है, और उस तन्ख़्वाह से जो खाना खाया वह भी हराम है। इसलिए एक झूठा मैडिकल सर्टीफ़िकिट जारी कराने में इतने बेशुमार गुनाह जमा हैं। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

आज हमारा समाज इन चीज़ों से भरा हुआ है, अच्छे ख़ासे पढ़े लिखे, दीनदार, नमाज़ी, शरीअ़त के पाबन्द लोगों को भी जब ज़रूरत पड़ती है तो वे भी झूठा सर्टीफ़िकिट निकलवाने में कोई शर्म और आ़र महसूस नहीं करते, और इस चीज़ को दीन से ख़ारिज ही कर दिया है।

मदरसों की तस्दीक़ करना

इसी तरह मदरसों की तस्दीक़ है, बहुत से मदारिस के हज़रात मेरे पास भी आते हैं कि आप हमारे मदरसे की तस्दीक़ कर दीजिए कि यह मदरसा क़ायम है और ठीक काम कर रहा है, अगर इसमें चन्दा दिया जायेगा तो वह चन्दा सही जगह में इस्तेमाल होगा। यह तस्दीक़ एक गवाही है। अब अगर किसी शख़्स ने यह कहा कि फ़लां से तस्दीक़ कराकर लाओ, तब हम तुम्हें चन्दा देंगे, गोया कि उसने मुझ पर भरोसा किया, अब मेरा यह फ़र्ज़ है कि मैं

उस वक़्त तक तस्दीक़ जारी न करूं जब तक मुझे हक़ीक़त में इस बात का यक़ीन न हो कि वाक़ई यह मदरसा इस चन्दे का मुस्तहिक़ है। अगर एक शख़्स मेरे पास आए और मैं सिर्फ़ दोस्ती या मरव्वत में आकर तस्दीक़ कर दूं तो इसका मतलब यह होगा कि लोग तो मेरे ऊपर भरोसा कर रहे हैं और मैं उनके साथ झूठ बोल रहा हूं, क्योंकि मैंने उस मदरसे को देखा नहीं, मैं उसके हालात से वाक़िफ़ नहीं, उसके काम करने के तरीक़े से मैं बाख़बर नहीं, लेकिन इसके बावजूद मैंने तस्दीक़ नामा जारी कर दिया, तो मैं इस बदतरीन ख़ियानत का करने वाला हूंगा। अब मदरसे के हज़रात तस्दीक़ के लिए मेरे पास आते हैं, जब मैं उनसे माज़िरत करता हूं तो कहते हैं कि उनसे इतना छोटा सा काम नहीं किया जाता। वे समझते हैं कि इन्कार करना मरव्वत के ख़िलाफ़ है, हालांकि हक़ीक़त में यह शहादत और गवाही है, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह बदतरीन ख़ियानत है कि लोग तुम पर भरोसा करके तुम्हें सच्चा समझ रहे हैं और तुम उनके सामने झूठ बोल रहे हो।

झूठा कैरेक्ट्र सर्टीफ़िकिट

आजकल कैरेक्ट्र सर्टीफ़िकिट बनवाए जाते हैं, और सर्टीफ़िकिट जारी करने वाला उसमें लिखता है कि मैं इस शख़्स को पांच साल से जानता हूं या दस साल से जानता हूं, हालांकि वह उसको सिर्फ़ दो दिन से जानता है, मैं

इसके हालात से वाक़िफ़ हूं, यह बहुत अच्छे अख़्लाक़ और क्रिदार का मालिक है। अब सर्टीफ़िकिट जारी करने वाला यह समझ रहा है कि मैं इस शख़्स के साथ भलाई कर रहा हूं, लेकिन उसको यह मालूम नहीं कि उस भलाई के नतीजे में क़ियामत के दिन गर्दन पकड़ी जायेगी कि तुमने तो यह लिखा था कि मैं इसको पांच साल से या दस साल से जानता हूं, हालांकि तुम इसको नहीं जानते थे। यह बदतरीन ख़ियानत के अन्दर दाख़िल है, क्योंकि लोग तुम पर भरोसा कर रहे हैं, और तुम लोगों के साथ झूठ बोल रहे हो।

आज सर्टीफ़िकिट की कोई क़ीमत नहीं

आज समाज इन बातों से भर गया है, इसका नतीजा यह है कि आज सर्टीफ़िकिट की भी कोई क़ीमत नहीं रही, क्योंकि लोग जानते हैं कि ये सब झूठे और बनावटी सर्टीफ़िकिट हैं। आज हमने सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन इर्शादात को ज़िन्दगी से ख़ारिज ही कर दिया है, और सिर्फ़ नमाज़ रोज़े और तस्बीह का नाम दीन रख दिया है, लेकिन दुनिया की ज़िन्दगी में हम लोगों के साथ किस तरह पेश आ रहे हैं, इस तरफ़ ध्यान ही नहीं है।

यह भी इख़्तिलाफ़ात का सबब है

यह चीज़ भी हमारे आपस के इख़्तिलाफ़ात और झगड़ों के असबाब में से एक सबब है। इसलिए कि जब तुम एक

आदमी पर भरोसा और एतिमाद कर रहे हो कि यह शख़्स तुम्हें सच बात बतायेगा, लेकिन वह शख़्स तुम से झूठ बोले, तो उस झूठ के नतीजे में उसके दिल में तुम्हारे ख़िलाफ़ गिरह पड़ जायेगी कि मैंने तो इस पर भरोसा किया, लेकिन उसने मेरे साथ झूठ बोला, मुझे धोखा दिया और मुझे ग़लत रास्ता दिखाया, इसलिए उसके दिल में तुम्हारे ख़िलाफ़ बैर और दुश्मनी पैदा होगी।

बहर हाल! आपसी इख़्तिलाफ़ात और ना इत्तिफ़ाक़ी का एक बहुत बड़ा सबब "झूठ" है। अगर इस झूठ को ख़त्म नहीं करोगे तो आपस के झगड़े और इख़्तिलाफ़ात कैसे ख़त्म होंगे? इसलिए इस झूठ को ख़त्म करो। वैसे तो हर झूठ हराम है, लेकिन ख़ास तौर पर वह झूठ जहां पर दूसरा शख़्स तुम पर भरोसा कर रहा हो और तुम उसके साथ झूठ बोलो, यह ख़तरनाक झूठ है।

जो गुज़र चुका उसकी तलाफ़ी कैसे करें?

अब एक सवाल ज़ेहनों में यह पैदा होता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आपस के इख़्तिलाफ़ात और ना इत्तिफ़ाक़ी के जो असबाब बयान फ़रमाए हैं, अगर हम आज उनसे परहेज़ करने का इरादा कर लें और मेहनत करके अपने आपको इसका पाबन्द बना लें तो इन्शा अल्लाह आईन्दा की ज़िन्दगी तो दुरुस्त हो जायेगी, लेकिन जो ज़िन्दगी पहले गुज़र चुकी उसमें अब तक हम से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इन तालीमात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी हुई, जैसे किसी की ग़ीबत

कर ली, किसी को बुरा कहा, किसी को दुख पहुंचाया, किसी को तक्लीफ़ पहुंचाई, किसी का दिल दुखाया, और इन ख़िलाफ़ वर्ज़ियों के नतीजे में और बन्दों के हुकूक़ को ज़ाया करने के नतीजे में हमारा आमाल नामा स्याह हो गया है, इसका क्या हल है? अगर हम अपनी पिछली ज़िन्दगी की तरफ़ नज़र दौड़ाएं तो यह नज़र आयेगा कि ज़िन्दगी के गुज़रे हुए सालों में न जाने कितने इन्सानों से राबता हुआ, कितने इन्सानों से ताल्लुक़ात हुए, हमने किसकी कितनी हक़ तल्फ़ी की? इसका हमारे पास न कोई हिसाब है, न पैमाना है और न उनसे माफ़ी मांगने की कोई सूरत है। इसलिए अगर हम आज से अपनी इस्लाह शुरू कर भी दें तो पिछले मामलों का और पिछली ज़िन्दगी का क्या बनेगा? और पिछला हिसाब किताब साफ़ करने का क्या रास्ता है? यह बड़ा अहम सवाल है और हम सब को इसकी फ़िक्र करने की ज़रूरत है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का माफ़ी मांगना

लेकिन नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कुरबान जाइए कि आपने हमारी हर मुश्किल का हल अपनी ज़िन्दगी के पाक नमूने में तज्वीज़ फ़रमा दिया है। जो आदमी अपनी पिछली ज़िन्दगी की इस्लाह करना चाहता हो, और उसको ख़्याल हो कि मैंने बहुत से अल्लाह के बन्दों के हुकूक़ ज़ाया कर दिए हैं, तो इसका रास्ता भी नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताया और ख़ुद इस पर इस तरह अ़मल करके दिखा दिया कि एक

दिन आपने मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में खड़े होकर आ़म सहाबा के मजमे के सामने फ़रमायाः

मेरी ज़ात से कभी किसी इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो, या कभी मुझ से कोई ज़्यादती हुई हो, तो मैं आज अपने आपको उसके सामने पेश करता हूं। अगर वह उस ज़्यादती का बदला लेना चाहता है तो मैं बदला देने को तैयार हूं। और अगर वह मुझ से कोई सिला तलब करना चाहता है तो मैं वह देने के लिए तैयार हूं। और अगर वह माफ़ करना चाहता है तो मेरी दरख़्वास्त है कि वह माफ़ कर दे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बुलन्द मक़ाम

यह ऐलान उस ज़ात ने फ़रमाया जिसके बारे में कुरआने करीम ने फ़रमा दिया किः

لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ (سورة فتح: آيت٢)

ताकि अल्लाह तआ़ला आपकी सब अगली पिछली ख़ताएं माफ़ फ़रमा दे।

और जिनके बारे में यह फ़रमा दियाः

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (سورة النساء: آيت ٦٥)

यानी परवर्दिगार की क़सम! लोग उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी इख़्तिलाफ़ात में आपको फ़ैसला करने वाला न बनाएं, और फिर जो कुछ आप फ़ैसला करें उसके बारे में वे अपने दिल

में कोई तंगी महसूस न करें और उसको मानने के लिए उसके आगे अपना सर न झुका लें।

इसलिए जिस ज़ात के बारे में कुरआने करीम में ये इर्शादात नाज़िल हुए हों, और जिनके बारे में इस बात की वज़ाहत आ गई हो कि आपकी ज़ात से किसी को ज़ुल्म और ज़्यादती पहुंच सकती ही नहीं, इन सब बातों के बावजूद आपने मस्जिदे नबवी में खड़े होकर तमाम सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के सामने वह ऐलान फ़रमाया जो ऊपर दर्ज हुआ।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का बदले के लिए आना

रिवायतों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह ऐलान सुनकर एक सहाबी खड़े हो गए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं बदला लेना चाहता हूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि कैसा बदला? उन्होंने अर्ज़ किया कि एक बार आपने मेरी कमर पर मारा था, मैं उसका बदला लेना चाहता हूं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तो मारना याद नहीं है, लेकिन अगर तुम्हें याद है तो आ जाओ और बदला ले लो। चुनांचे वह सहाबी कमर के पीछे आए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! जिस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे मारा था उस वक़्त मेरी कमर पर कपड़ा नहीं था, बल्कि मेरी

कमर नंगी थी। सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी चादर कमर से हटा दी, तो नुबुव्वत की मुहर नज़र आने लगी। वह सहाबी आगे बढ़े और नुबुव्वत की मुहर को बोसा दिया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैंने नुबुव्वत की मुहर को बोसा देने के लिए यह बहाना इख़्तियार किया था। बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने आपको पेश कर दिया कि जो बदला लेना चाहे तो मैं उसको बदला देने के लिए तैयार हूं।

सब से माफ़ी तलाफ़ी करा लो

इस अ़मल के ज़रिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को सिखा दिया कि जब मैं यह अ़मल कर रहा हूं तो तुम भी अगर अपनी पिछली ज़िन्दगी के दाग़ धोना चाहते हो तो अपने मिलने जुलने वालों, अपने अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों और अपने दोस्त अहबाब से यही पेशकश करो कि न जाने पिछली ज़िन्दगी में मुझ से आपकी क्या हक़ तल्फ़ी हुई हो, आज मैं उसका बदला देने को तैयार हूं। और अगर आप माफ़ कर दें तो आपकी मेहरबानी।

हज़रत थानवी रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि का माफ़ी मांगना

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि ने ख़ास तौर पर एक रिसाला इस मौज़ू पर लिखा और उस रिसाले को शाया किया और फिर अपने तमाम मिलने जुलने वालों में वह रिसाला

तक़सीम किया। उस रिसाले का नमा है "अल उज़्र वन्नुज़्र" उस रिसाले में यही मज़मून लिखा कि चूंकि मेरे बहुत से लोगों से ताल्लुक़ात रहे हैं, न जाने मुझ पर किसका हक़ हो और वह हक़ मुझ से ज़ाया हो गया हो, या मुझ से कोई ज़्यादती हुई हो, आज मैं अपने आपको पेश करता हूं। अगर मुझ से उस हक़ का बदला लेना चाहता है तो बदला ले ले, अगर कोई माली हक़ मेरे ज़िम्मे वाजिब है वह मुझे माली हक़ याद दिला दे, मैं बदला दे दूंगा। या किसी को जानी तक्लीफ़ पहुंचाई है तो मैं उसका बदला देने को तैयार हूं, वर्ना मैं माफ़ी की दरख़्वास्त पेश करता हूं। और साथ में यह हदीस भी लिख दी कि:

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई मुसलमान दूसरे मुसलमान से सच्चे दिल से माफ़ी मांगता है कि मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझ से ग़लती हो गई, तो दूसरे मुसलमान भाई का फ़रीज़ा है कि उसको माफ़ कर दे। अगर वह माफ़ नहीं करेगा तो वह आख़िरत में अल्लाह तबारक व तआला से माफ़ी की उम्मीद न रखे।

रुपये पैसे का मामला अलग है। अगर दूसरे के ज़िम्मे रुपये पैसे वाजिब हैं तो उसको हक़ है कि उसको वुसूल कर ले। लेकिन दूसरे क़िस्म के हुक़ूक़, जैसे किसी की ग़ीबत कर ली थी, या दिल दुखाया दिया था, या कोई और तक्लीफ़ पहुंचाई थी, और तक्लीफ़ पहुंचाने वाला अब माफ़ी मांग रहा है तो दूसरे मुसलमान को चाहिए कि वह माफ़

कर दे।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का माफ़ी मांगना

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने वफ़ात से तीन साल पहले जब पहली बार दिल का दौरा पड़ा, तो अस्पताल ही में मुझे बुलाकर फ़रमाया कि तुम मेरी तरफ़ से ऐसा ही एक मज़मून लिख दो जैसे हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने "अल उज़्र वन्नुज़्र" में अपने से ताल्लुक़ रखने वालों को लिखा था, और उसका नाम यह रखना "कुछ तलाफ़ी–ए–माफ़ात" उसमें लफ़्ज़ "कुछ" से इस तरफ़ इशारा फ़रमाया कि उसके ज़रिए यह दावा नहीं है कि मैं अपने पिछले सारे मामलों की तलाफ़ी कर रहा हूं, बल्कि यह "कुछ" तलाफ़ी कर रहा हूं। यह मज़मून लिखवाने के बाद शाया फ़रमाया, और अपने तमाम ताल्लुक़ रखने वालों को ख़त के ज़रिए भेजा ताकि उनकी तरफ़ से माफ़ी हो जाए।

अपना कहा सुना माफ़ करा लो

हमारे बुज़ुर्गों ने एक जुम्ला सिखाया है जो अक्सर व बेश्तर लोगों की ज़बान पर होता है, यह बड़ा अच्छा जुम्ला है। वह यह कि जब किसी से जुदा होते हैं तो उस से कहते हैं कि:

"भाई! हमारा कहा सुना माफ़ कर देना"।

यह बड़ा काम का जुम्ला है और इसमें बड़ी अ़ज़ीम हिक्मत की बात है। अगरचे लोग इसको बग़ैर सोचे समझे कह लेते हैं, लेकिन हक़ीक़त में इस जुम्ले में इसी तरफ़ इशारा है कि इस वक़्त हम तुम से जुदा हो रहे हैं, अब दोबारा मालूम नहीं कि मुलाक़ात हो या न हो, मौक़ा मिले या न मिले, इसलिए मैंने तुम्हारे बारे में कुछ कहा सुना हो, या तुम्हारी कोई ज़्यादती की हो, तो आज मैं तुम से उसकी माफ़ी मांगता हूं। इसलिए सफ़र में जाते हुए इसकी आ़दत डालनी चाहिए कि जिनसे मेल मुलाक़ात रहती हो उनसे यह जुम्ला कह देना चाहिए। जब वह सामने वाला जवाब में यह कह दे कि मैंने माफ़ कर दिया तो इन्शा अल्लाह माफ़ी हो जायेगी।

जिनका पता नहीं उनसे माफ़ी का तरीक़ा

माफ़ कराने का यह तरीक़ा तो हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन लोगों के बारे में बताया जिन तक रसाई और पहुंच हो सकती है। लेकिन बहुत से ताल्लुक़ात रखने वाले ऐसे होते हैं कि उन तक रसाई मुम्किन नहीं। जैसे हम लोग अक्सर बसों में, रेलों में, हवाई जहाज़ों में सफ़र करते हैं, और उन सफ़रों में न जाने कितने लोगों को हम से तक्लीफ़ पहुंच गई होगी। अब हमें न उनका नाम मालूम है और न ही उनका पता मालूम है। अब उन तक पहुंच कर उनसे माफ़ी मांगने का कोई रास्ता नहीं है, ऐसे लोगों से माफ़ी मांगने का भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक तरीक़ा बता दिया जो बहुत ही

आसान है।

उनके लिए यह दुआ करें

वह यह कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों के हक़ में यह दुआ़ फ़रमा दी कि:

ايما مؤمن او مؤمنة اٰذيتهٗ او شتمتهٗ او جلدتهٗ اولعنتهٗ فا جعلها له صلاة وزكوٰة وقربة تقربه بها اليك.

यानी ऐ अल्लाह! मेरी ज़ात से किसी मोमिन मर्द या औरत को कभी कोई तक्लीफ़ पहुंची हो, या मैंने कभी किसी को बुरा भला कहा हो, या मैंने कभी किसी को मारा हो, या कभी किसी को लानत की हो, या कभी उसके हक़ में बद–दुआ़ की हो, तो ऐ अल्लाह! मेरे उन सारे आमाल को उस शख़्स के हक़ में रहमत बना दीजिए और उसको उसके पाक होने का ज़रिया बना दीजिए और मेरे उस अ़मल के नतीजे में उसको अपना कुर्ब (निकटता) अ़ता फ़रमा दीजिए।

इसलिए बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जिन तक आप नहीं पहुंच सकते और जिनसे माफ़ी मांगने का कोई रास्ता नहीं है, उनके हक़ में यह दुआ़ कर दें। क्योंकि जब आपकी पहुंचाई हुई तक्लीफ़ उनके हक़ में रहमत बन जायेगी तो इन्शा अल्लाह वे ख़ुद ही माफ़ कर देंगे। और उनके हक़ में ईसाले सवाब करें। यानी उनको सवाब पहुंचाएं।

ज़िन्दा को सवाब पहुंचाना

बाज़ लोग यह समझते हैं कि ईसाले सवाब (सवाब

पहुंचाना) सिर्फ़ मुर्दों को हो सकता है जो दुनिया से जा चुके, ज़िन्दों को नहीं हो सकता। यह ख़्याल ग़लत है, ईसाले सवाब तो ज़िन्दा आदमी को भी किया जा सकता है। इसलिए इबादत करके, तिलावत करके उसका सवाब ऐसे लोगों को पहुंचा दो जिनको आपकी ज़ात से कभी तक्लीफ़ पहुंची हो, उसके नतीजे में तुमने उसके साथ जो ज़्यादती की है इन्शा अल्लाह उसकी तलाफ़ी हो जायेगी।

उमूमी दुआ कर लें

इसके अ़लावा एक उमूमी दुआ़ यह कर लो कि या अल्लाह! जिस जिस शख़्स को मुझ से तक्लीफ़ पहुंची हो, और जिस जिस शख़्स की मुझ से हक़ तल्फ़ी हुई हो, या अल्लाह! अपने फ़ज़्ल से उस पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाइए और मेरे इस अ़मल को उसके लिए रहमत का ज़रिया बना दीजिए और उसको मुझ से राज़ी कर दीजिए, और उसके दिल को मेरी तरफ़ से साफ़ कर दीजिए ताकि वह मुझे माफ़ कर दे।

एक ग़लत ख़्याल की तरदीद

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने एक वाज़ (तक़रीर) में यह दुआ़ वाली हदीस बयान फ़रमाने के बाद इर्शाद फ़रमाया कि इस से किसी को यह ख़्याल न हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बहुत से गुनाह करने वालों को लानत की है, जैसा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया:

لَعَنَ اللّٰهُ الرَّاشِيَ وَالْمُرْتَشِيَ۔

अल्लाह तआ़ला रिश्वत लेने वाले और रिश्वत देने वाले पर लानत करे।

अब यह हदीस सुनकर रिश्वत देने वाला या लेने वाला इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला न हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह लानत मेरे हक़ में दुआ़ बन जायेगी, इसलिए कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमा दी है कि ऐ अल्लाह! मैंने जिस जिसको लानत की है वह लानत उसको दुआ़ बनकर लगे।

वजह इसकी यह है कि दुआ़ की हदीस के शुरू में ये अल्फ़ाज़ भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाए कि:

اِنما أنا بشر أغضب كما يغضب البشر۔

ऐ अल्लाह! मैं तो एक इन्सान हूं और जिस तरह और इन्सानों को ग़ुस्सा आ जाता है इसी तरह मुझे भी ग़ुस्सा आ जाता है। उस ग़ुस्से के नतीजे में अगर कभी मैंने किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंचाई हो या लानत की हो या बुरा भला कहा हो तो उसको उसके हक़ में दुआ़ बनाकर लगाइए।

इसलिए यह हदीस उस लानत के बारे में है जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ग़ुस्से की हालत में बशरी तक़ाज़े से किसी पर लानत की हो, ऐसी लानत उसके हक़ में दुआ़ बनकर लगे। लेकिन अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने किसी शख़्स पर गुनाह की वजह से लानत की हो, या दीन और शरीअ़त के तक़ाज़े से लानत की हो, तो यह दुआ़ वाली हदीस उस लानत के बारे में नहीं है।

ख़ुलासा

बहर हाल! जिन लोगों के हुक़ूक़ ज़ाया किए हैं, और उनकी तलाफ़ी मुम्किन नहीं है तो अब उनके हक़ में दुआ़ करो। यह काम कोई मुश्किल नहीं है, बस एक बार बैठकर अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ मारूज़ कर लो कि या अल्लाह! पता नहीं कितने लोगों के हुक़ूक़ मुझ से बर्बाद हुए होंगे। ऐ अल्लाह! उन हक़ तल्फ़ियों को उनके हक़ में दुआ़ बना दीजिए और उनके लिए रहमत का ज़रिया बना दीजिए और उनके दिलों को मेरी तरफ़ से साफ़ फ़रमा दीजिए ताकि वे मुझे माफ़ कर दें।

इसलिए पिछले मामलों को साफ़ करने के लिए हर शख़्स ये दो काम ज़रूर कर ले जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत से साबित हैं, और बुज़ुर्गों का तरीक़ा रहे हैं। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इन पर मुझे भी और आपको भी अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين